वार्षिक रिपोर्ट

1970-71

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

विषय-सूची

परिचय ... 1

वार्षिक रिपोर्ट (1970-71) ... 7

परिशिष्ट

1. परिषद् तथा उसकी समितियों के सदस्य गण ... 29
2. चौथी पंचवर्षीय योजना के लिए निर्धारित रकम ... 41
3. वर्ष 1970-71 की प्राप्तियों और भुगतान का विवरण ... 51
4. पाठ्यक्रम विकास ... 52
5. स्कूल पाठ्य पुस्तकों के मूल्यांकन का प्रचंड कार्यक्रम ... 63
6. राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना ... 70
7. राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना ... 74
8. राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष 1970-71 में परिषद् द्वारा आरम्भ किए गए कार्यक्रम ... 78
9. व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को अनुदान ... 80
10. अनुसंधान अध्ययन, अन्वेषण और सर्वेक्षण ... 81
11. अनुमोदित अनुसंधान परियोजनाओं के लिए सहायता दान (जी० ए० आर० पी०) ... 100
12. प्रशिक्षण कार्यक्रम ... 103
13. विस्तार तथा क्षेत्रीय सेवाएँ ... 115
14. राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के साथ सहयोग ... 130
15. शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय के साथ सहयोग ... 136
16. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग ... 140
17. प्रकाशन ... 147

परिचय

परिचय

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की, जो एन० सी० ई० आर० टी० के नाम से प्रसिद्ध है, एक स्वायत्त संगठन के रूप में स्थापना, 1860 के सोसायटीज़ रजिस्ट्रेशन अधिनियम के अधीन 1 सितम्बर 1961 को की गई थी। परिषद् की स्थापना हो जाने पर, इसने केन्द्रीय शिक्षा संस्थान (1947), केन्द्रीय पाठ्य पुस्तक अनुसंधान ब्यूरो (1954), केन्द्रीय शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्ग-दर्शन ब्यूरो (1954), अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (1955), माध्यमिक शिक्षा विस्तार कार्यक्रम निदेशालय (1955, 1959), राष्ट्रीय प्राथमिक शिक्षा संस्थान (1956), राष्ट्रीय समाज शिक्षा केन्द्र (1956) तथा राष्ट्रीय श्रव्य दृश्य संस्थान (1959) अपने हाथ में ले लिए। भारत सरकार द्वारा इन सभी संगठनों का गठन स्कूली शिक्षा की प्रगति के लिए सुविधाएँ प्रदान करने की दृष्टि से किया गया था। उल्लिखित सभी संगठनों को हाथ में लेने के बाद, परिषद् ने अपने कार्य को मान्यता दी ताकि यह प्रभावी तौर पर कार्य कर सके।

2. परिषद् का वित्त-पोषण पूर्णतया भारत सरकार द्वारा किया जाता है। यह शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय के शैक्षणिक पक्ष के रूप में कार्य कर रही है और यह स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में मंत्रालय की नीतियों तथा मुख्य कार्यक्रमों के तैयार करने तथा उनके कार्यान्वयन में उनकी सहायता करती है। मोटे तौर पर, परिषद् के कार्य ये हैं :

(क) स्कूली शिक्षा से संबंधित अध्ययन, जाँच तथा सर्वेक्षण करना;

(ख) सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन प्रशिक्षण का आयोजन करना, खासतौर से उच्च स्तर पर;

(ग) विस्तार सेवाओं का आयोजन करना;

(घ) सुधरी हुई शैक्षिक तकनीकों तथा क्रियाओं का स्कूलों में प्रसार करना तथा;

(ङ) स्कूली शिक्षा से संबद्ध सभी मामलों पर विचारों तथा सूचना के निकास-गृह के रूप में कार्य करना।

3. इस प्रकार के कार्यों को प्रभावी ढंग से कर सकने के लिए, परिषद् राज्यों के शिक्षा विभागों और विश्वविद्यालयों तथा स्कूली शिक्षा के उद्देश्यों को

आगे बढ़ाने के लिए देश में स्थापित आमतौर पर सभी संस्थाओं के साथ निकट सहयोग से कार्य करती है। इसके अलावा, परिषद् विश्व भर में इसी प्रकार के अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संगठनों के साथ निकट संपर्क रखती है। परिषद् द्वारा की गई जाँच के निष्कर्ष जनता को उपलब्ध कराने के लिए यह पुस्तकों, पत्रिकाओं तथा साहित्य का प्रकाशन करती है।

4. अपने उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त परिषद् ने अनुसंधान कार्यकलापों को चालू रखने और उनके विकास के लिए अनेक संस्थाओं का गठन किया है। परिषद् अपने क्षेत्र-सलाहकारों के कार्यालयों की मार्फत सभी राज्य सरकारों के साथ निकट संपर्क रखती है।

परिषद् का प्रधान कार्यालय नई दिल्ली में है।

5. नई दिल्ली में, परिषद् का राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान है। इस संस्थान का मुख्य संबंध अनुसंधान, अल्पावधि प्रशिक्षण आदि से है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अनेक विभाग हैं, जैसे पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक शिक्षा विभाग, पाठ्यपुस्तक विभाग, अध्यापक शिक्षा विभाग, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग, शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा आधार विभाग, विज्ञान शिक्षा विभाग, अध्यापन साधन विभाग, आधार सामग्री प्रक्रिया तथा शैक्षिक सर्वेक्षण एकक और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय, प्रलेखीय तथा सूचना सेवा एकक। प्रत्येक विभाग का संबंध उसी को सौंपी गई परियोजनाओं से है। इसके अलावा परिषद् के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक कुछ आधारभूत कार्य भी किया जाता है परन्तु कुल मिलाकर, जो अधिकांश जाँच-पड़तालें की जाती हैं, वे व्यावहारिक किस्म की होती हैं और तात्कालिक उपयोगिता की दृष्टि से उन्हें महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

6. केन्द्रीय शिक्षा संस्थान का प्रतिष्ठा केन्द्र के रूप में संचालन परिषद् द्वारा किया जाता है। इसमें एक वर्षीय बी० एड० तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों का प्रबंध है और यह दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध है।

7. परिषद् अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर तथा मैसूर में चार क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों का संचालन करती है। ये कैम्पस कालेज हैं जिनमें व्यापक प्रयोग-शाला, पुस्तकालय तथा निवास सुविधाएँ हैं। वे चार-वर्षीय विषय वस्तु एवं शिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन करते हैं जिन्हें पूरा करने पर विज्ञान में बी० एस-सी०, बी० एड० तथा भाषाओं में बी० ए०, बी०एड० की उपाधियाँ मिलती हैं। ये पाठ्यक्रम विश्व के कुछ अन्य देशों में प्रवृत्त विचारों को आत्मसात करते हुए तैयार किए गए हैं। अनेक देशों में आमतौर पर यह विश्वास किया जाता है कि शिक्षा को इंजीनियरी, औषधि विज्ञान जैसे व्यावसायिक विषय के रूप में माना जाना चाहिये और छात्रों को इन विषयों में और शिक्षण में साथ-साथ प्रशिक्षित किया जाना चाहिये। क्षेत्रीय कालेजों में चलाए जा रहे चार-वर्षीय पाठ्यक्रम इसी अव-

धारण को कार्यान्वित करने के लिए हैं। इसके अलावा, क्षेत्रीय कालेज एक-वर्षीय बी० एड० पाठ्यक्रम भी चलाते हैं। ऐसे एक-वर्षीय पाठ्यक्रमों में विशेष महत्त्व के वे पाठ्यक्रम है जो कृषि तथा वाणिज्य से संबंधित हैं। प्रशिक्षण पा रहे छात्रों को हर मुमकिन सीमा तक कार्य अनुभव प्राप्त करने के अवसर प्रदान किये जाते हैं ताकि स्कूलों में अध्यापक बनने पर वे उसका प्रसार स्कूलों में कर सकें। ये कालेज अपने स्नातकोत्तर पक्षों का भी विकास कर रहे हैं और अपने संबंधित क्षेत्र के अध्यापकों के लिए सेवाकालीन तथा सेवा-पूर्व दोनों कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। क्षेत्रीय कालेजों का इस ढंग से विकास किया जा रहा है कि वे देश के चारों क्षेत्रों के लिये आदर्श अथवा विशिष्ट केन्द्रों के रूप में कार्य करें। वे संबंधित क्षेत्र में स्थित विश्वविद्यालयों और संस्थाओं के साथ तथा राज्य के शिक्षा विभागों के साथ भी निकट सहयोग से कार्य करते हैं।

8. परिषद् में एक प्रकाशन एकक भी है जो परिषद् के संगठनात्मक एककों द्वारा तैयार किए गए शैक्षिक साहित्य के मुद्रण की देखभाल करता है। शैक्षिक साहित्य निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत है :

(अ) पाठ्यपुस्तकें और अध्यापक दर्शिकाएँ

(ब) पूरक पठन सामग्री

(स) वार्षिक पुस्तकें

(द) अनुसंधान मोनोग्राफ

(य) शिक्षात्मक सामग्री

(र) पुस्तिकाएँ

(ल) शैक्षिक पत्र-पत्रिकाएँ

(व) विदेशी पुस्तकों का पुनर्मुद्रण, इत्यादि।

9. केन्द्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्री परिषद् की महासमिति के अध्यक्ष हैं। राज्यों के तथा विधानांगों वाले संघ राज्यक्षेत्रों के सभी शिक्षा मंत्री और दिल्ली के मुख्य कार्यकारी पार्षद् परिषद् के पदेन सदस्य होते हैं। इनके अलावा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष, चार विश्वविद्यालयों के कुलपति और भारत सरकार के बारह नामजद व्यक्ति जिनमें से चार अध्यापक होते हैं; और कार्यकारी समिति के सभी सदस्य परिषद् के सदस्य होते हैं। शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय में भारत सरकार का सचिव पदेन सदस्य होता है। इस प्रकार के गठन के उच्चतम स्तर पर और पारस्परिक सहमति से नीति विषयक निर्णय लेना संभव हो जाता है। इसी पृष्ठभूमि में भारत सरकार ने परिषद् से राष्ट्रीय स्कूल शिक्षा बोर्ड के रूप में कार्य करने का निवेदन किया है।

10. परिषद् का प्रशासन एक कार्यकारी समिति करती है जिसमें परिषद् का अध्यक्ष, परिषद् के निदेशक और संयुक्त निदेशक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष, शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय और वित्त मंत्रालय के प्रतिनिधि, दो अध्यापक, परिषद् के संकायों के तीन सदस्य और दो जाने माने शिक्षाविद होते हैं। यह कार्यकारी समिति परिषद् के कार्यों से संबंधित सभी मामलों पर निर्णय लेती है। इसी प्रकार के निर्णय लेने में कार्यकारी समिति की सहायता के लिए एक कार्यक्रम सलाहकार समिति की व्यवस्था की गई है, जो परिषद् के कार्यक्रमों की जाँच करती है और उन्हें चालू करती है। इस समिति में परिषद् की संकाय के अलावा विश्वविद्यालय विभागों और राज्य शिक्षा संस्थानों के प्रतिनिधि होते हैं। एक वित्त समिति वित्तीय प्रभाव वाले सभी मामलों पर कार्यकारी समिति को सलाह देती है जबकि स्थापना समिति सभी प्रशासनिक मामलों में सहायता करती है। चारों क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों के लिए अलग-अलग प्रबंध समितियों का गठन किया गया है जिनका अध्यक्ष उस विश्वविद्यालय का कुलपति होता है जिससे वह संस्था सम्बंद्ध है। यह प्रबंध-समिति संबंधित संस्था के सीधे हित के मामलों पर कार्यकारी समिति को सलाह देती है।

11. इनके अलावा, कार्यकारी समिति आमतौर पर स्थाई समितियों की नियुक्ति करती है, जो विभिन्न विशिष्ट प्रश्नों पर विचार करती हैं, और जिनमें परिषद् के प्रतिनिधि और भारत के विभिन्न भागों के इस क्षेत्र के विशेषज्ञ होते हैं। इस प्रकार विज्ञान में अध्ययन समूहों से संबंधित समस्याओं, देश में विज्ञान शिक्षा में सुधार के लिए यूनेस्को-यूनीसेफ-सहायता प्राप्त परियोजनाओं से संबंधित समस्याओं, राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना आदि को पहले तो जाने-माने विशेषज्ञों के स्तर पर ही सुलझाए जाने की आवश्यकता है।

12. शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय स्वयं कई समितियों की अथवा बोर्डों की नियुक्ति करता है। ऐसे बोर्डों में आमतौर पर परिषद् का प्रतिनिधित्व होता है और जहाँ भी आवश्यक होता है, ऐसे बोर्डों और समितियों को उनके नित्य प्रति के कार्य में सहयोग देने के अलावा, यह अपेक्षित विशेषज्ञ सलाह देती है। इस प्रकार परिषद् केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड, राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड आदि के साथ निकट सहकारिता में कार्य करती है। एक ओर शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय व उसकी समितियाँ और दूसरी ओर परिषद् इन दोनों के बीच का संबंध इतना अविरत और निकट का है कि इस संबंध को अथवा अलग इकाई के रूप में परिषद् जिस विशिष्ट ढंग से कार्य करती है, उसे स्पष्ट शब्दों से परिभाषित करना असंभव सा है। इस प्रकार का घनिष्ठ संबंध परिषद् के प्रभावी कार्यसंचालन में सहायक होता है और असाधारण सीमा तक इसके काम में, विशेषकर जो कुछ भी यह सूत्र-बद्ध करती है उसके कार्यान्वयन में सहायता करता है।

5

परिषद् के कार्यकलाप

13. परिषद् ने भारत भर में स्कूल शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा पर पहले ही महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। इसने विभिन्न किस्मों में आदर्श स्कूल पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की हैं, जिन्होंने देश में ही नहीं प्रत्युत बाहर भी शिक्षाविदों का ध्यान आकृष्ट किया है। इसने मुख्यतः वस्तुमूलक उपलब्धि परीक्षाओं के लिए परीक्षा प्रश्न तैयार करने में अनेक राज्य शिक्षा बोर्डों की सहायता की है। यह सामग्री देश भर में अनेक प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में बाँटी गई है। इसके अलावा, यूनेस्को-यूनीसेफ परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित विज्ञान पुस्तकों का स्कूल स्तर पर प्रयोग के लिए भारत में कई भाषाओं में अनुवाद किया जाता है। परिषद् विज्ञान क्षेत्र में अच्छे छात्रों के चयन के लिए एक अखिल भारतीय प्रतियोगिता का आयोजन करती है। यह राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना अत्यन्त लोकप्रिय हुई है और इससे निर्धन परिवारों के भी छात्रों को शिक्षा में उच्चतम स्तर तक अर्थात् पी-एच० डी० तक अविच्छिन्न और वित्तीय चिन्ता से मुक्त रहकर अपना अध्ययन करने का अवसर मिला है। इस योजना के लिए परीक्षा अब संघ की सभी भाषाओं में रखी जा रही हैं और समूची कार्यविधि को निरंतर समीक्षाधीन रखा जाता है ताकि विभिन्न सुधार किए जा सकें।

14. परिषद् ने विभिन्न संगठनों द्वारा तैयार की गई पाठ्यपुस्तकों का विभिन्न दृष्टिकोणों से मूल्यांकन किया है और लगातार मूल्यांकन कर रही है। अनेक राज्य संगठनों से परिषद् को इस आशय की प्रार्थनाएँ प्राप्त होती रहती हैं कि पुस्तकों का या पांडुलिपियों का मूल्यांकन किया जाए। अनुसंधान परियोजनाओं को सहायतार्थ अनुदान देने की परिषद् की योजना से बहुत से विश्वविद्यालय विभाग, अध्यापक शिक्षण कालेज, अनुसंधान संस्थाएँ आदि महत्वपूर्ण अनुसंधान के कार्य में रत हो गई हैं। इन अनुसंधानों के कुछ परिणामों का स्कूल शिक्षा पर पहले ही जोरदार प्रभाव पड़ चुका है। परिषद् शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधानों को प्रकाशित करने में वित्तीय रूप में सहायता करती है। इसके अलावा परिषद् राष्ट्रीय/प्रादेशिक स्तर पर कार्य कर रहे व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को स्कूली शिक्षा के सुधार के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है। उदीयमान युवा अनुसंधान कार्यकर्त्ताओं की सहायता करने के लिए; परिषद् 300 रु० तथा 500 रु० के मूल्य की क्रमश: अवर तथा प्रवर मासिक वृत्तियाँ प्रदान करती है और उनके अभिवर्द्धन के लिए सुविधाएँ प्रदान करती है।

15. परिषद् ने अपने घटक एककों के माध्यम से अप्रशिक्षित शिक्षकों की बहुलता कम करने की एक विशेष परियोजना पर कार्य शुरू किया है। इस योजना में नियोजित शिक्षकों को बी०एड० करने में सहायता देने के लिए अवकाश एवं पत्राचार अध्यापन उपलब्ध कराया जाता है।

16. परिषद् के कार्य की एक सामान्य विशिष्टता, स्कूल अध्यापकों तथा अध्यापक प्रशिक्षकों को विकास की सुविधाएँ और अवसर प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार के ग्रीष्मकालीन संस्थानों का आयोजन करना है। इसके अतिरिक्त, अपने कार्य को सार्थक बनाने के लिए परिषद् ने माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में 95 से अधिक विस्तार सेवा केन्द्र, और प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में 45 से अधिक ऐसे केन्द्र स्थापित किए हैं जो देश भर में फैले हुए हैं। इसके अलावा, परिषद् भारत के सभी भागों से लिए गए शिक्षा कर्मचारियों तथा अध्यापकों एवं अन्य विशेषज्ञों को प्रशिक्षण देने के लिए विचार गोष्ठियों और कार्यक्रमों का निरन्तर संचालन करती है। परिषद् में नियोजित विशेषज्ञों के लिए भारत के अनेक राज्यों एवं राज्य शिक्षा बोर्डों सहित स्कूली शिक्षा में रुचि रखने वाले बहुत से संगठनों से निरंतर तथा अनंत माँग आती रहती है।

17. राष्ट्रीय सम्पूर्णता और भारत की मौलिक एकता का विचार बच्चों के मस्तिष्क में भरने के लिए, परिषद् मूल्यवान साहित्य का प्रकाशन करती है और विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के विभिन्न शिविरों का आयोजन करती है। परिषद् द्वारा विकसित पाठ्य सामग्री, सामूहिक गायन सामग्री आदि ने विशेष ध्यान आकृष्ट किया है।

18. उपरोक्त विवरण परिषद् में हो रहे विभिन्न कार्यकलापों तथा उसके व्यवस्थित और प्रशासित कार्यों का विस्तृत चित्रांकन करता है।

वार्षिक रिपोर्ट
1970-71

वार्षिक रिपोर्ट

1970-71

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् का पुनर्गठन, जो गत वर्ष प्रारम्भ किया गया था, आगे चालू रखा गया। अनुसंधान प्रशिक्षण तथा विस्तार कार्यकलाप पिछले वर्षों की ही तरह परिषद् का ध्यान आकृष्ट करते रहे है। इन सभी कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण अनुवर्ती पैराग्राफों में प्रस्तुत किया गया है।

1. परिषद् का पुनर्गठन

1.01 संस्था के ज्ञापन में संशोधन : 4 अगस्त 1969 के सरकारी संकल्प के अनुसार परिषद् के संस्था ज्ञापन में निश्चित संशोधन किए गए जिनका अनुमोदन परिषद् की महासभा और कार्यकारी समिति ने किया। इन संशोधनों की पुष्टि महासभा की दूसरी विशेष बैठक में होनी है।

1.02 परिषद् के विनियमों की रचना : परिषद् के विनियमों के नियम 40 द्वारा प्रदान शक्तियों का प्रयोग करते हुए कार्यकारी समिति ने सरकार की पूर्वानुमति से परिषद् के प्रवन्ध और प्रशासनिक मामलों के लिए नियमों की रचना की। इन नियमों को परिषद् के अध्यक्ष के अनुमोदन से अगले वर्ष के प्रारम्भ से लागू किए जाने की संभावना है।

1.03 राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान : परिषद् अपने नई दिल्ली स्थित प्रधान कार्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान को चलाती है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के निम्नलिखित विभाग/एकक हैं .

(क) पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक शिक्षा विभाग

(ख) विज्ञान शिक्षा विभाग

(ग) सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग

(घ) पाठ्यपुस्तक विभाग

(ङ.) अध्यापक शिक्षा विभाग

(च) अध्यापन सहायता विभाग

(छ) शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा-आधार विभाग

(ज) आधार सामग्री प्रक्रिया तथा शैक्षिक सर्वेक्षण एकक

(झ) पुस्तकालय, प्रलेखीय तथा सूचना सेवाएँ

समीक्षा समिति (1968) की सिफारिशों पर सरकारी संकल्प के अनुपालन के अनुसार प्रौढ़ शिक्षा विभाग को 1 मार्च 1971 को शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय को हस्तांतरित कर दिया गया। इस विभाग का नाम प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय रखा गया है और यह शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में कार्य कर रहा है।

मापन तथा मूल्यांकन विभाग को स्थापित करने का प्रश्न अभी विचाराधीन है।

1.04 क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय : क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों ने चार वर्षीय विज्ञान पाठ्यक्रम तथा चार वर्षीय भाषा पाठ्यक्रम को प्रतिवेदन वर्ष में जारी रखा। इन विषयों के संशोधित पाठ्यक्रम तैयार किए जा रहे है जिनको शीघ्र ही प्रस्तुत किया जाएगा। क्षेत्रीय महाविद्यालय के सेवा-पूर्व पाठ्यक्रम में विधि अनुसार दाखिल 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने के प्रश्न पर विचार किया गया और इस संबंध में लिए गए निर्णय को शैक्षणिक सत्र 1971-72 से लागू किया जाएगा। ग्रीष्म स्कूल एवं पत्राचार पाठ्यक्रम में दाखिल विद्यार्थियों की छात्रवृत्ति रोकने का प्रश्न भी विचाराधीन है और इस संबंध में लिए गए निर्णय को शैक्षणिक सत्र 1971-72 से लागू किया जाएगा।

1.05 केन्द्रीय शिक्षा संस्थान : प्रतिवेदन वर्ष में केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली के नियन्त्रण को दिल्ली विश्वविद्यालय को हस्तान्तरित करने का कार्य पूर्ण न हो सका। फिर भी इस हस्तान्तरण को जल्दी से जल्दी पूर्ण करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

1.06 रा० शै० अनु० और प्र० परिषद् की जांच समिति : भारत सरकार ने परिषद् के संस्था ज्ञापन के अनुच्छेद 6 में निहित शक्तियों का प्रयोग करते हुए निवृत्त महानियन्त्रक रक्षा-खाता और भूतपूर्व संघ-लोक सेवा आयोग के सदस्य श्री बटुक सिंह को परिषद् के भर्ती नियमों और कार्यविधियों की समीक्षा के लिए नियुक्त किया।

2. प्रशासन और वित्त

2.01 परिषद् के अधिकारीगण : 17 मार्च 1971 तक शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय के भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रोफेसर वी० के० आर० वी० राव परिषद् के प्रधान थे। 18 मार्च 1971 से शिक्षा तथा समाज सेवा के केन्द्रीय मंत्री श्री सिद्धार्थ शंकर राय परिषद् के प्रधान बने। प्रो० जे० के० शुक्ल स्थानापन्न संयुक्त सचिव और अध्यापक शिक्षा विभाग के प्रधान का कार्यभार संभाले हुए

उन्होंने 28 मई 1970 से संयुक्त सचिव के स्थानापन्न का कार्यभार छोड़ा और बाद में जुलाई 1970 में उनकी बदली भूपाल के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रिंसिपल के रूप में कर दी गई। मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय की भूतपूर्व प्रिंसिपल कुमारी अहल्या चारी ने नवंबर 1970 में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आयुक्त के पद का कार्यभार सँभाला। जून 1970 में अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रिंसिपल श्री पी० डी० शर्मा की बदली भुवनेश्वर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय में हो गई और उनके स्थान पर डा० आर० सी० दास ने अजमेर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय के प्रिंसिपल के पद का कार्यभार सँभाला।

2.02 परिषद् की समितियाँ : परिषद् की महासमिति की वार्षिक आम बैठक नई दिल्ली में 4 जनवरी 1971 को हुई जिसमें 1969-70 वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट तथा 1968-69 वर्ष की लेखा परीक्षा रिपोर्ट पर विचार किया गया। इसके अतिरिक्त विज्ञान शिक्षा विभाग द्वारा तैयार की गई प्राथमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा में सुधार योजना पर भी विचार किया गया और यह सुझाव दिया गया कि इन्हीं आधारों पर राज्य सरकारों द्वारा तैयार की गई मार्गदर्शी परियोजनाओं को यथासम्भव प्रोत्साहन दिया जाए।

परिषद् की कार्यकारी समिति की प्रतिवेदन वर्ष में चार बैठकें 20 अप्रैल 1970, 25 नवम्बर 1970, 9 दिसम्बर 1970 तथा 25 जनवरी 1971 को हुईं। इन बैठकों में समिति ने परिषद् की 1969-70 की वार्षिक रिपोर्ट को, 1966-67, 1967-68 और 1968-69 वर्षों के लेखा विवरण को तथा इन वर्षों से संबंधित लेखा परीक्षा रिपोर्टों को, 1970-71 के बजट और संशोधित अनुमानों को, 1971-72 के बजट और चौथी पंचवर्षीय योजना (1969-74) को स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त समिति ने भारत सरकार के 4-8-1969 के संकल्प के अनुसार परिषद् के संयोजन ज्ञापन के अनुच्छेद 3 और 6 में संशोधन को स्वीकार किया और परिषद् के प्रारूप नियमों को भी अपनाया। इसने राज्य सरकारों से संपर्क को व्यवस्थित करने के लिए परिषद् के क्षेत्रीय एककों को क्षेत्रीय सलाहकार के कार्यालय में बदलने की आशोधित परियोजना को स्वीकृति दी। इसने पाठ्यपुस्तक पैनेलों और संपादकीय बोर्डों को तुरन्त समाप्त करने की सिफारिश की। भाषा प्रयोगशाला समिति की सिफारिश के अनुसार इसने जिन दो मार्गदर्शी परियोजनाओं को प्रारम्भ करने की सिफारिश की, वह थी, परिषद् में भाषा प्रयोगशालाओं द्वारा भाषा शिक्षण एकक की स्थापना और परिषद् में भाषा प्रयोगशाला उपकरणों की रचना और जाँच के लिए तकनीकी सुविधाएँ देना। समिति सिद्धांततः राष्ट्रीय स्कूल शिक्षा बोर्ड के कार्यों को कार्यान्वित करने के लिए एक अलग संगठन की स्थापना के लिए सहमत हो गई। इसने क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में 1970-71 में चार वर्षीय विज्ञान तथा भाषा पाठ्यक्रमों को जारी रखने की सिफारिश की और चार वर्षीय भाषा पाठ्यक्रम को जारी रखने के पक्ष पर विस्तार में जाँच करने के लिए एक उप-समिति की नियुक्ति की। उप-समिति ने प्रतिवेदन वर्ष में अपनी रिपोर्ट दे दी।

कार्यकारी समिति ने उप-समिति के चार वर्षीय अंग्रेजी पाठ्यक्रम को 1971-72 में जारी रखने की, जुलाई 1972 से अंग्रेजी के परिवर्तित व संशोधित पाठ्य-क्रम को प्रारम्भ करने की और दूसरी भाषाओं के चार वर्षीय पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ करने की सिफारिशों को मान्यता दी। इसने प्रतिवेदन वर्ष में एक प्रकाशन सलाहकार समिति, एक विज्ञान सलाहकार समिति और एक स्थापना समिति का गठन किया। इसने परिषद् की वित्त समिति का भी पुनर्गठन किया। समिति ने अविद्यार्थी युवकों के लिए क्षेत्रीय महाविद्यालयों में कार्यक्रम आरम्भ करने की सिफारिश की। समिति ने विज्ञान शिक्षकों के लिए ग्रीष्मकालीन संस्थानों को चलाने का दायित्व विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से लेकर ग्रीष्म 1972 के प्रारम्भ से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को देना स्वीकार किया।

परिषद् की वित्त समिति की बैठकें 24 जुलाई, 30 सितम्बर, 23 नवम्बर 1970 तथा 15 मार्च 1971 को हुई। पहली दो बैठकों में इस समिति ने केवल 1966-67, 1967-68 और 1968-69 वर्षों के लेखा विवरण-पत्र तथा इन वर्षों से संबंधित लेखा परीक्षा रिपोर्टों, 1970-71 के परिशोधित अनुमान तथा 1971-72 के बजट अनुमानों पर विचार किया। दूसरी दो बैठकों में इस समिति ने कार्यकारी समिति को कई समस्याओं पर सिफारिशें कीं जैसे राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान कैम्पस के गेस्ट हाउस और होस्टलों में रहने के लिए किराए की दर का स्थिर करना, अध्यापन सहायता विभाग द्वारा बनाई गई फिल्मों और फिल्मस्ट्रिपों का मूल्य निर्धारण करना, परिषद् द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों, सामान्य पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं के लिए मूल्य निर्धारण सूत्र, देश में परिषद् की पाठ्यपुस्तकों की बिक्री के लिए थोक विक्रेताओं की नियुक्ति और परिषद् के प्रकाशनों के लिए कनाट प्लेस या आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली में बिक्री डिपो की स्थापना।

इस वर्ष कार्यक्रम सलाहकार समिति की एक ही बैठक 21 अगस्त 1970 को हुई। इस समिति ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के 1971-72 के कार्यक्रमों पर विचार किया। इसने कार्यकारी समिति को जिन मामलों की सिफारिशें कीं वह थीं, एक अलग मूल्यांकन एवं पाठ्यक्रम एकक की स्थापना, भारत में हुए शैक्षिक अनुसंधानों का विश्वकोष प्रकाशित करना, भाषाओं में चार वर्षीय पाठ्यक्रम की प्रस्तावना, अविद्यार्थी युवकों के लिए कार्यक्रमों का प्रारंभ, राष्ट्रीय एकता शिविरों का मूल्यांकन, स्कूल के बच्चों के लिए स्कूल के बाहर विज्ञान कार्यकलापों की विशेष व्यवस्था, अनुसंधान विधि के पाठ्यक्रम का पुनः प्रारंभ, विज्ञान प्रतिभा खोज योजना का मूल्यांकन, इत्यादि। इसके अतिरिक्त इस समिति ने निम्नलिखित उप-समितियों को स्थापित करने की सिफारिश की :

(i) परिषद् की जी० ए०आर०पी० योजना के अंतर्गत अनुसंधान प्रस्तावों

के आवेदन-पत्रों पर कार्यवाही करने के नियमों और कार्यविधियों को विकसित करने के लिए उप-समिति;

(ii) व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को वित्तीय सहायता देने के नियमों और कार्यविधियों को विकसित करने के लिए उप-समिति;

(iii) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सब विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के अनुसंधान प्रस्तावों पर विचार करने के लिए उप-समिति;

(iv) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सब विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के सेमिनारों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों पर विचार करने के लिए उप-समिति;

(v) चार वर्षीय विज्ञान पाठ्यक्रम पर उप-समिति;

(vi) चार वर्षीय तकनीकी पाठ्यक्रम पर उप-समिति ।

परिषद् तथा उसकी विभिन्न समितियों के सदस्यगणों की सूचियाँ परिशिष्ट 1 में देखें जा सकती हैं।

2.03 चतुर्थ पंचवर्षीय योजना : भारत सरकार के निर्देशानुसार परिषद् की चौथी पंचवर्षीय योजना को तैयार किया गया । मुख्यतया, इस योजना में वर्तमान कार्यों को समुचित रूप से संशोधित ढंग से चलाते रहने और केन्द्रीय सरकार की स्कूल शिक्षा की नीतियों के कार्यान्वयन के लिए कुछ महत्वपूर्ण नई परियोजनाओं को शुरू करना सम्मिलित है । विस्तार सेवा केन्द्रों की व्यवस्था समाप्त करने और राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना, सहकारी अनुसंधान तथा विकास कार्यक्रमों, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के कार्यक्रमों, प्रकाशन एकक के कार्यक्रमों और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रधान कार्यालय तथा राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा परिषद् के योजना-प्रारूप में कमी करने के फलस्वरूप परिषद् की चौथी योजना की मूलत: निर्धारित सीमा 8.30 करोड़ रुपए से घटा कर 7.50 करोड़ रुपए कर दी गई । परिषद् के संगठनात्मक एककों के विभिन्न कार्यक्रमों के संशोधित योजना-प्रारूप का विस्तृत वर्षानुसार विवरण परिशिष्ट 2 में दिया गया है ।

2.04 वर्ष 1970-71 के बजट अनुमान : परिषद् को लगभग 30 लाख रु० की अल्प आय प्रकाशनों की बिक्री आदि से होती है । इसके अतिरिक्त अन्य व्यय सरकार से प्राप्त अनुदानों से होता है । परिषद् के विभिन्न कार्यक्रमों पर 3.70 करोड़ रुपए वार्षिक व्यय होता है । परिषद् के 1970-71 वर्ष के योजना और गैर-योजना संबंधित बजट और संशोधित अनुमानों और वास्तविक व्यय का संक्षिप्त ब्यौरा आगे दिया गया है ।

	बजट अनुमान (लाख रु० में)	संशोधित अनुमान (लाख रु० में)	वास्तविक (लाख रु० में)
गैर योजना	214.28	214.28	209.58
योजना	177.50	156.22	162.58
योग	391.78	370.50	372.16

1970-71 वर्ष में परिषद् की प्राप्तियों तथा भुगतान स्थिति का अधिक विस्तृत विवरण परिशिष्ट 3 में दिया गया है।

3. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान कैम्पस व अन्य कैम्पसों का विकास

प्रतिवेदन वर्ष में शिक्षा संस्थान कैम्पस, नई दिल्ली तथा अजमेर, भूपाल, भुवनेश्वर स्थित क्षेत्रीय महाविद्यालयों के कैम्पसों के विकास पर काफी ध्यान दिया गया। परिषद् के कर्मचारियों के लिए आवास-व्यवस्था की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए नई दिल्ली कैम्पस में टाइप I के 32, टाइप IV के 16 और टाइप V के 8 क्वार्टरों के निर्माण के लिए प्रशासकीय तथा वित्तीय स्वीकृति दी गई। इसके अतिरिक्त शिक्षा संस्थान कैम्पस में निम्नलिखित निर्माण कार्यों में भी प्रगति हुई :

(अ) टाइप II के 32 और टाइप III के 32 क्वार्टरों का निर्माण;

(ब) निदेशक के बंगले का निर्माण;

(स) निगम जल को इकट्ठा करने के लिए भूमि के भीतर 40,000 गैलन क्षमता वाले टैंक का निर्माण; और

(द) शिक्षा संस्थान कैम्पस के अहाते की चारदीवारी का निर्माण।

नई दिल्ली कैम्पस में पीने के पानी की व्यवस्था करने के लिए दिल्ली नगर निगम ने पानी के पाइप डालने का कार्य पूरा कर लिया है।

अजमेर, भूपाल, भुवनेश्वर और मैसूर स्थित क्षेत्रीय महाविद्यालयों के स्थानों के विकास का मुख्य कार्य पूरा हो गया है। इन महाविद्यालयों के अहातों में कर्मचारियों के लिए निवास भवनों के निर्माण करवाने की माँग पूरा करने के लिए अब विशेष महत्व दिया जा रहा है।

4. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय

परिषद् के नई दिल्ली कम्पस में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का एक काफी बड़ा पुस्तकालय है। यह पुस्तकालय विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों के अनुसंधान कर्मचारियों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसके उपयोग कर्ताओं में वह लोग भी सम्मिलित हैं जो दूसरे अनुसंधान और शैक्षणिक

संगठनों में कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त यह पुस्तकालय बहुत सी स्थानीय संस्थाओं को अंतर-पुस्तकालय उधार-सुविधाएं भी प्रदान करता है।

इस समय पुस्तकालय में एक लाख से अधिक पुस्तकें और चार हजार से अधिक पत्र-पत्रिकाओं के जिल्द बँधे हुए अंक हैं। 1970-71 वर्ष में पुस्तकालय में निम्नलिखित बढ़ोत्तरी हुई :

(अ) पुस्तकें	
खरीदीं	2,020
बिना मूल्य के प्राप्त कीं	615
जोड़	2,635

(ब) पत्र-पत्रिकाएँ	
चन्दा देकर प्राप्त कीं	276
बिना मूल्य के या विनिमय द्वारा प्राप्त कीं	74
जोड़	350

समाचार-पत्र-कतरन-सेवा जो पुस्तकालय ने 1969-70 में प्रारंभ की थी वह प्रतिवेदन वर्ष में भी जारी रखी गई। शिक्षा और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् से संबंधित महत्वपूर्ण समाचारों को विषयानुसार सुरक्षित रखा जाता है।

समीक्षा समिति की सिफारिशों और सरकार के संकल्प के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान पुस्तकालय का कार्यक्षेत्र 1969-70 में बढ़ाकर प्रलेखीय तथा सूचना सेवाओं को सम्मिलित किया गया। पुस्तकालय कर्मचारियों द्वारा प्रलेखीय तथा सूचना सेवाओं को विकसित करने की योजना 1970-71 में कार्यान्वित न हो सकी।

पुस्तकालय को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है जैसे स्थान, उपयुक्त फर्नीचर और उपकरण आदि का अभाव। इन समस्याओं के समाधान के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के निदेशक ने श्री बी० एस० केसवन निदेशक, राष्ट्रीय ग्रंथागार कलकत्ता, की अध्यक्षता में एक समिति की नियुक्त की। इस समिति से जल्द ही रिपोर्ट प्राप्त होने की संभावना है।

5. क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

1970-71 वर्ष में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में पहले से नामांकित विद्यार्थियों के लिए विज्ञान, अंग्रेजी, वाणिज्य तथा प्रौद्योगिकी चार वर्षीय पाठ्यक्रम चालू रखे गए। चारों क्षेत्रीय महाविद्यालयों में चार वर्षीय प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रम में और भूपाल तथा मैसूर क्षेत्रीय महाविद्यालयों में चार वर्षीय वाणिज्य पाठ्यक्रम में नए प्रवेश क्रमश: 1969-70 और 1970-71 में रोक दिए गए। अप्रशिक्षित अध्यापकों की अत्यधिक संख्या को दूर करने के लिए चारों महाविद्यालयों में पत्राचार-एवं-ग्रीष्म स्कूल का एक वर्षीय बी० एड० पाठ्यक्रम चालू रखा गया। इसके अतिरिक्त इन क्षेत्रीय महाविद्यालयों में कुछ सीमित विषयों में एक वर्षीय बी० एड० पाठ्यक्रम चलाए गए। इस क्षेत्र में कृषि तथा वाणिज्य में एक वर्षीय बी० एड० पाठ्यक्रम अत्यधिक विशेष महत्वपूर्ण है। भुवनेश्वर तथा भूपाल में एम० एड० पाठ्यक्रम के लिए सीमित मात्रा में कुछ सुविधाएँ प्रदान की गईं और इस पाठ्यक्रम में दाखिला लेने वाले सभी विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की गईं। इन चारों महाविद्यालयों द्वारा व्यापक सेवा कालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया तथा उन्होंने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों और प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए ग्रीष्म संस्थानों के चलाने में भी सक्रिय भाग लिया।

6. पाठ्यक्रम विकास

पाठ्यक्रम विकास परिषद् के मुख्य कार्यों में से एक है। 1970-71 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के सभी विभागों में इस कार्य पर विशेष ध्यान दिया गया। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में भी संभव सीमा तक इस कार्य को प्रोत्साहन दिया गया। पाठ्यक्रम विकास के अंतर्गत पाठ्यपुस्तकों का विकास, अध्यापक सहायक पुस्तकें, पाठ्यक्रम सहायक पुस्तकें, अनुपूरक पठन सामग्री, अध्यापन सहायता, प्रयोगशाला और पुस्तकालय उपकरण आदि आते है। प्रतिवेदन वर्ष में इस क्षेत्र में परिषद् द्वारा किए गए कार्य का विवरण परिशिष्ट चार में दिया गया है।

7. यूनेस्को-यूनीसेफ सहायता प्राप्त स्कूल विज्ञान की अग्रगामी परियोजना

गत कई वर्षों से परिषद् स्कूलों में विज्ञान शिक्षा को ऊँचा उठाने के लिए विज्ञान और गणित में नई अनुदेश सामग्री विकसित कर रही है। इस अग्रगामी परियोजना के अंतर्गत परिषद् की यूनेस्को-यूनीसेफ सहायता से देश में सारे स्कूल स्तर पर विज्ञान की शिक्षा को एक बड़े पैमाने पर पुनर्सगठित तथा मजबूत बनाने की योजना है। 1970-71 में 13 राज्यों और एक संघ राज्यक्षेत्र द्वारा परिषद् की अनुकूलित/गृहीत विज्ञान्-सामग्री के अनुवाद चुने हुए लगभग 50 प्राथमिक स्कूलों और 30 मिडिल स्कूलों में प्रारंभ किए गए। परिषद् ने इनमें से हर परीक्षात्मक स्कूल को एक समष्टि प्राथमिक वैज्ञानिक किट दिया। इन किटों की रूपरेखा व निर्माण परिषद् की केन्द्रीय विज्ञान कर्मशाला में हुआ। यूनीसेफ ने 79 विशेष संस्थाओं को जिनमें राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान और दूसरे राज्य स्तर के संस्थान भी

है, उनकी प्रयोगशालाओं के लिए विज्ञान उपकरण दिए। यूनीसेफ के अनुरोध पर प्रतिवेदन वर्ष में समुद्रपार शैक्षिक विकास केन्द्र, लंदन, के विशेषज्ञों के एक दल ने परियोजनाओं की प्रगति का मूल्यांकन किया। इस दल ने परियोजना के भविष्यात्मक विकास के लिए सिफारिशें कीं।

आगामी वर्षों में इस परियोजना को सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में प्रस्तुत करने का प्रस्ताव है। इस परियोजना के कार्यक्षेत्र का सारे स्कूल स्तर पर एक चरण कार्यक्रम द्वारा विस्तार करने का भी विचार है। इस उद्देश्य से परिषद् नई अनुदेश सामग्री और वैज्ञानिक किट स्कूलों को देगी। क्योंकि ऐसी परियोजनाओं की सफलता मुख्यतः शिक्षकों और उनके प्रशिक्षण पर निर्भर करती है। इसलिए इस परियोजना के दूसरे चरण में देश के सारे प्राथमिक और माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों को यूनीसेफ विज्ञान उपकरण देने का प्रस्ताव है। उपकरण का प्रयोग शिक्षकों के सेवापूर्व और सेवाकालिक प्रशिक्षण के लिए किया जाएगा। अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए विज्ञान उपकरण के उपयोग के प्रदर्शन के लिए अनुस्थापन पाठ्यक्रम का आयोजन भी किया जायगा।

8. स्कूल पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए प्रचंड कार्यक्रम

निकट भविष्य में देश की स्कूल पाठ्यपुस्तकों की विषय-सूचियों की उपयुक्तता के संबंध में जनमत को देखते हुए, शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय ने 1970-71 में राष्ट्रीय एकीकरण के लिए हानिकारक सामग्री को छाँटने के लिए स्कूल पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का प्रचंड कार्यक्रम प्रारंभ किया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को इसके कार्यान्वयन का कार्यभार सौंपा गया। इस कार्यक्रम का तथा इसके अंतर्गत 1970-71 में किए गए कार्य का वर्णन परिशिष्ट 5 में दिया गया है।

9. परीक्षा सुधार कार्यक्रम

कई वर्षों से परिषद् देश की परीक्षा प्रणाली के सुधार में जुटी हुई है। परिषद् के परीक्षा सुधार कार्यक्रम के दो मुख्य लक्ष्य हैं:

(i) छात्रों के विकास को नापने के लिए परीक्षाओं को विधिमान्य विश्वसनीय उपकरण बनाना; और

(ii) सारी अध्यापन-अवबोधन विधियों को सुधारने के लिए परीक्षाओं को एक शक्तिशाली उपकरण बनाना।

परिषद् द्वारा विकसित परीक्षा सुधार के विस्तृत कार्यक्रम में जो सन्निहित है वह है लिखित परीक्षाओं से संबंधित प्रश्नों, प्रश्नपत्रों और अंक देने की विधियों में सुधार, व्यावहारिक परीक्षाओं में मूल्यांकन के तरीकों और परिणामों पर विचार और मौखिक परीक्षाओं में विषय-सूची का निर्माण और मौखिक वर्णन का समावेश।

यह कार्यक्रम निरीक्षण, इन्टर्व्यू और रेटिंग स्केलों आदि में मूल्यांकन विधियों के विस्तार की सिफारिश करता है। इसका लक्ष्य परीक्षाओं के प्रबंध करने के तरीकों और श्रेणी प्रमाणीकरण और वर्गीकरण के लिए परीक्षण गणना के प्रयोग के लिए ही सुधार करना नहीं है वरन् अनुदेश उपायों, शैक्षणिक भविष्यवाणी और निरीक्षण उपायों आदि से भी है। इसके परिणामस्वरूप पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, अनुदेश सामग्री और अनुदेश उपायों और अध्यापक प्रशिक्षण क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों को भी ध्यान में रखा गया है। इस क्षेत्र में परिषद् के कार्य का राज्यों पर अच्छा प्रभाव पड़ा है।

प्रतिवेदन वर्ष में मध्यप्रदेश और राजस्थान के राज्य शिक्षा बोर्डों और गुज-रात माध्यमिक स्कूल प्रमाण-पत्र परीक्षा बोर्ड के सुझाव पर विभिन्न विषयों में प्रश्न-पत्र बनाने वालों/साधन व्यक्तियों के लिए वर्कशाप का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त भारतीय स्कूल प्रमाण-पत्र परीक्षा परिषद् से संबद्ध स्कूलों के लिए एक गहन परीक्षा सुधार कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। परंतु इस वर्ष इस क्षेत्र में हुई महत्वपूर्ण घटनाएँ यह थीं : (i) परिषद् द्वारा नेपाल सरकार के 12 अधिकारियों के लिए शैक्षिक मूल्यांकन, पाठ्यक्रम और अनुदेशन में प्रशिक्षण का आयोजन, और (ii) केन्द्रीय शिक्षा सलाहकर बोर्ड की परीक्षा समिति की नियुक्ति जिसका अध्यक्ष केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री और सदस्य सचिव राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का निदेशक होगा।

10. राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना

राष्ट्रीय विज्ञान-प्रतिभा खोज योजना एक मार्गदर्शी परियोजना के रूप में 1963 में केवल केन्द्र शासित प्रदेश दिल्ली में प्रारंभ की गई थी जिसने 1964 में अखिल भारतीय योजना के रूप में व्यापक स्वरूप धारण कर लिया। इस योजना का उद्देश्य माध्यमिक स्तर तक के ऐसे वास्तविक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की खोज करना है जिनकी भविष्य में विज्ञान के क्षेत्र में अच्छा कार्य करने की संभावना हो और उन्हें बिना किसी आर्थिक चिन्ता के पीएच० डी० तक के अध्ययन के लिए वांछित सुविधाएँ सुलभ करना है। जब यह योजना प्रारंभ की गई थी उस समय विद्यार्थियों को चुनने के लिए प्रतियोगिता परीक्षा केवल अंग्रेजी भाषा में आयोजित होती थी। वर्ष 1969 से सभी प्रादेशिक भाषाओं में परीक्षाओं का आयोजन हो रहा है। 1970-71 में इस योजना के कार्यान्वयन का प्रतिवेदन परिशिष्ट 6 में दिया गया है।

11. जनसंख्या शिक्षा

जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हमारे जैसे विकासशील देशों के लिए चिन्ता का विषय है। उन्नति से होने वाले सारे लाभ जनसंख्या की अद्भुत वृद्धि नष्ट कर देती है। इसीलिए जनसंख्या शिक्षा को सारे विश्व में आवश्यक समझा जा रहा है।

स्कूल स्तर पर जनसंख्या शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय ने जनसंख्या शिक्षा की नई परियोजना का कार्य-भार 1969-70 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को सौंप दिया। परिषद् ने 1970-71 में सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग में एक नए एकक की स्थापना की जो इस क्षेत्र के लिए विशेष कार्यक्रम तैयार करेगा और उनको कार्यान्वित करेगा। प्रतिवेदन वर्ष में इस एकक ने वर्तमान पाठ्यक्रमों का अध्ययन करके स्कूल के विभिन्न विषयों में पाठ्यक्रम और अनुदेशन सामग्री के कार्यक्रम तैयार किए। इसने जनसंख्या शिक्षा का पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए दो अखिल भारतीय कर्मशालाओं का आयोजन किया। इसके अतिरिक्त इस एकक ने इस विषय पर जो साहित्य प्रकाशित किया वह यह है;

(i) एन एनालिसिस ऑफ सिलेबसेस-ए स्टेटस स्टडी;

(ii) ए ड्राफ्ट सिलेबस ऑन पापुलेशन एजुकेशन; और

(iii) ए ब्रोशर ऑन डेमोग्राफी।

12. राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से राष्ट्रीय एकीकरण की समस्या का विशेष महत्व है और इसको मजबूत करने का सुझाव है। इस संबंध में स्कूल स्तर के छात्रों की शिक्षा के माध्यम से तैयार विभिन्न कार्यकलाप एक महत्वपूर्ण कार्य कर सकते हैं। छात्रों में राष्ट्रीय एकता की भावना को जागृत करने के लिए केन्द्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय ने राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना को 1969-70 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को सौंप दिया। इस परियोजना के अंतर्गत 1970-71 में किए गए कार्यकलापों का विवरण परिशिष्ट 7 में दिया गया है।

13. राष्ट्रीय स्कूल शिक्षा बोर्ड

केन्द्र में राष्ट्रीय स्कूल शिक्षा बोर्ड और उसके प्रतिस्थानीय विभिन्न राज्यों और केन्द्र शासित क्षेत्रों में राज्य स्कूल शिक्षा के बोर्डों को स्थापित करने का सुझाव राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964-66) ने प्रस्तावित किया था। आयोग द्वारा प्रस्तावित स्कूल शिक्षा के केन्द्रीय तथा राज्य बोर्डों को स्थापित करने का उद्देश्य यह था कि स्कूल स्तर पर मानकों में लगातार सुधार हो सके। शिक्षा आयोग द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रीय स्कूल शिक्षा बोर्ड के निम्नलिखित कार्य हैं :

—स्कूल शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर योग्यता के प्रतीक्षित और परि-योजित मानकों की परिभाषा करना;

—अंतर्राष्ट्रीय विकास और राष्ट्रीय जरूरतों को ध्यान में रखते हुए ऐसे मानकों को समय-समय पर संशोधित करना;

—देश के विभिन्न भागों में स्कूल शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर प्राप्त वास्तविक मानकों का मूल्यांकन करना और यह ठीक-ठीक पता लगाना कि वह तदनुरूप प्रतीक्षित मानकों के कहाँ तक समीप हैं;

—स्कूल स्तर के मानकों को ऊँचा उठाने के लिए पाठ्यक्रम सुधार, पाठ्यपुस्तक निर्माण, अनुदेशन सामग्री और मूल्यांकन के कार्यक्रमों में राज्य सरकारों की सहायता करना तथा उनको सलाह देना; और

—स्कूल शिक्षा के मानकों के सुधार के लिए आवश्यक सारे कार्यक्रमों के बनाने और उनके कार्यान्वयन में राज्य सरकारों तथा दूसरे प्राधिकारियों को सलाह देना व उनकी सहायता करना।

शिक्षा आयोग द्वारा निर्दिष्ट राष्ट्रीय स्कूल शिक्षा बोर्ड की भूमिका और ऊपर उल्लिखित कार्यों, को पूरा करने का काम भारत सरकार के शिक्षा तथा युवक सेवा मन्त्रालय के पत्र संख्या एफ० 1-3-68 एन० सी० ई० आर० टी०, दिनांक 14 अक्तूबर 1969 के निर्देशानुसार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को करना है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है, प्रतिवेदन वर्ष में राष्ट्रीय स्कूल शिक्षा बोर्ड के कार्यों को पूरा करने के लिए एक संगठन की स्थापना का प्रस्ताव परिषद् की कार्यकारी समिति ने अपनी 20 अप्रैल 1970 की बैठक में सिद्धान्त रूप से स्वीकार कर लिया। इसके अतिरिक्त परिषद् ने अपने पत्र संख्या एफ० 39-1-70 पी-I दिनांक 27 जुलाई 1970 द्वारा राज्य शिक्षा विभागों को राज्य स्कूल शिक्षा बोर्डों की स्थापना के संबंध में ठीक स्थिति का पता देने को लिखा। पंजाब, उड़ीसा, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, बिहार और राजस्थान राज्य सरकारों से और लक्का द्वीप मिनीकाय तथा अमीन दीवी द्वीपसमूह, अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह, नेफा और त्रिपुरा संघ क्षेत्रों से उत्तर प्राप्त हो गए हैं। जिन राज्यों/संघ क्षेत्रों से जवाब प्राप्त नहीं हुआ है उनसे इस विषय में खोजबीन की जा रही है।

14. अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष, 1970

संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने वर्ष 1970 को अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष नामोद्दिष्ट किया और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसके कार्यकलापों के कार्यान्वयन के मार्गदर्शन का भार यूनेस्को को सौंप दिया। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष का ध्येय सदस्य राज्यों और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा मिलकर निम्नलिखित चार उद्देश्यों की वृद्धि करना था :

(i) सारे विश्व में शिक्षा की प्रगति की वर्तमान स्थिति का पता लगाना ;

(ii) शिक्षा के सुधार तथा विस्तार के कई मुख्य साधनों की ओर ध्यान आकर्षित करना;

(iii) शिक्षा के लिए अधिक साधनों को उपलब्ध करना ;

(iv) शिक्षा के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को पक्का करना।

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष का मुख्य विषय था सन् 70 से 79 तक की शैक्षिक समस्याएं'।

अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष के समारोहों के कुछ कार्यक्रम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने आरम्भ किए जिनका विवरण परिशिष्ट 8 में दिया गया है।

15. व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को अनुदान

देश में बहुत से व्यावसायिक संगठन हैं जो प्रत्यक्षतः अथवा परोक्ष रूप से स्कूली शिक्षा के लिए गुणकारी कार्य करते हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् गत कई वर्षों से ऐसे संगठनों को आर्थिक सहायता देने की परियोयना, केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्रथम पंचवर्षीय योजना के दौरान शुरू की गई स्वयंसेवी शैक्षिक संगठनों की सहायता की योजना के आधार पर चला रही है। 1970-71 में परिषद् की कार्यक्रम सलाहकार समिति की एक उप-समिति ने इन संगठनों को आर्थिक सहायता देने के संबंध में विचार करने के लिए विस्तृत तरीके और नियम विकसित किए। विभिन्न व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को 1970 71 में दी गई आर्थिक सहायता का ब्यौरा परिशिष्ट 9 में दिया गया है।

16. अनुसंधान अध्ययन, अन्वेषण तथा सर्वेक्षण

सितंबर 1961 में स्थापित होने के बाद से परिषद् ने चिन्तन और अवबोधन की मौलिक विधियों के अनुसंधान कार्यों को अपनाया है जिनमें उपलब्धि के उपाय, भारतीय बच्चों का सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से विकास का आकार, परीक्षण विकास, गुणी बच्चों का अध्ययन आदि शामिल हैं। इसने कक्षा-अध्यापन की समस्याओं का सूक्ष्म परीक्षण तथा उनको दूर करने के उपायों का प्रयत्न किया। इसने कई शैक्षिक सर्वेक्षण प्रारम्भ किए जिनका उद्देश्य है महत्वपूर्ण विषयों पर आधार संबंधी आँकड़े इकट्ठा करना जो आगे के शैक्षिक विकास की योजना और नीति निर्धारण में सहायता कर सकें। प्रतिवेदन वर्ष में पूरी की गई तथा हाथ में ली गई अनुसंधान परियोजनाओं तथा शैक्षिक सर्वेक्षणों का संक्षिप्त विवरण परिशिष्ट 10 में दिया गया है।

17. अनुमोदित अनुसंधान परियोजनाओं के सहायतार्थ अनुदान योजना

परिषद् अपने अनुसंधान कार्यक्रमों के अंतर्गत जो अनुसंधान अपने संगठनात्मक एककों द्वारा करती है उसके अतिरिक्त स्वतंत्र रूप से या सहयोग से विश्वविद्यालय शिक्षा विभागों, अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों, स्वैच्छिक शैक्षिक संगठनों और शैक्षिक अनुसंधानों में रुचि रखने वाले व्यक्तियों की अनुसंधान परियोजनाओं को विकसित करती है। इसका उद्देश्य सारे देश में अनुसंधान कार्यकलापों के लिए ऐसे केन्द्र स्थापित करना है जो भारतीय परिस्थितियों में शैक्षिक अनुसंधान को बढ़ावा दे

सकें। अब तक 93 अनुसंधान परियोजनाओं को, जो शिक्षा के विभिन्न मुख्य रूपों से संबंधित हैं, देश के विभिन्न भागों की विभिन्न संस्थाओं/व्यक्तियों को दी गईं। प्रतिवेदन वर्ष में 6 नई अनुसंधान परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई और दो पी-एच० डी० थीसिस के प्रकाशन के लिए अनुदान दिया गया। इन परियोजनाओं/पीएच० डी० थीसिस में से हर एक को वर्ष में दिए गए आर्थिक अनुदान का ब्यौरा परिशिष्ट 11 में दिया गया है।

18. प्रयोगात्मक परियोजनाएँ

परिषद् अपने संगठनात्मक एककों द्वारा और देश के विभिन्न भागों के माने हुए शैक्षिक अनुसंधान केन्द्रों के सहयोग से केवल अनुसंधान परियोजनाओं में ही नहीं जुटी है वरन् माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को अपनी कक्षाओं की समस्याएँ स्वयं सुलझाने के लिए परिषद् से आर्थिक सहायता और शैक्षिक मार्गदर्शन प्राप्त करके क्रिया-विधि अनुसंधान किस्म की छोटी प्रयोगात्मक परियोजनाओं को हस्तगत करने के निमित्त परिषद् उन शिक्षकों में गवेषणात्मक विचार विकसित करने का प्रयास करती रही है। ऐसी प्रयोगात्मक परियोजनाओं की योजना एक दशक से पहले प्रारंभ की गई थी। और उसकी प्रतिक्रिया सतत उत्साहवर्धक रही है। वर्ष 1970-71 में एक लाख से कुछ ऊपर रुपए की अनुमानित लागत की 252 परियोजनाएं आर्थिक सहायता के लिए अनुमोदित की गईं। 1969-70 में परिषद् ने जिस समिति की नियुक्ति इस योजना की कार्यविधि का मूल्यांकन करने को की थी उसने अपनी रिपोर्ट को अन्तिम रूप दे दिया है।

19. प्रशिक्षण कार्यक्रम

परिषद् के मुख्य कार्यों में एक कार्य माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों का सेवा पूर्व एवं सेवा कालीन प्रशिक्षण है। इसके अतिरिक्त प्राथमिक तथा माध्यमिक स्कूलों के प्रधान अध्यापकों, प्राथमिक और माध्यमिक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्य कर रहे अध्यापक शिक्षकों तथा स्कूल निरीक्षकों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। सेवा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली, और चारों क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में दिया जाता है और सेवाकालीन प्रशिक्षण परिषद् के सारे संगठनात्मक एककों द्वारा दिया जाता है। वर्ष 1970-71 में इस क्षेत्र में की गई परिषद् की कार्यवाहियों का वर्णन परिशिष्ट 12 में दिया गया है।

20. प्रसार तथा क्षेत्रीय सेवाएँ

परिषद् ने सितंबर 1961 में स्थापित होने के बाद से परिषद् द्वारा प्रसार तथा क्षेत्रीय सेवाओं के कार्यक्षेत्र में कार्य पर विशेष ध्यान दिया गया है। प्रसार तथा क्षेत्रीय सेवाओं का आयोजन विभिन्न कार्यकलापों द्वारा किया जाता है। इनमें से मुख्य हैं देश भर के चुने हुए प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में स्थित 140

प्रसार सेवा केन्द्रों द्वारा प्रसार सेवाओं का आयोजन; अध्यापकों को पारितोषिक द्वारा कक्षा शिक्षण की समस्याओं को पहचानने और अपने अनुभवों पर आधारित सुझाव देने को प्रेरित करना; विभिन्न वर्गों के शैक्षिक कार्यकर्त्ताओं के लाभ के लिए कर्मशालाओं और विचार गोष्ठियों का आयोजन; स्कूलों को शैक्षिक फिल्में तथा फिल्मस्ट्रिपें उधार देना, आदि । प्रतिवेदन वर्ष में इस क्षेत्र में किए गए कार्य का विवरण परिशिष्ट 13 में दिया है ।

21. राज्यों तथा संघ क्षेत्रों के साथ सहयोग

गत वर्षों की तरह 1970-71 में भी परिषद् और इसकी विशेषज्ञता ने राज्य शिक्षा विभागों, राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्डों और दूसरी शैक्षिक राज्य संस्थाओं को स्कूल शिक्षा से संबंधित सुधार में सहायता देना जारी रखा । परिषद् और राज्य सरकारों के बीच सहयोग को बढ़ाने की दिशा में इस वर्ष जो एक महत्वपूर्ण सुधार हुआ वह था परिषद् के क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यकलापों की राज्यों में स्थापना । क्षेत्रीय सलाहकारों का मुख्य कार्य राज्य शिक्षा विभागों और परिषद् के बीच संपर्क बनाए रखना और राज्यों के प्राथमिक और माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों का शैक्षणिक मार्गदर्शन करना है । इस समय क्षेत्रीय सलाहकारों के 9 कार्यालय विभिन्न राज्यों में कार्य कर रहे हैं जिनका अधिकार क्षेत्र नीचे लिखे अनुसार है :

क्षेत्रीय सलाहकार के कार्यालय	अधिकार क्षेत्र
बंगलौर	मैसूर, तमिलनाडु, पांडेचैरी
बीकानेर (अब जयपुर चला गया है)	राजस्थान
भोपाल	गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गोआ व नागर हवेली
भुवनेश्वर	बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
हैदराबाद	आंध्र प्रदेश
शिलांग	असम, नागालैंड, मणिपुर, मेघालय, नेफा और त्रिपुरा
त्रिवेन्द्रम	केरल
दिल्ली	दिल्ली और उत्तर प्रदेश
दिल्ली	हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, पंजाब और चंडीगढ़ ।

परिषद् और राज्य सरकारों/संघ क्षेत्रों के बीच 1970-71 में हुए सहयोग कार्यकलापों का विवरण परिशिष्ट 14 में दिया गया है।

22. शिक्षा तथा युवक सेवा मन्त्रालय के साथ सहयोग

4 अगस्त 1969 के सरकारी संकल्प के अनुसार, परिषद् 1970-71 में शिक्षा तथा युवक सेवा मन्त्रालय के शैक्षणिक पक्ष के रूप में कार्य करती रही। परिषद् के कर्मचारियों ने मन्त्रालय द्वारा स्थापित अनेक बोर्डों तथा अध्ययन दलों आदि में प्रतिनिधित्व करके मंत्रालय के कर्मचारियों के साथ सक्रिय सहयोग किया। इस सहयोग का संक्षिप्त प्रतिवेदन परिशिष्ट 15 में दिया गया है।

23. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् विशेषज्ञता, उपकरण आदि से संबंधित सहायता यूनेस्को, यूनीसेफ तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से पाती रही है। इस वर्ष परिषद् ने अपने अनेक कर्मचारियों को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों तथा उच्च प्रशिक्षण छात्रवृत्ति योजनाओं में भाग लेने के लिए विदेश भेजा। इस संबंध में क्रियाओं का विवरण परिशिष्ट 16 में दिया गया है।

24. प्रकाशन

परिषद् प्रत्येक वर्ष पाठ्यपुस्तकें, प्रशिक्षण सामग्री, अध्यापक दर्शिकाएँ, पाठ्यक्रम सहायक सामग्री, पूरक पठन सामग्री, अनुसंधान प्रबंध, पत्र-पत्रिकाएँ, रिपोर्ट और अन्य छोटी पुस्तकें और विदेशी पुस्तकों के सस्ते संस्करणों के रूप में विविध प्रकाशन प्रकाशित करती है। प्रतिवेदन वर्ष में 137 पुस्तकें प्रकाशित की गईं और फोर्थ इयर बुक ऑफ सेकेण्ड्री एजुकेशन की हस्तलिपि प्रेस को भेजी गई। 1970-71 में क्रमवार प्रकाशित पुस्तकों की सूची परिशिष्ट 17 में और विभिन्न राज्यों/संघ क्षेत्रों आदि द्वारा लगाई गई परिषद् की पाठ्यपुस्तकों की सूची इस परिशिष्ट के अनुबंध में दी गई है।

प्रतिवेदन वर्ष में एक विशेष उल्लेखनीय बात यह हुई कि महाराष्ट्र सरकार द्वारा परिषद् को कक्षा 7 की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक "शासन और संविधान" की मुद्रण श्रेष्ठता के लिए विशिष्ट प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया।

परिशिष्ट 17 में उल्लिखित प्रकाशनों के अतिरिक्त कर्मशाला/विचार गोष्ठी रिपोर्टों के रूप में मिमिओग्राफ सामग्री, अनुबंध आदि परिषद् के विभिन्न संगठनात्मक एककों द्वारा तैयार किए गए।

कृतज्ञता ज्ञापन

परिषद् शिक्षा तथा युवक सेवा के केन्द्रीय मंत्री और शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय के सभी कर्मचारियों को उनके द्वारा प्रतिवेदन वर्ष में समय-समय पर दी

गई सुविधाओं के लिए अत्यन्त कृतज्ञ है। परिषद् उन अनेक व्यक्तियों की भी आभारी है जिन्होंने अमूल्य समय निकाल कर इसकी अनेक समितियों में रहकर सेवा की है। कुछ संगठनों तथा संस्थानों ने परिषद् के कार्यों में सक्रिय सहयोग प्रदान किया है। राज्य शिक्षा विभागों ने भी परिषद् को अत्यंत तत्परता के साथ आवश्यक सहायता प्रदान की है। इस सबके प्रति भी, परिषद् अपनी कृतज्ञता प्रकट करती है।

परिषद् 'यूनेस्को', 'यूनीसेफ', 'यू०एन० डी०पी०', 'ब्रिटिश काउंसिल', 'यूसैड' 'अमरीकी राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रतिष्ठान', रूसी सरकार, ब्रिटेन की सरकार और जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य की भी कृतज्ञ है जिन्होंने विभिन्न रूप से सहायता प्रदान की है।

परिशिष्ट

परिशिष्ट 1

परिषद् तथा उसकी समितियों के सदस्यगण

1970-71

क. परिषद्

1. डॉ० वी० के० आर० वी० राव
केन्द्रीय मंत्री
शिक्षा तथा युवक सेवा
शास्त्री भवन
नई दिल्ली (अध्यक्ष)
श्री सिद्धार्थ शंकर राय
केन्द्रीय मंत्री
शिक्षा तथा युवक सेवा
(18.3.1971 से)

2. डा० दौलत सिंह कोठारी
अध्यक्ष, विश्वविद्यालय
अनुदान आयोग
बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली

3. सचिव
भारत सरकार
शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
नई दिल्ली

4. डॉ० के० एल० श्रीमाली
उपकुलपति
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी

5. प्रो० एस० एन० सेन
उप-कुलपति
कलकत्ता विश्वविद्यालय
कलकत्ता

6. श्री एन० डी० सुंदरवडिवेलु
उप-कुलपति
मद्रास विश्वविद्यालय
मद्रास

7. श्रीमती शारदा दीवान
उप कुलपति
एस० एन० डी० टी०
महिला विश्वविद्यालय
1, नाथी, बाई ठाकरसी रोड,
बम्बई 20

8. शिक्षा मंत्री
आंध्र प्रदेश
हैदराबाद

9. शिक्षा मंत्री
   असम
   शिलाङ

10. शिक्षा मंत्री
    बिहार
    पटना

11. शिक्षा मंत्री
    गुजरात
    अहमदाबाद

12. शिक्षा मंत्री
    हरियाणा
    चंडीगढ़

13. उप शिक्षा मंत्री
    जम्मू तथा कश्मीर
    श्रीनगर

14. शिक्षा मंत्री
    केरल
    त्रिवेन्द्रम

15. शिक्षा मंत्री
    महाराष्ट्र
    बम्बई

16. शिक्षा मंत्री
    मध्यप्रदेश
    भोपाल

17. शिक्षा मंत्री
    मैसूर
    बंगलौर

18. शिक्षा मंत्री
    उड़ीसा
    भुवनेश्वर

19. शिक्षा मंत्री
    पंजाब
    चंडीगढ़

20. शिक्षा मंत्री
    राजस्थान
    जयपुर

21. शिक्षा मंत्री
    तमिल नाडु
    मद्रास

22. शिक्षा मंत्री
    उत्तर प्रदेश
    लखनऊ

23. शिक्षा मंत्री
    पश्चिम बंगाल
    कलकत्ता

24. शिक्षा मंत्री
    नागालैण्ड
    कोहिमा

25. मुख्य कार्यकारी पार्षद
    दिल्ली प्रशासन
    दिल्ली

26. शिक्षा मंत्री
    गोवा, दमन और दीव
    पानाजी (गोवा)

27. शिक्षा मंत्री
    हिमाचल प्रदेश
    शिमला

28. शिक्षा मंत्री
    पांडिचेरी सरकार
    पांडिचेरी

29. शिक्षा मंत्री
    त्रिपुरा सरकार
    अगरतला

30. शिक्षा मंत्री
    मेघालय
    शिलाङ

31. प्रो० एस० वी० सी०अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

32. प्रो० एम० वी० माथुर
निदेशक
एशियायी शैक्षिक आयोजना
और प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

33. प्रो० शान्ति नारायण
कालेजों के शाखाध्यक्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

34. श्री एस० उदापाचार
मुख्य अध्यापक
नरूपतुंग बहुद्देशीय
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
हैदराबाद

35. श्री डी० एस० बाजपेयी
प्रधानाचार्य
केन्द्रीय विद्यालय
भारतीय टेक्नालॉजी संस्थान
कानपुर

36. संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

37. डॉ० आर० एच० दवे
अध्यक्ष
पाठ्यपुस्तक विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

38. डॉ० एम० सी० पंत
अध्यक्ष
विज्ञान शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

39. श्री पी० डी० शर्मा
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भुवनेश्वर

40. श्री टी० आर० जयरामन
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
नई दिल्ली

41. श्री ओ० पी० मोहला
वित्तीय सलाहकार
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्)
शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
नई दिल्ली

42. श्री भक्त दर्शन
केन्द्रीय राज्य मंत्री
शिक्षा तथा युवक सेवा
नई दिल्ली

43. श्री एच० नरसिंहैय्या
प्रधानाचार्य
नेशनल कॉलेज
बँगलौर

44. श्री आई० जे० पटेल
'सम्पारन'
गुलबाई टेकरस
अहमदाबाद

45. श्री एस० पी० वर्मा
सार्वजनिक शिक्षा निदेशक
मध्यप्रदेश
भोपाल

46. प्रो० रईस अहमद
अध्यक्ष, भौतिक विज्ञान विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
अलीगढ़

47. श्री डी० बी० फटंगारे
थोम्बर बिल्डिग
कोपर गाँव
जिला अहमदनगर
महाराष्ट्र

48. श्री एस० बी० चित्तीबाबू
स्कूल शिक्षा निदेशक
तमिलनाडु
मद्रास

49. कुमारी के० पसरिचा
प्रधानाचार्य
कन्या महाविद्यालय
जालन्धर शहर

50. डॉ० डी० एन० गोखले
12, फरगूसन कालेज कैम्पस
पूना

51. डा० के० कुरुविला जैकब
प्रधानाचार्य
दि कैथेड्रल एंड जॉन कौनन स्कूल
6 अउट्रम रोड, बम्बई

52. श्री एम० अब्दुल गनी साहब
429 पी० आर० स्ट्रीट
मुस्लिमपुर
विनियाम बादीं
जिला उत्तरी अरकाड (त० ना०)

53. श्री के० सुकुमारन
शिक्षा अधिकारी
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
नेहरू हाउस
बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली
सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली **(सचिव)**

ख. कार्यकारी समिति

1. डॉ० वी० के० आर० वी० राव
केन्द्रीय मंत्री, शिक्षा तथा
युवक सेवा
(अध्यक्ष)

श्री सिद्धार्थ शंकर राय
केन्द्रीय मंत्री, शिक्षा तथा
समाज कल्याण
(18-3-71 से) **(अध्यक्ष)**

2. प्रो० एस० वी० सी० अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली
(उपाध्यक्ष)

3. डॉ० दौलतसिंह कोठारी
अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान
आयोग, नई दिल्ली

4. प्रो० एम० वी० माथुर
निदेशक
एशियाई शैक्षिक आयोजना तथा
प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

5. प्रो० शान्ति नारायण
कालेजों के शाखाध्यक्ष
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

6. श्री एस० उदापाचार
मुख्य अध्यापक
नरुपतुंग बहुद्देश्यीय उच्चतर
माध्यमिक विद्यालय
हैदराबाद

7. श्री डी० एस० बाजपेयी
प्रधानाचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, आई० आई० टी०
कानपुर

8. संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिपद्
नई दिल्ली

9. डॉ० आर० एच० दवे
पाठ्यपुस्तक विभाग के
अध्यक्ष
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिपद्
नई दिल्ली

10. डॉ० एम० सी० पंत
विज्ञान शिक्षा विभाग के
अध्यक्ष
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिपद्
नई दिल्ली

11. श्री पी० डी० शर्मा
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भुवनेश्वर

12. श्री टी० आर० जयरामन्
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
नई दिल्ली

13. श्री ओ० पी० मोहला
वित्तीय सलाहकार
शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
नई दिल्ली

14. सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिपद्
नई दिल्ली (**मंत्री**)

ग. वित्त समिति

1. श्री टी० आर० जयरामन्
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
नई दिल्ली
(**अध्यक्ष**)

2. प्रो० एस० वी० सी० अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

3. प्रो॰ एम॰ वी॰ माथुर
निदेशक
एशियाई शैक्षिक आयोजना और
प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली

4. प्रो॰ शान्ति नारायण
कॉलेज के डीन
दिल्ली विश्वविद्यालय

5. श्री ओ॰ पी॰ मोहला
वित्तीय सलाहकार (परिषद्)
शिक्षा तथा युवा सेवा मंत्रालय
नई दिल्ली

6. श्री एस॰ ए॰ आबेदीन
सचिव, रा॰ शै॰ अ॰ प्र॰ प॰

घ. कार्यक्रम सलाहकार समिति

1. निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (**अध्यक्ष**)

2. संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (**उपाध्यक्ष**)

3. प्रो॰ एच॰ बी॰ मजूमदार
प्रधानाचार्य
विश्व भारती विश्वविद्यालय
डाक घर, शान्ति निकेतन

4. डा॰ डी॰ एम॰ देसाई
डीन
शिक्षा तथा मनोविज्ञान संकाय
एम॰एस॰ यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा
बड़ौदा

5. श्रीमती एलिसाबा जखारिया
अध्यक्ष शिक्षा विभाग
केरल विश्वविद्यालय
थाईकॉड, त्रिवेन्द्रम

6. प्रो॰ बी॰ आर॰ तनेजा
डीन तथा अध्यक्ष
शिक्षा विभाग
पंजाब विश्वविद्यालय
चंडीगढ़

7. प्रो॰ सी॰ एस॰ बेन्नूर
डीन तथा प्रधानाचार्य
विश्वविद्यालय शिक्षा कॉलेज
कर्नाटक विश्वविद्यालय
धारवाड़

राज्य शिक्षा संस्थानों के निदेशक

8. डॉ॰ (कुमारी) ए॰ नंदा
निदेशक
राज्य शिक्षा संस्थान
दिल्ली

9. डॉ॰ एन॰ के॰ उपासनी
निदेशक
राज्य शिक्षा संस्थान
एम॰ एस॰ सदाशिव पीठ
कुमठेकर रोड
पूना

10. श्री एम० घोष
    प्रधानाचार्य
    राज्य शिक्षा संस्थान
    बाणीपुर
    डाकघर बेंगाची
    जिला, 24 परगना

11. डॉ० जी० गोपालकृष्णन
    निदेशक
    राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    6-2-688 चितलबस्ती
    हैदराबाद

12. बेगम एम० कुरेशी
    निदेशक
    राज्य शिक्षा संस्थान
    श्रीनगर

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के कर्मचारी सदस्य

13. श्री एस० एल० अहलूवालिया
    अध्यक्ष
    शिक्षण साधन विभाग
    नई दिल्ली

14. डॉ० ए० एन० बोस
    प्रोफेसर तथा अध्यक्ष,
    विज्ञान विभाग
    क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
    अजमेर

15. कु० ए० चारी
    प्रधानाचार्य
    क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
    मैसूर
    (केन्द्रीय विद्यालय के संगठन आयुक्त के रूप में कार्यभार सँभाला नई दिल्ली नवंबर, 1970)

16. डॉ० आर० सी० दास
    प्रधानाचार्य
    क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
    अजमेर

17. डॉ० आर० एच० दवे
    अध्यक्ष
    पाठ्यपुस्तक विभाग
    नई दिल्ली

18. श्री एम० डी० देवदासन
    प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
    भोपाल

19. डॉ० (कुमारी) एस० दत्त
    रीडर
    केन्द्रीय शिक्षा संस्थान,
    दिल्ली

20. श्री सी० वी० गोविन्द राव
    प्रोफेसर तथा अध्यक्ष
    टेक्नालौजी विभाग
    क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
    मैसूर (प्रधानाचार्य आर० सी० ई० मैसूर, नवम्बर, 1970)

21. डॉ० (कुमारी) ई० मार
    रीडर
    अध्यापक शिक्षा विभाग
    नई दिल्ली

22. डॉ० (श्रीमती) पेरीन एच० मेहता
    प्रभारी अध्यक्ष
    शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा आधार विभाग
    नई दिल्ली

23. श्री टी० एम० मेहता
    इंचार्ज
    सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी
    विभाग, नई दिल्ली

24. डॉ० आर० जी० मिश्र
    इंचार्ज
    आधार सामग्री प्रक्रिया तथा शैक्षिक
    सर्वेक्षण एकक
    नई दिल्ली

25. डॉ० एम० सी० पन्त
    अध्यक्ष
    विज्ञान शिक्षा विभाग
    नई दिल्ली

26. श्री डी० एस० रावत
    इंचार्ज
    पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक
    शिक्षा विभाग
    नई दिल्ली

27. प्रो० पी० के० राय
    प्रधानाचार्य
    केन्द्रीय शिक्षा संस्थान
    दिल्ली

28. श्री एन० के० सान्याल
    क्षेत्रीय सलाहकार
    विज्ञान शिक्षा विभाग
    नई दिल्ली

29. डॉ० ए० एन० शर्मा
    रीडर
    शैक्षिक मनोविज्ञान तथा
    शिक्षा आधार विभाग
    नई दिल्ली

30. श्री पी० डी० शर्मा
    प्रधानाचार्य
    क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
    भुवनेश्वर

31. श्री शंकर नारायण
    रीडर
    शिक्षण साधन विभाग
    नई दिल्ली

32. डॉ० जी० एस० श्रीकंतैया
    प्रो० तथा अध्यक्ष
    विज्ञान विभाग
    क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
    भुवनेश्वर

33. प्रो० जे० के० शुक्ल
    प्रधानाचार्य
    क्षेत्रीय शिक्षा विभाग
    भोपाल

ङ. प्रकाशन सलाहकार समिति

1. प्रो० ए० मुजीब
   उप-कुलपति
   जामिया मिल्लिया इस्लामिया
   नई दिल्ली
   (अध्यक्ष)

2. श्री एन० के० सुन्दरम
   सहायक शिक्षा सलाहकार
   प्रकाशन एकक
   शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
   नई दिल्ली

3. कुमारी० ए० चारी
   आयुक्त
   केन्द्रीय विद्यालय संगठन
   नेहरू हाउस
   बहादुर शाह जफ़र मार्ग
   नई दिल्ली

4. श्री यू० आर० सोयलकर
   निदेशक
   पाठ्यपुस्तकें निकालने और पाठ्य-
   क्रम का महाराष्ट्र राज्य ब्यूरो
   'सुरेख', विश्वविद्यालय मार्ग
   पूना

5. श्री एम० पी० एन० शर्मा
   प्रबन्ध संचालक
   बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक
   कार्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड
   व्हाइट हाउस
   बुद्ध मार्ग, पटना

6. श्री एन० नारायण राव
   निदेशक
   आंध्र प्रदेश पाठ्यपुस्तक प्रेस
   मिन्ट कम्पाउंड
   हैदराबाद

7. श्री ए० ई० टी० बैरो
   सचिव
   भारतीय स्कूलों की प्रमाण-पत्र
   परीक्षा की परिषद्
   बी-27, निजामउद्दीन पूर्वी
   नई दिल्ली

8. श्री डी० आर० मनकेकर
   39 भारती नगर
   नई दिल्ली

9. बेगम एम० कुरेशी
   निदेशक
   राज्य शिक्षा संस्थान
   श्रीनगर

10. प्रो० सी० एस० बेन्नूर
    डीन तथा प्रधानाचार्य
    विश्वविद्यालय शिक्षा कालेज
    कर्नाटक विश्वविद्यालय
    धारवाड़

11. श्री टी० एस० सदाशिवन
    अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग
    मद्रास विश्वविद्यालय
    मद्रास

12. श्री टी० वी० थिमी गोडवा
    पाठ्यपुस्तक निदेशक
    30/30—A कुमार पार्क पश्चिम
    बँगलौर

13. श्री के०एल०बोडिया
    अध्यक्ष
    माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
    राजस्थान
    अजमेर

14. श्री एस० एस० सोधी
    अध्यक्ष
    पंजाब स्कूल शिक्षा मंडल
    चंडीगढ़

15. श्री डी० एस० वाजपेयी
    प्रधानाचार्य
    केन्द्रीय विद्यालय
    भारतीय टैक्नॉलाजी संस्थान
    कानपुर

16. श्री डी० राघवन
    अध्यक्ष
    प्रकाशन एकक
    राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
    प्रशिक्षण परिषद्
    नई दिल्ली (सदस्य-सचिव)

च. विज्ञान सलाहकार समिति

1. डॉ० डी०एस० कोठारी
   अध्यक्ष
   विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
   नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. डॉ० आर० सी० महरोत्रा
   प्रोफेसर और अध्यक्ष
   रसायन शास्त्र विभाग
   राजस्थान विश्वविद्यालय
   जयपुर

3. डॉ० ए० एम० घोष
   प्रोफेसर
   बोस संस्थान
   93/1 आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र रोड
   कलकत्ता

4. श्री आर०के० रथ
   सचिव, उड़ीसा सरकार
   शिक्षा विभाग
   भुवनेश्वर

5. प्रो० बी० वैंकटरामन
   टाटा इंस्टीच्यूट आफ फंडामेंटल
   रिसर्च
   होमी भाभा रोड
   बम्बई

6. डॉ० ए० आर० वसुदेव मूर्ति
   निरिन्द्री और खनिज रसायन
   विज्ञान के प्रोफेसर
   भारतीय विज्ञान संस्थान
   बैंगलौर-12

7. डॉ० रईस अहमद
   भौतिकी के प्रोफेसर
   भौतिकी विज्ञान विभाग
   अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय
   अलीगढ़

8. श्री बी० एम० जौहरी
   वनस्पति विज्ञान विभाग
   दिल्ली विश्वविद्यालय
   दिल्ली

9. श्री एस० उदापाचार
   मुख्य अध्यापक
   नरूपतुंग बहुद्देशीय उच्चतर
   माध्यमिक विद्यालय
   हैदराबाद

10. प्रो० बी० आर० तनेजा
    डीन तथा अध्यक्ष
    शिक्षा विभाग
    पंजाब विश्वविद्यालय
    चंडीगढ़

11. श्री एम० घोष
    प्रधानाचार्य
    राज्य शिक्षा संस्थान
    वाणीपुर
    डाकघर बैगाची
    जिला 24 परगना

12. डॉ० आर० सी० दास
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा कालेज
अजमेर

13. डा० एम० सी० पन्त
प्रधान
शिक्षा विज्ञान विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली

छ. निर्माण तथा कार्य समिति

1. प्रो० एस० वी० सी० अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. श्री बी० रामा राव
निर्माण सर्वेक्षक अधीक्षक (I)
केन्द्रीय लोक-निर्माण विभाग
निर्माण भवन
नई दिल्ली

3. श्री वी० आर० गम्भीर
सहायक वित्तीय सलाहकार
वित्त मंत्रालय (कार्य)
निर्माण भवन
नई दिल्ली

4. श्री जे० एम० बैंजामिन
ज्येष्ठ वास्तुक (I)
केन्द्रीय लोक-निर्माण विभाग
(परिषद् का परामर्शी वास्तुक)
निर्माण भवन
नई दिल्ली

5. श्री ओ० पी० मोहला
वित्रीय सलाहकार
(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्)
शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

6. श्री टी० आर० जयरामन
संयुक्त सचिव
शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली

7. श्री एस० सी० वार्ष्णेय
उप-प्रधान प्रबंधक
दिल्ली बिजली पूर्ति निगम
राजघाट, बिजली घर
नई दिल्ली

8. श्री प्रभाकर स्वरूप
कार्यपालक इंजीनियर (भवन)
दिल्ली नगर-पालिका निगम
टाउन हाल
नई दिल्ली

9. प्रो० शान्ति नारायण
कॉलेज के डीन
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

10. संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (सदस्य सचिव)

11. श्री एस० ए० आबेदीन
सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्,
नई दिल्ली

ज. स्थापना समिति

1. डॉ० डी० एस० कोठारी
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नई दिल्ली (अध्यक्ष)

2. प्रो० एस० वी० सी० अय्या
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली (उपाध्यक्ष)

3. संयुक्त निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

4. श्री टी० आर० जयरामन
संयुक्त निदेशक
शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
नई दिल्ली

5. श्री ओं० पी० मोहला
वित्तीय सलाहकार (परिषद्)
शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय
नई दिल्ली

6. प्रो० शान्ति नारायण
कालेज के डीन
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

7. प्रो० एस० पी० लूथरा
भारतीय टेक्नालाजी संस्थान
नई दिल्ली

8. डॉ० बी० एन० गांगुली
7-बी० हौज खास इनक्लेव
ईश्वर भवन
नई दिल्ली

9. डॉ० बी० आर० सेशाचार
प्राणि शास्त्र विभाग के मुख्य
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

10. श्री एस० ए० आबेदीन
सचिव
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्
नई दिल्ली

परिशिष्ट 2

चौथी पंचवर्षीय योजना के लिए निर्धारित रकम

	विभाग/योजना	निर्धारित रकम (लाख रुपयों में)
1.	विज्ञान शिक्षा विभाग	30.00
2.	केन्द्रीय विज्ञान कर्मशाला	23.00
3.	राष्ट्रीय विज्ञान-प्रतिभा खोज योजना	60.00
4.	विज्ञान में ग्रीष्मकालीन संस्थान	90.00
5.	शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा आधार विभाग	14.00
6.	पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा विभाग	7.00
7.	सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग	10.00
8.	अध्यापन सहायता विभाग	5.00
9.	पाठ्यपुस्तक विभाग	10.00
10.	आधार-सामग्री प्रक्रिया तथा शैक्षिक सर्वेक्षण एकक	3.00
11.	अध्यापक शिक्षा विभाग	3.00
12.	भवन-निर्माण सहित सामान्य कार्यक्रम तथा सेवाएँ	80.00
13.	सहकारिता अनुसंधान तथा विकास कार्यक्रम	42.00
14.	विस्तार सेवा केन्द्र तथा एकक	90.00
15.	क्षेत्रीय शिक्षा कालेज	130.00
16.	केन्द्रीय शिक्षा संस्थान	5.00
17.	प्रकाशन एकक	65.00
18.	प्रौढ़ शिक्षा विभाग	10.00
19.	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् प्रधान कार्यालय	58.00
20.	राष्ट्रीय विज्ञान-शिक्षा परिषद्	15.00
	जोड़	750.00

नोट— अनुवर्ती पृष्ठों में योजनाओं के वार्षिक चरणों के विवरण-पत्र देखने की कृपा करें।

योजनाओं के वार्षिक चरण

1. विज्ञान शिक्षा विभाग

	1969-74	*69-70*	*70-71*	*71-72*	*72-73*	*73-74*
1. पाठ्यक्रम विकास						
(क) प्रारंभिक विज्ञान परियोजना (यूनीसेफ)	0.50	0.08	0.09	0.10	0.11	0.12
(ख) अध्ययन समूह परियोजना	18.75	6.00	6.00	2.25	2.25	2.25
(ग) माध्यमिक स्तर पर विज्ञान तथा गणित के अध्ययन पर प्रयोगात्मक परियोजना	3.75	---	0.75	1.00	1.00	1.00
2. सहायक पाठ्यक्रम परियोजनाएँ फिल्म स्ट्रिप, फिल्म, रूपांकन, नए वैज्ञानिक प्रयोग उपकरण तथा उपस्कर उत्पादन	कर्मचारियों की लागत उपर्युक्त 1 (ग) में शामिल है।					
3. राज्य नेतृत्व विकास-प्रशिक्षण नेतृत्व पाठ्यक्रम, संशोधित सेवा-पूर्व, सेवाकालीन प्रशिक्षण, एस० आई० एस० तथा एस० आई० ई० कर्मचारी वर्ग के लिए अनुकूल कार्यक्रम	3.70	0.21	0.45	0.99	1.01	1.04
4. **विस्तार तथा परामर्शी कार्यक्रम** राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् पाठ्यक्रम संबंधी सामग्री का विकास पत्रिकाओं और अनुपूरक पाठ्य सामग्री का प्रकाशन	2.80	0.10	0.71	0.65	0.66	0.68
5. प्रयोगशालाओं के लिए उपकरण	0.50	0.10	0.10	0.10	0.10	0.10
जोड़	30.00	6.49	8.10	5.09	5.13	5.19

2. केन्द्रीय विज्ञान कर्मशाला

	1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
1. रूपांकन तथा विकास, प्रकृत रूप विज्ञान उपकरण तथा सीमित थोक उत्पादन (नए कर्मचारियों, रख-रखाव आदि के लिए व्यवस्था सहित)	18.75	1.00	3.00	4.00	4.50	5.25
2. उपकरण	4.25	1.00	2.00	1.00	0.50	0.75
जोड़	23.00	2.00	5.00	5.00	5.00	6.00

3. राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज

	1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
1. राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज						
(i) छात्रवृत्ति पुस्तक पुरस्कार डाक्टरी छात्रों का शिक्षा शुल्क और साथ ही प्रशासन के लिए व्यवस्था	34.36	2.30	4.00	6.00	10.00	12.06
(ii) सहयोगी केन्द्र	6.00	1.00	1.25	1.25	1.25	1.25
2. गणित महत्त्वपूर्ण छात्रवृत्ति, पुस्तक पुरस्कार, शिक्षा शुल्क, ग्रीष्मकालीन स्कूल गाइड, साक्षात्कार, आदि	10.64	—	0.40	1.50	3.50	5.24
3. प्रतिभा-संपन्न विज्ञान अध्यापन योजना (प्रति समूह 75)	9.00	—	—	—	4.00	5.00
जोड़	60.00	3.30	5.65	8.75	18.75	23.55

4. विज्ञान में ग्रीष्मकालीन संस्थान

	1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
विज्ञान में ग्रीष्मकालीन संस्थान	90.00	16.00	20.00	18.00	18.00	18.00
जोड़	90.00	16.00	20.00	18.00	18.00	18.00

5. शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा आधार विभाग

		1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
1.	चालू अनुसंधान परियोजनाओं तथा शैक्षिक मनोविज्ञान में वर्तमान कर्मचारी वर्ग द्वारा हाथ में ली जाने वाली नई परियोजनाओं पर आगे का कार्य	2.22	0.32	0.50	0.50	0.50	0.40
2.	विस्तार कार्यक्रम	1.20	—	0.30	0.30	0.30	0.30
3.	शैक्षिक मनोविज्ञान में अनुसंधान की आवश्यकताओं का निश्चय करने के लिए विचार गोष्ठी	0.24	—	0.12	—	—	0.12
4.	मार्ग-दर्शन के क्षेत्र में कार्य का विकास	2.00	—	0.30	0.45	0.55	0.70
5.	शिक्षण प्रक्रिया में अनुसंधान तथा उसका विकास	2.90	0.90	0.50	0.50	0.50	0.50
6.	अभिप्रेरण और समूह-प्रक्रिया के क्षेत्र में कार्य का विकास	1.23	0.43	0.20	0.20	0.20	0.20
7.	विकासशील प्रतिमान परियोजना, 2½—5 वर्ष	0.67	0.58	0.09	—	—	—
8.	मूल्यांकन (मुख्यतः निदान संबंधी परीक्षाओं, वस्तु सूचियों, निर्धारित-मानों) के उपायों का विकास	1.00	—	0.25	0.25	0.25	0.25
9.	शिक्षा आधारों में क्षेत्रीय जाँच-पड़तालें	0.50	—	0.10	0.14	0.14	0.12
10.	प्रतिभा के क्षेत्र में कार्य का विकास	1.00	—	0.20	0.23	0.27	0.30
11.	पढ़ाई के क्षेत्र में कार्य का विकास	1.04	—	0.20	0.25	0.28	0.31
	जोड़	14.00	2.23	2.76	2.82	2.99	3.20

6. पूर्व प्राथमिक तथा प्राथमिक शिक्षा विभाग

	1969-74	*69-70*	*70-71*	*71-72*	*72-73*	*73-74*
1. सर्वतोमुखी पाठ्यक्रम—पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री तथा अध्यापन तकनीकों का जिनमें कला, शिल्प तथा कार्य अनुभव शामिल है, का विकास	1.81	0.52	0.35	0.34	0.50	0.10
2. मूल्यांकन कार्यक्रम	0.45	0.03	0.15	0.19	—	0.08
3. प्राथमिक स्तर पर क्षय तथा गतिहीनता कम करना	1.81	0.14	0.49	0.40	0.43	0.35
4. प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक आयोजना तथा पर्यवेक्षण	0.32	0.03	0.08	0.07	0.10	0.04
5. निरीक्षण तथा परिवेक्षण	0.07	0.07	—	—	—	—
6. भाषा कार्यक्रम-पठन सुधार	0.80	0.06	0.27	0.27	0.10	0.10
7. विस्तार सेवा कार्यक्रम	0.94	—	0.37	0.21	0.21	0.15
8. प्रारम्भिक शिक्षा पर विचार-गोष्ठियाँ	0.80	—	0.20	0.20	0.20	0.20
जोड़	7.00	0.85	1.91	1.68	1.54	1.02

7. सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग

	1969-74	*69-70*	*70-71*	*71-72*	*72-73*	*73-74*
1. सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम	4.70	0.65	1.05	1.00	1.00	1.00
2. भाषा कार्यक्रम	3.00	0.71	0.49	0.60	0.60	0.60
3. सर्वतोमुखी पाठ्यक्रम कार्यक्रम	1.50	0.74	0.55	0.15	0.06	—
4. भाषा अनुसंधान कार्यक्रम	0.80	0.23	0.24	0.13	0.10	0.10
जोड़	10.00	2.33	2.33	1.88	1.76	1.70

8. अध्यापन सहायता विभाग

	1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
1. फिल्म निर्माण एकक	0.47	—	0.17	0.10	0.10	0.10
2. ए-वी० सह-निर्माण योजना	0.84	—	0.36	0.16	0.16	0.16
3. सामान्य विस्तार तथा तकनीकी कार्यक्रम	0.53	0.25	0.07	0.07	0.07	0.07
4. केन्द्रीय फिल्म लायब्रेरी तथा विस्तार	2.21	—	0.73	0.50	0.50	0.48
5. सहायता के प्रभाव और उपयोगिता में अनुसंधान	0.20	—	0.05	0.05	0.05	0.05
6. अतिरिक्त कर्मचारी	0.75	—	0.15	0.18	0.20	0.22
जोड़	5.00	0.25	1.53	1.06	1.08	1.08

9. पाठ्यपुस्तक विभाग

	1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
1. पाठ्यपुस्तकों, अनुसंधान तथा अध्ययनों का मूल्यांकन	5.60	0.86	1.50	0.98	1.13	1.13
2. सामग्री का विकास तथा प्रसार	1.24	0.13	0.51	0.25	0.27	0.08
(क) पाठ्यपुस्तकें						
(ख) परीक्षा सुधार						
3. प्रशिक्षण विस्तार तथा परामर्शी सेवाएँ	2.08	0.18	0.70	0.40	0.40	0.40
(क) पाठ्यपुस्तकें						
(ख) परीक्षा सुधार						
4. समन्वय तथा निकास-ग्रह संबंधी कार्य	0.34	0.02	0.08	0.08	0.08	0.08
5. पाठ्य सामग्री के राष्ट्रीय पूल का रख-रखाव	0.65	0.25	0.10	0.10	0.10	0.10
6. परीक्षा सुधार में अनुसंधान तथा अध्ययन	0.09	—	0.01	0.02	0.03	0.03
जोड़	10.00	1.44	2.90	1.83	2.01	1.82

10. आधार सामग्री प्रक्रिया तथा शैक्षिक सर्वेक्षण एकक

	1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
1. शैक्षिक सर्वेक्षणों का आयोजन	2.50	0.50	0.50	0.50	0.50	0.50
2. आधार सामग्री प्रक्रिया कार्यक्रम	0.50	0.10	0.10	0.10	0.10	0.10
जोड़	3.00	0.60	0.60	0.60	0.60	0.60

11. अध्यापक शिक्षा विभाग

	1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
1. प्रवेश कार्यविधियों में सुधार	0.07	—	0.04	0.02	0.01	—
2. मूल्यांकन पद्धतियों में सुधार	0.25	—	0.14	0.11	—	—
3. अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों का क्रम-निर्धारण	0.02	—	0.01	0.01	—	—
4. अध्यापक शिक्षा में सुधार तथा उसका विकास	0.50	—	—	0.25	—	0.25
5. व्यापक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम	0.45	—	—	0.15	0.15	0.15
6. अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में अनुसंधान की प्रोन्नति	0.50	0.05	0.10	0.10	0.10	0.10
7. अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में पद्धतियों में प्रयोगों तथा प्रवर्तनों को प्रोत्साहन	0.21	—	0.06	0.06	0.06	0.03
8. प्रारंभिक अध्यापकों के लिए पत्राचार पाठ्यक्रम	0.10	0.10	—	—	—	—
9. सम्मेलन/विचार गोष्ठियाँ आदि	0.90	—	0.30	0.20	0.20	0.20
जोड़	3.00	0.15	0.65	0.90	0.52	0.78

12. भवन निर्माण सहित सामान्य कार्यक्रम तथा सेवाएँ

	1969-74	*69-70*	*70-71*	*71-72*	*72-73*	*73-74*
1. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अहाते में भवन निर्माण	52.00	11.00	15.00	10.00	8.00	8.00
2. अनुसंधान वृत्तियाँ	3.00	0.30	0.70	0.70	0.70	0.60
3. ग्रीष्मकालीन संस्थान (राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान विभागों द्वारा आयोजित)	15.00	2.00	3.15	3.25	3.25	3.35
4. पुस्तकालय प्रलेख-पोषण तथा सूचना सेवाएँ	10.00	2.00	2.00	2.00	2.00	2.00
जोड़	80.00	15.30	20.85	15.95	13.95	13.95

13. सहकारिता अनुसंधान तथा विकास कार्यक्रम

	1969-74	*69-70*	*70-71*	*71-72*	*72-73*	*73-74*
1. अनुदान परियोजना के लिए सहायतार्थ अनुदान	15.00	3.00	3.00	3.00	3.00	3.00
2. स्कूल में प्रयोगात्मक परियोजनाएँ	5.00	1.00	1.00	1.00	1.00	1.00
3. विकासशील प्रतिमान परि-योजना (5½—11 वर्ष)	4·65	0.40	1.50	1.50	1.25	—
4. सहकारिता परीक्षण विकास	4.70	1.75	1.75	0.40	0.40	0.40
5. अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक उपलब्धि परियोजना	2.44	0.50	1.94	—	—	—
6. द्वितीय तथा तृतीय भाषाओं के रूप में आधुनिक भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिए पद्धतियों और सामग्री के विकास की परियोजना	6.10	2.10	2.00	2.00	—	—
7. किशोरावस्था में सहकारी अनुसंधान	1.10	—	0.30	0.40	0.40	—
8. भाषाओं, मूल्यांकन, मार्ग-दर्शन तथा अन्य क्षेत्रों में अनुसंधान	3.01	—	—	0.90	1.10	1.01
जोड़	42.00	8.75	11.49	9.20	7.15	5.41

14. क्षेत्रीय शिक्षा कालेज

		1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
1.	छात्रवृत्ति	50.20	10.20	10.00	10.00	10.00	10.00
2.	कार्यक्रम	37.80	6.50	7.30	8.00	8.00	8.00
3.	भवन निर्माण	32.00	10.00	5.00	5.00	6.00	6.00
4.	उपकरण तथा फर्नीचर	10.00	2.00	2.00	2.00	2.00	2.00
	जोड़	130.00	28.70	24.30	25.00	26.00	26.00

15. केन्द्रीय शिक्षा संस्थान

		1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
1.	शिक्षा में एम० ए०	2.64	—	—	—	1.00	1.64
2.	विशेष शिक्षा एकक	1.01	—	—	—	0.61	0.40
3.	पीएच० डी० कार्यक्रमों को समृद्ध बनाना	0.16	—	—	—	0.08	0.08
4.	कनिष्ट वृत्तियाँ प्रदान करना	0.33	0.03	0.04	0.06	0.10	0.10
5.	भाषा प्रयोगशाला	0.50	—	—	—	0.50	—
6.	केन्द्रीय शिक्षा संस्थान के भवन का विस्तार	0.36	—	—	—	0.36	—
	जोड़	5.00	0.03	0.04	0.06	2.65	2.22

16. प्रकाशन एकक

	1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
शैक्षिक साहित्य का मुद्रण तथा प्रकाशन	65.00	16.25	18.25	13.75	8.50	8.25
जोड़	65.00	16.25	18.25	13-75	8.50	8.25

17. प्रौढ़ शिक्षा विभाग

	1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
पोलिवेलेन्ट केन्द्रों को सहायतार्थ अनुदान	10.00	1.75	1.75	2.50	2.00	2.00
जोड़	10.00	1.75	1.75	2.50	2.00	2.00

18. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् प्रधान कार्यालय

	1969-74	79-70	70-71	71-72	72-73	73-74
1. विदेशी माल पर लगने वाला सीमा शुल्क तथा आकस्मिक खर्च	2.00	—	0.25	0.50	0.65	0.60
2. व्यावसायिक संगठनों को अनुदान	3.00	0.50	0.90	0.50	0.55	0.55
3. अध्ययन समूह की बैठक, राज्य योजना का मूल्यांकन	2.00	0.50	0.20	0.55	0.40	0.35
4. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के अधिकारियों के विदेश में दौरे	1.00	—	0.15	0.50	0.20	0.15
5. उपकरण	3.00	1.00	0.50	1.50	—	—
6. जनसंख्या शिक्षा	3.00	—	1.00	1.00	0.50	0.50
7. भाषा प्रयोगशालाएँ	6.00	—	1.00	2.00	1.50	1.50
8. क्षेत्रीय फिल्म लाइब्रेरियाँ	8.00	—	1.40	2.40	2.20	2.00
9. राज्यों में क्षेत्र अधिकारी	20.00	—	5.00	6.00	4.00	4.50
10. पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विशेष कार्यक्रम	5.00	—	1.00	1.25	1.25	1.50
11. सम्मेलन कथा अन्य विविध योजनाएँ	5.00	—	1.60	1.00	1.20	1.20
जोड़	58.00	2.00	13.00	17.20	12.95	12.85

19. राष्ट्रीय विज्ञान-शिक्षा परिषद्

	1969-74	69-70	70-71	71-72	72-73	73-74
राष्ट्रीय विज्ञान-शिक्षा परिषद्	15.00	2.50	12.50	—	—	—
जोड़	15.00	2.50	12.50	—	—	—

परिशिष्ट 3

वर्ष 1970-71 के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की लेखा विवरणी

समेकित प्राप्तियाँ तथा भुगतान खाता

प्राप्तियां		भुगतान	
अल्पशेष	18,18,468.41	**योजनेतर**	
सरकार से सहायतार्थ अनुदान		(क) वेतन तथा भत्तों, कार्यक्रमों	
(क) रा० शै० अनु० प्रशि० परि०		आदि पर व्यय	2,03,31,288.63
को सामान्य अनुदान	3,43,90,000.00	(ख) ऋण तथा पेशगियाँ	6,26,967.91
(ख) मार्गदर्शी परियोजनाएँ	7,70,000.00	**योजना**	1,62,58,340.03
(ग) विशेष कार्यक्रम	6,76,150.00	1969-70 के लिए सरकार को	
(घ) जनजातीय शिक्षा		लौटाई बिन-खर्ची रक़म	11,74,466.87
एकक को विशेष अनुदान	1,01,393.00	सरकार को विशेष अनुदान	
अन्य स्रोतों से अंशदान	3,851.94	की बिन-खर्ची लौटाई रक़म	86,696.21
प्रकाशन आदि की बिक्री	19,62,393.36	जनजातीय शिक्षा एकक	70,798.90
भविष्य निधियाँ	10,86,173.94		
अन्य विविध प्राप्तियाँ		जमा रकमें और पेशगियाँ	14,56,041.55
तथा वसूलियाँ	21,90,867.55	इतिशेष	29,94,698.10
जोड	4,29,99,298.20	**जोड़**	4,29,99,298.20

परिशिष्ट 4

पाठ्यक्रम विकास

वर्ष 1969-70 में पाठ्यक्रम विकास क्षेत्र में की गई प्रगति का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है।

1. विज्ञान और गणित

1.01. **प्राथमिक स्कूल स्तर पर विज्ञान** : विज्ञान में स्कूल स्तर के पाठ्यक्रम विकास का लक्ष्य बच्चों के क्रियात्मक सहयोग से विज्ञान शिक्षण को सुधारना है और इस प्रकार 'उत्पादन' की अपेक्षा विज्ञान की 'प्रक्रिया' पर ज़ोर दिया है। प्रतिवेदन वर्ष में कक्षा VI के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक और इस से संबंधित अध्यापक दर्शिका हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में तैयार की गई और छपने के लिए भेज दी गई। यह पाठ्यपुस्तक वर्ष 1968-69 में परिषद् द्वारा विकसित किए गए प्राथमिक विज्ञान पाठ्यक्रम पर आधारित है यह पाठ्यपुस्तकें जो नए पाठ्यक्रम के आधार पर, विकसित की गई हैं, इनको 'यूनेस्को-यूनीसेफ सहायता प्राप्त अभियान परियोजना के अंतर्गत सभी राज्यों द्वारा उपयोग में लाया जाएगा। इसके अतिरिक्त प्राथमिक विज्ञान के किट में प्रयोग करने के लिए कुछ अतिरिक्त विज्ञान उपकरणों को विकसित किया गया। अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम की सहायता के लिए और अध्यापकों को प्राथमिक विज्ञान शिक्षण के नए प्रयास दिखाने के लिए 40 रंगीन ट्रांसपेरैंसीज़ अनुदेशन सामग्री सहित विकसित की गई। 16 एम० एम० की फिल्म 'साइन्स इज़ डूइंग' भी तैयार की गई जो प्राथमिक विज्ञान शिक्षण के नए प्रयास की व्याख्या करती है। प्राथमिक विज्ञान किट की कुछ वस्तुओं के रूपांकन में राष्ट्रीय लघु उद्योग विभाग के परामर्श से और सुधार किया गया।

1.02. **माध्यमिक विज्ञान शिक्षा परियोजना (यूनेस्को-सहायता प्राप्त)** : गत वर्ष मिडिल स्कूल स्तर के लिए पाठ्यक्रम और उससे संबंधित अनुदेशीय सामग्री को विकसित करने का कार्य इस परियोजना के अंतर्गत पूरा किया गया। 1970-71 वर्ष में सीनियर हाई स्कूल स्तर के 3 वर्षीय पाठ्यक्रम प्रारूप को तैयार किया गया और लम्बे परिचालन के लिए छापा गया। इस पाठ्यक्रम के आधार पर यूनेस्को से 10 विशेषज्ञों के दल के सहयोग से रसायन-विज्ञान, भौतिकी और जीव-विज्ञान के पाठ्यक्रमीय सामग्री प्रारूप तैयार किए गए। मिडिल स्कूल स्तर की सामग्री पर आधारित भौतिकी, रसायन-विज्ञान और जीव-विज्ञान पाठ्यक्रमीय-सामग्री के हिन्दी

संशोधित तथा अंग्रेजी रूपान्तर मिडिल स्तर के दूसरे वर्ष के लिए तैयार किए गए। तदनुरूप संशोधन अध्यापक दर्शिकाओं में किए गए। यह सामग्री राज्यों को भेजी गई।

पहले निम्नलिखित किटों के आदर्श रूपों को विकसित किया गया और भविष्य में सुधार करने के लिए उनकी जाँच की गई :

(i) 70 वस्तुओं से युक्त भौतिकी प्रदर्शन किट सं० II

(ii) 63 वस्तुओं और 67 रसायन पदार्थ से युक्त मिडिल स्कूल स्तर के लिए रसायन विज्ञान किट

(iii) 97 वस्तुओं से युक्त मिडिल स्कूल स्तर के दो वर्षों के लिए जीव-विज्ञान का किट सं० II

(iv) विद्यार्थियों के रसायन-विज्ञान किट (दो प्रकार के)

पिछले पाठ्यक्रम के अनुभव के आधार पर माध्यमिक स्कूल स्तर के गणित पाठ्यक्रम को संशोधित किया गया और इस संशोधित पाठ्यक्रम के आधार पर मिडिल स्कूल स्तर के पहले वर्ष के लिए सामग्री का पांडुलेख भी तैयार किया गया।

1.03. **विज्ञान शिक्षा (अध्ययन दल) के विकास के लिए व्यापक योजना** : 1967 में स्थापित 20 अध्ययन दलों में 18 (गणित और जीव-विज्ञान प्रत्येक में 4 और भौतिकी और रसायन-विज्ञान प्रत्येक में 5) प्रतिवेदन वर्ष में कार्य करते रहे। जीव-विज्ञान अध्ययन दल ने हाई स्कूल स्तर के तीन वर्षों के लिए पाठ्य-क्रमीय सामग्री तैयार की और उसकी अध्यापक दर्शिकाओं का पहला प्रारूप भी तैयार किया। इसके अतिरिक्त अध्ययन दल ने मेडिसिनल प्लांट्स, मेरीन प्लांटस, और दि माइक्रोब्स नामक पांडुलिपियों को छपने के लिए भेजा। मद्रास के रसायन विज्ञान अध्ययन दल को इस वर्ष उसके निदेशक की मृत्यु हो जाने के कारण बंद करना पड़ा। बाकी चार अध्ययन दलों ने सीनियर हाई स्कूल स्तर की अंतिम दो पाठ्यपुस्तकों (पुस्तक 5 और पुस्तक 6) को लिखने का कार्य पूरा कर लिया। इन्होंने हाई स्कूल स्तर के दूसरे वर्ष के लिए प्रयोगशाला पुस्तिका और अध्यापक दर्शिका (पुस्तक 5) को भी अंतिम रूप दिया। रसायन-विज्ञान दल ने हाई स्कूल स्तर के अंतिम वर्ष के लिए अध्यापक दर्शिका और एक प्रयोगशाला पुस्तिका की पांडुलिपियों के प्रारूप विकसित करने का कार्य भी किया। तीन भौतिकी अध्ययन दलों ने प्रतिवेदन वर्ष में मिडिल स्कूल स्तर के दूसरे और तीसरे वर्ष के लिए पाठ्यक्रमीय सामग्री विकसित की। मिडिल स्कूल स्तर की भौतिकी भाग II पाठ्य-पुस्तक छापी गई और राज्यों को भेजी गई और भाग III छपने के लिए भेजी गई। इसके अतिरिक्त इन तीन दलों ने सीनियर हाई स्कूल स्तर के लिए पाठ्यक्रम पांडु-लेख की रूपरेखा विकसित की और इस स्तर की पाठ्यक्रमीय सामग्री को लिखना

शुरू किया। मिडिल स्कूल स्तर के दूसरे वर्ष के लिए वस्तुओं से युक्त एक प्रदर्शन किट भी उन्होंने विकसित किया। भौतिकी अध्ययनदलों में से एक ने विद्यार्थियों की अभ्यास पुस्तिकाओं के रूप में एक भिन्न प्रकार की मिडिल स्कूल सामग्री विकसित की। इन अभ्यास पुस्तिकाओं के प्रथम भाग अखिल भारतीय विज्ञान शिक्षक संस्था ने छापे और राज्यों को भेजे। एक भौतिकी अध्ययन दल ने मिडिल स्कूल स्तर की सामग्री को तैयार करने का कार्य पूरा कर लिया। बीज गणित पाठ्यपुस्तक के भाग II और III पूर्ण किए गए और छपने के लिए भेजे गए। बीज गणित भाग I छापी गई और विभिन्न संस्थाओं को भेजी गई। रेखागणित पाठ्य-पुस्तकें (भाग 1, 2 और 3) भी इस वर्ष छापी गईं। इन पाठ्यपुस्तकों की अध्यापक दर्शिकाएँ भी तैयार की गईं और छपने के लिए भेजी गईं। हाई स्कूल स्तर के गणित पाठ्यक्रम का प्रारूप भी विकसित किया गया।

1.04 स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षण को दृढ़ करने के लिए यूनेस्को-यूनीसेफ-सहायता प्राप्त मार्गदर्शी परियोजना :

जुलाई 1969 में, स्कूलों में विज्ञान की शिक्षा को पुनर्संगठित तथा मजबूत बनाने के लिए 'यूनेस्को' 'यूनीसेफ' सहायता प्राप्त परियोजना की संचालन समिति ने विद्यालय वर्ष 1970 के शुरू से सभी राज्यों में अग्रगामी परियोजना चलाने का निश्चय किया। शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, योजना आयोग और 'यूनीसेफ' के प्रतिनिधियों से संयुक्त केन्द्रीय टीम ने बहुत से स्थानों का निरीक्षण किया और कार्यक्रम आरंभ करने के लिए प्रत्येक राज्य के साथ परिचालन की सहायक योजनाओं को अंतिम रूप दिया गया। इन निरीक्षणों के और बाद में परिषद् द्वारा राज्यों से सम्पर्क के फलस्वरूप, 13 राज्य और एक संघ क्षेत्र, 1970-71 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की प्राथमिक और मिडिल स्तरों की सामग्री को अपने चुने हुए लगभग 50 प्राथमिक और 30 मिडिल स्कूलों में कार्यान्वयन के लिए सहमत हो गये। इन राज्यों को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा विकसित सामग्री को अनुकूलन/ग्रहण और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार उनका प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद करना था। इन सामग्रियों के हिन्दी अनुवाद सीधे परिषद् द्वारा सारे हिन्दी भाषी राज्यों को भेज दिये गए। परिषद् ने राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थानों के मुख्य कार्मिकों के लिए अभिनव पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जिनको बाद में अपने-अपने राज्यों के प्रयोगात्मक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन करना था। नए विज्ञान पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए प्रयोगात्मक स्कूलों द्वारा उपयोग के लिए वैज्ञानिक उपकरणों के नमूना किटों को परिषद् ने दिया। इसके अतिरिक्त परिषद् ने परियोजना के अंतर्गत 79 मुख्य संस्थानों को यूनीसेफ उपकरण बाँटने की व्यवस्था की। इन मुख्य संस्थानों को दी जाने वाली खास किताबों की सूची तैयार की गई और यूनीसेफ को भेज दी गई। परिषद् ने भारत में यूनीसेफ द्वारा

नियुक्त क्षेत्रीय कर्मचारियों के लिये एक दिन का एक अभिनव कार्यक्रम, उनको इस परियोजना के विभिन्न पहलुओं और प्रयोग की जाने वाली सामग्रियों से अवगत कराने के लिए किया। यूनीसेफ के अनुरोध पर प्रतिवेदन वर्ष में एक मूल्यांकन दल, जिसमें लन्दन के समुद्रपार शैक्षिक विकास केन्द्र के सर्वश्री डी० आर० रॉलिन्स, डी० जी० चिस्मैन और आर० डब्लू० मोरिस थे, मार्गदर्शी परियोजनाओं की प्रगति का मूल्यांकन करने इस देश में आया और उसने परियोजनाओं के भविष्यात्मक विकास के लिए सिफारिशें कीं। परिषद् ने दल के सदस्यों की, उनके विभिन्न राज्यों के दौरे में सहायता की और उनके सारे आवश्यक आँकड़े भी उपलब्ध किए।

1.05 विज्ञान में पूरक पठन सामग्री का उत्पादन :

प्रतिवेदन वर्ष में, विज्ञान में पूरक पठन सामग्री तैयार करने का कार्य चालू रहा। 'दि इंसेक्ट लाइफ, और 'नान-फ्लावरिंग प्लांट्स ऑफ हिमालयाज' नामक दो पुस्तकें छप गईं। 'दि स्टोरी ऑफ ट्रांसपोर्ट' और 'दि मैरीन लाइफ' नामक दो पुस्तकें जो गत वर्ष छपने भेजी गईं थीं वह 1970-71 में प्रूफ स्थिति तक पहुंचीं थीं।

निम्नलिखित पुस्तिकाओं को छपने के लिए दिया गया :

(1) रॉक्स अनफोल्ड दी पास्ट
(2) बर्ड एंड बर्ड वाचिंग
(3) आवर ट्री नेबर्स
(4) माइक्रोब्स
(5) मेडीसिनल प्लांट्स

निम्नलिखित दो पुस्तिकाओं की पांडुलिपियों को छापे जाने की स्वीकृति दे दी गई। इन पुस्तिकाओं के चित्र आदि तैयार कराने में प्रगति हुई है। पांडुलिपियाँ सम्पूर्णता के विभिन्न चरणों में हैं :

(1) दि स्टोरी ऑफ आयल
(2) मेघनाद साहा का जीवन और कार्य

नीचे लिखी पुस्तिकाओं की पांडुलिपियाँ समीक्षा के उपरांत संवर्द्धन के लिए संपादकों को भेजी गईं :

(1) लॉर्ड रदरफोर्ड
(2) पावर फ्रॉम वाटर
(3) इंक्सेक्टीवोरस प्लांट्स
(4) दि ओसन ऑफ एयर
(5) ए० बी० सी० ऑफ ऐटम

नीचे लिखी दो पुस्तिकाएँ गत वर्ष समीक्षकों के पास भेजी गई थीं। उनकी समीक्षा की प्रतीक्षा अब तक की जा रही है :

(1) दि स्टोरी ऑफ ग्लास

(2) मीटिंग विद दी फिज़िसिस्ट

इसके अतिरिक्त बहुत से लेखकों का मार्गदर्शन किया गया है जो प्रारंभिक अवस्था की पुस्तिकाओं पर कार्य कर रहे हैं।

1.06 विज्ञान किटों का उत्पादन : परिषद् की केन्द्रीय विज्ञान कर्मशाला ने नये वैज्ञानिक उपकरणों के आवश्यक आदर्श रूप तैयार करके तथा यूनेस्को-यूनीसेफ सहायता प्राप्त परियोजनाओं के अंतर्गत उपयोग के लिए किटों के क्रमिक उत्पादन के कार्य का उत्तरदायित्व लेकर भी विज्ञान के पाठ्यक्रम विकास कार्यक्रमों में सहायता देना जारी रखा। 69 वस्तुओं से युक्त 1250 प्राथमिक विज्ञान किट और एक 9 हस्त औज़ारों का सेट तैयार किये गए। 83 वस्तुओं से युक्त 750 भौतिकी किट नं० I और 17 वस्तुओं से युक्त 750 जीव विज्ञान किट नं० I विकसित किए गए। पहले तीन किट विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों में भेजे गए। भौतिकी किट नं० III के लिए उपकरण के आदर्श रूप के विकास और मिडिल स्कूल स्तर के लिए रसायन-विज्ञान और जीव-विज्ञान प्रत्येक के प्रदर्शन किट का कार्य भी प्रतिवेदन वर्ष में किया गया। दो प्रकार के विद्यार्थी-रसायन-विज्ञान किट विकसित किए गए जिनका उत्पादन यूनेस्को-यूनीसेफ सहायता प्राप्त अग्रगामी परियोजना के अंतर्गत विभिन्न प्रायोगिक विद्यालयों की पूर्ति के लिए अगले वर्ष किया जाएगा।

1.07 विज्ञान शिक्षा के लिए अनुदेशन सामग्री केन्द्र : इस वर्ष विज्ञान शिक्षा के अनुदेशन सामग्री केन्द्र, सूचना प्रचार केन्द्रों के रूप में कार्य करते रहे। विभिन्न संस्थाओं, विज्ञान अध्यापकों, प्रशासकों और अध्यापक शिक्षकों से प्राप्त होने वाली माँगों और प्रश्नों को पूरा करने के लिए गत वर्ष तैयार की गई 'स्कूल विज्ञान शिक्षण की अनुदेशन सामग्री' नामक सूचनात्मक पुस्तिका को संशोधित किया गया। विज्ञान अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण सामग्री माला के अंतर्गत केन्द्र ने निम्नलिखित पुस्तिकाएँ (मिम्योग्राफ करके) विभिन्न संस्थाओं में वितरित करने के लिए तैयार की हैं :

(1) एक्सपेरीमेंटल मैथड्स आफ टीचिंग कैमिस्ट्री

(2) फिज़ीकल फैसीलिटीज एंड सांइस किट

(3) बेसेज़ फॉर रिकांस्ट्रकशन ऑफ सिलेबस इन टीचिंग साइंस फॉर-टीचर ट्रेनिंग कालेज़ज़

केन्द्र ने इस वर्ष विज्ञान पत्रिकाएँ और दूसरी सेकेंड्री विज्ञान सामग्रियाँ 16 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से विनिमय आधार पर प्राप्त कीं। 15 संस्थाओं से आए अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों की सहायता और मार्गदर्शन किया गया। आकाश

वाणी को इसके विज्ञान शिक्षण के स्कूल टेलीविजन कार्यक्रमों को विकसित करने में सहायता देने के कार्य केन्द्र द्वारा चालू रखे गए । केन्द्र ने रंगून (बर्मा) में आयोजित अध्यापन-सहायता पर अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भाग लिया जहाँ किटों का प्रदर्शन किया गया और उनका प्रयोग दर्शकों को समझाया गया। केन्द्र ने अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष के सेमिनार में भी भाग लिया और विज्ञान सामग्रियों का प्राथमिक शिक्षा पर किए गए राष्ट्रीय सेमिनार में प्रदर्शन किया। केन्द्र ने विज्ञान किटों और विज्ञान उपकरणों की दो और प्रदर्शनियों का आयोजन किया—एक अखिल भारतीय विज्ञान अध्यापक संस्था की महासभा की बैठक में और दूसरी स्कूल के बाहर विज्ञान कार्यकलापों के लिए यूनेस्को क्षेत्रीय सेमिनार में। विज्ञान और श्रव्य दृश्य सामग्रियों का केन्द्र द्वारा वितरण विभिन्न राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थानों में किया गया। इस वर्ष राज्यों के लगभग 300 अध्यापक शिक्षकों, स्कूल निरीक्षकों, वैज्ञानिक पर्यवेक्षकों, वैज्ञानिक परामर्शदाताओं, विशिष्ट व्यक्तियों और विदेशी विद्वानों द्वारा केन्द्र का निरीक्षण किया गया।

2. सामाजिक विज्ञान

2.01 सामाजिक अध्ययन : कक्षा I से XI तक के लिए सामाजिक अध्ययन के लिए पाठ्यक्रम प्रारूप को संशोधित करके छपने के लिए भेज दिया गया। उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक भाग II का निर्माण कार्य चालू रखा गया। प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के अध्यापक शिक्षकों के लिए सामाजिक अध्ययन की विस्तृत हस्तपुस्तिका को अंतिम रूप दिया गया। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी दिल्ली के स्कूल टेलीविज़न एकक का निम्नलिखित सामाजिक अध्ययन पाठों में मार्गदर्शन किया गया :

(1) गोस्वामी तुलसी दास
(2) राजा राममोहन राय और अरविंद घोष
(3) सोवियत संघ
(4) यातायात के तीव्रगामी साधन
(5) स्थानीय शासन
(6) स्थानीय शासन के कार्य

2.02 नागरिक शास्त्र : अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए अनुदेशीय सामग्री तैयार करने के लिए कार्यक्रम के अंतर्गत 6 पुस्तिकाओं की पांडुलिपियों को, जिनमें मिडिल स्कूल स्तर के सामाजिक अध्ययन के पाठ्यक्रम को पूरा करते हुए शिक्षण एकक थे, अंतिम रूप दिया गया और छपने के लिए भेजा गया। 6 अनुपूरक पुस्तकों को भी तैयार किया गया और छपने के लिए भेजा गया। इसके अतिरिक्त कक्षा VII की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक के अंग्रेजी रूपांतर और कक्षा VIII की नागरिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक के हिन्दी संस्करण को अन्तिम रूप दिया गया और छपने के लिए भेजा गया।

2.03 भूगोल : इस वर्ष कक्षा VII की भूगोल पाठ्यपुस्तक (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण) प्रकाशित की गई। इस शृंखला में कक्षा VIII की भूगोल पाठ्यपुस्तक के हिन्दी और अंग्रेजी रूपांतर पूरे किए गए और छपने भेज दिए गए। इसके अतिरिक्त उत्तरी अमरीका, यूरोप और रूस से सम्बन्धित रीजनल ज्योग्रफी की पुस्तक को पूर्ण किया गया और छपने के लिए भेजा गया। यह पुस्तक उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए है और इस शृंखला की चौथी पुस्तक है। तीन पाठ्यपुस्तकों, फिज़ीकल ज्योग्रफी, इकोनामिक ज्योग्रफी और प्रेक्टीकल ज्योग्रफी के हिन्दी रूपांतर पहले से ही छपने गए हुए हैं। मैसूर विश्वविद्यालय ने परिषद् की फिज़ीकल ज्योग्रफी पाठ्यपुस्तक का कन्नड़ भाषा में अनुवाद कर लिया है। इस पुस्तक के कागज़ी जिल्द और कपड़े की ज़िल्द दोनों प्रकार के संस्करण प्रकाशित किए गए हैं।

2.04 इतिहास : इस वर्ष इतिहास शिक्षण में विद्यार्थियों के भाग लेने पर एक पुस्तिका तैयार करने का कार्य प्रारंभ किया गया। अनुदेशीय सामग्री परियोजना के अंतर्गत भारतीय प्राचीन इतिहास से संबंधित 14 शिक्षण एककों की छपाई के अभिप्राय से जाँच की गई। कक्षा VIII के लिए 'आधुनिक भारत' पाठ्यपुस्तक तैयार करने का कार्य भी किया गया।

2.05 अर्थशास्त्र : फरवरी और मार्च 1971 में आयोजित दो कर्मशालाओं में अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम के प्रारूप को अन्तिम रूप दिया गया और आगे इसमें शिक्षण एककों और पाठों का गठन किया गया।

2.06 कृषि : कृषि पाठ्यपुस्तक के भाग एक को अंतिम रूप दिया गया और छपने के लिए भेज दिया गया। इस पुस्तक का दूसरा भाग पशु विज्ञान के कुछ पाठों को छोड़कर पूर्ण होने के निकट है।

2.07 मातृ भाषा : गत वर्ष हिन्दी के अधिक उपयोगी शब्दों की श्रेणीकृत शब्दावली का जो प्रारूप तैयार किया गया था प्रतिवेदन वर्ष में उसे एक कर्मशाला में अंतिम रूप दिया गया। यह शब्दावली चार भागों में विभाजित है, अर्थात् पूर्व विद्यालय की शब्दावली, प्राथमिक विद्यालय शब्दावली, माध्यमिक विद्यालय शब्दावली और उच्च विद्यालय शब्दावली। हिन्दी की नई प्रवेशिका के प्रारूप को इस वर्ष समीक्षा दल की एक बैठक में समीक्षा के उपरान्त अंतिम रूप दिया गया। इसकी प्रेस पांडुलिपि और चित्र तैयार हैं और प्रवेशिका को छापने के उपाय किये जा रहे हैं। उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए 'काव्य संकलन' (काव्य की हिन्दी पाठ्यपुस्तक) के संशोधित संस्करण को एक कर्मशाला में अंतिम रूप दिया गया। इसकी अभ्यास सामग्री तैयार करने का कार्य प्रारंभ किया जा रहा है। उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए 'गद्य संकलन' (गद्य की पाठ्यपुस्तक) के संशोधित संस्करण की रूपरेखा भी तैयार की गई और इसके लिए सामग्रीचयन का कार्य इस वर्ष ही शुरू किया गया।

2.08 द्वितीय भाषाएँ : द्वितीय भाषा के रूप में बंगला भाषा की प्रथम पाठ्यपुस्तक को अंतिम रूप दिया गया। इसके चित्र और प्रेस पांडुलिपि तैयार की जा रही हैं। द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी की द्वितीय पाठ्यपुस्तक का प्रारूप समीक्षा दल की समीक्षा के लिए पूरा कर लिया गया।

2.09 संस्कृत : मिडिल स्कूल स्तर के संस्कृत शिक्षण के लिए सामान्य नियम और पाठ्यक्रम प्रारूप विकसित किए गए।

2.10 सामाजिक विज्ञान में पूरक पठन सामग्री का उत्पादन : प्रतिवेदन वर्ष में मिडिल स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के लिए निम्नलिखित पूरक पठन सामग्री तैयार की गई। सामग्री को अंतिम रूप लेखकों और समीक्षकों द्वारा दो कर्मशालाओं में दिया गया।

(1) भारत के प्राचीन नगर
(2) हमारी वन संपत्ति
(3) आदिम युग के आविष्कार

3. स्कूल शिक्षा के लिए समन्वित पाठ्यक्रम योजना :

परिषद् ने सारे स्कूल स्तर के लिए सामान्य शिक्षा की एक समन्वित पाठ्यक्रम योजना को विकसित करने की एक परियोजना शुरू की। इस परियोजना के अंतर्गत कक्षा I से XI तक के हर विषय का विस्तृत पाठ्यक्रम तैयार करने का सुझाव है। प्रतिवेदन वर्ष में समन्वित पाठ्यक्रम योजना और कुछ पाठ्यक्रमों को अंतिम रूप दिया गया।

4. अध्यापक शिक्षा :

पूर्व प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए नए पाठ्यक्रम पर एक प्रयोगात्मक संस्करण तैयार किया गया और विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों में स्कूल पूर्व शिक्षा में जुटी विभिन्न ऐजेन्सियों और संस्थाओं को बाँटा गया। जूनियर प्रशिक्षण कालेजों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के शिक्षा पाठ्यक्रम को एक 6 दिवसीय कर्मशाला में विकसित किया गया। बुनियादी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के लिए कला-शिक्षा और कार्य-अनुभव की एक पाठ्यक्रम योजना को विकसित किया गया। कला-शिक्षा की प्रत्येक पाठ्यक्रम योजना का दिल्ली के स्थानीय स्कूलों में परीक्षण किया गया।

5. प्राथमिक स्तर में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम मानकों का विकास

प्रतिवेदन वर्ष में प्राथमिक विद्यालयों के लिए न्यूनतम राष्ट्रीय मानकों को विकसित करने की परियोजना शुरू की गयी जिसका उपयोग मानदण्ड और सन्दर्भ सामग्री के रूप में राज्यों द्वारा अपने पाठ्यक्रम को विकसित करने में किया जा सकता है। इस परियोजना के अंतर्गत जुलाई 1970 में आयोजित एक राष्ट्रीय

सम्मेलन में प्राथमिक शिक्षा के अस्थायी उद्देश्यों को विकसित किया गया। इन अस्थायी उद्देश्यों पर विभिन्न राज्य समितियों/अधिकारीवर्गों और विशेषज्ञों से टिप्पणियाँ प्राप्त की गईं और इनका जनवरी 1971 में आयोजित एक अखिल भारतीय कर्मशाला में विश्लेषण किया गया। विभिन्न सूत्रों से प्राप्त टिप्पणियों के आधार पर इन उद्देश्यों को अंतिम रूप दिया गया। जिनके विभिन्न अंगों का और विश्लेषण किया गया और इनमें से कुछ उद्देश्यों के शिक्षा परिणामों के प्रारूपों को क्षेत्रीय विकास के सन्दर्भ में वर्णित किया गया।

6. कार्य-अनुभव पाठ्यक्रम

मैसूर और आंध्र प्रदेश राज्यों के शिक्षा विभागों और केन्द्रीय विद्यालय संगठन के कार्य-अनुभव क्षेत्र में पाठ्यक्रम योजना और शिक्षण एककों को विकसित करने में सहायता की गई। इसके अतिरिक्त पूर्व विकसित कार्य-अनुभव पाठ्यक्रम का दिल्ली के स्थानीय स्कूलों में परीक्षण किया गया।

7. जनजातीय शिक्षा

शिक्षा अधिकारियों और जनजातीय क्षेत्रों में कार्य कर रहे प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए जनजातीय जीवन और संस्कृति में सेवाकालिक प्रशिक्षण के दो पाठ्यक्रमों को नवम्बर 1970 में आयोजित एक सम्मेलन में सुझाए गए संशोधनों के आधार पर संशोधित किया गया। "जनजाति उपभाषा में पाठ्यपुस्तकों के निर्माण" की परियोजना की रूप रेखा बिहार, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल राज्यों को टिप्पणी के लिए भेजी गई। बिहार की संथाल, ओरावँ और भिडा जातियों के कुछ लोक गीत और लोक कथाओं को एकत्रित किया गया। जनजातीय विद्यार्थियों के लिए "राष्ट्रीय और जनजातीय देशभक्त" नामक अनुपूरक पुस्तक के लिये सामग्री एकत्रित की गई।

8. शिक्षण सहायक साधन

पिछले कुछ वर्षों से पूर्व विद्यालय स्तर पर शिक्षा में शिक्षण उपकरणों के उपयोगों को प्रोत्साहन देने के लिए कार्यक्रम पर राष्ट्रीय परिषद कार्य करती रही। इसमें अल्प व्यय तकनीकें जैसे फ्लैनल ग्राफ किट, ग्राफिक किट आदि शामिल हैं, जो विद्यालय अवस्था में अत्यंत उपयोगी होते हैं। इसके अतिरिक्त, बड़ी मात्रा में विविध स्कूल विषयों की फिल्म स्ट्रिपें, चार्ट्स, रेखाचित्र, और अन्य सम्बन्धित सामग्री का निर्माण किया गया। प्रतिवेदन वर्ष में निम्नलिखित किट/सामग्रियों का उत्पादन किया गया।

फिल्म स्ट्रिपें

निम्नलिखित फिल्म स्ट्रिपें निर्माण की विविध अवस्थाओं में हैं।

(i) राजस्थान

(ii) थ्री डी टीचिंग एड्स इन प्लास्टर ऑफ पैरिस

(iii) बर्थ ऑफ नम्वर्स

(iv) लीनीयर सिमिट्री

(v) बायलौजी-दी सांइस आफ लाइफ

(vi) टीचिंग क्रिएटिव आर्ट्स एंड क्रेफ्ट्स

(vii) लर्निंग फ्रॉम पिक्चर्स

(viii) ए० वी० एड्स इन एडूकेशन

(ix) बुलेटिन बोर्ड्स

(x) फलैनल ग्राफ

(ix) यूजिंग फिल्मस्ट्रिप्स इन टीचिंग

इसके अतिरिक्त "महात्मा गांधी-उनका जीवन और सन्देश" नामक फिल्म स्ट्रीप के 1800 प्रिंट्स तैयार किए गए।

चार्ट्स

(i) परिषद् की जीव विज्ञान पाठ्यपुस्तक भाग I से सम्बन्धित "बेसिक फैक्ट्स आफ लाइफ" नामक जीव विज्ञान के 21 फ्लिप चार्ट्स

(ii) उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में चुंबक और चुम्बकीयता शिक्षण के लिए 20 रंगीन चार्ट्स।

फिल्में

परिषद् ने एक 16 एम० एम० की फिल्म, 'साइंस इज डूइंग—ए न्यू अप्रोच टू प्राइमरी साइंस टीचिंग' तैयार की।

अध्ययन पैकेज

(अ) 'एस्कीमों' पर एक अध्ययन पैकेज तैयार किया गया।

(ब) निम्नलिखित अध्ययन पैकेज निर्माण की विविधि अवस्थाओं में हैं :

(i) सम लीफलैस प्लांट्स

(ii) लाइफ हिस्ट्री आफ गोल्डन कलर वटरफ्लाई

(iii) दी स्टोरी ऑफ दिल्ली

पिक्चर पैकेज

भारत की जनजातियों पर पिक्चर पैकेजों का निर्माण कार्य शुरू किया गया। इन पिक्चर पैकेजों का स्कूलों में अनुदेश देने और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए उपयोग किया जाएगा।

स्लाइड किटें

परिषद् ने यूनीसेफ विशेषज्ञों के सहयोग से विभिन्न विषयों में स्लाइड किटों के निर्माण का कार्य शुरू किया। 'टीचिंग एलीमेंट्री फिजिक्स टुडे' नामक 50 स्लाइडों से युक्त पहला किट प्रतिवेदन वर्ष में तैयार किया गया।

अन्य सामग्री

प्रतिवेदन वर्ष में निम्नलिखित सामग्रियों का उत्पादन किया गया।

(i) फोल्डिंग स्टैंड फॉर बायलोजी चार्ट्स एंड पब्लीकेशंस
(ii) मॉडेल्स फॉर बायलौजी किट
(iii) डिसप्ले बोर्ड्स
(iv) फाइनल ड्रांइग्स फार पिक्चर पैकेजज् आफ मैग्नेट एंड मैग्नेटिज्म
(v) डायोरमाज्—6
(vi) ग्राफिक स्ट्रिप्स—2
(vii) वर्किंग मॉडेल्स—5
(viii) टीचिंग मशीन
(ix) हिस्ट्री चार्ट्स पैनेल—5
(x) बुक कवर फॉर टैक्स्टबुक इलस्ट्रेशन—1
(xi) मैप्स फॉर फिल्मस्ट्रिप आन जम्मू एंड कश्मीर—2
(xii) कवर डिजाइन फार पपेटरी बुक—1
(xiii) डिजायन्स फॉर डायोरमाज्, पोस्टर्स, चार्ट्स फॉर ट्रेनिंग प्रोग्राम्स इन रीजनल कालेज आफ एजुकेशन मैसूर—30
(xiv) कवर डिज़ाइन फॉर डायरेक्ट्री आफ ए० वी० मैटीरियल्स एंड इक्यूपमैंट
(xv) फिल्मस्ट्रिप बॉक्स—1
(xvi) फेसेज़ फॉर पपेट्स
(xvii) फिल्मस्ट्रिप शूटिंग बोर्ड—1
(xviii) ए स्टडी किट आन जम्मू एंड कश्मीर
(xix) ए डे लाइट स्क्रीन

परिशिष्ट 5

स्कूल पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन का प्रचंड कार्यक्रम

1. प्रस्तावना

भारत सरकार को समय-समय पर ऐसी शिकायतें मिल रहीं थीं कि देश के विभिन्न भागों में स्कूलों के लिए निर्धारित बहुत-सी पाठ्यपुस्तकों में राष्ट्रीय एकता के हित में हानिकारक सामग्री है। इन शिकायतों को ध्यान में रखकर, इस समस्या की जाँच करने और सरकार को असाम्प्रदायिक राज्य के लिए उपयुक्त पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन और तैयारी में अपनाये जाने वाले मूल तत्वों के सम्बन्ध में सुझाव देने के लिए, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने प्रोफेसर के० जी० सैयदैन की अध्यक्षता में एक समिति की सितंबर 1966 में नियुक्ति की। इस समिति ने साक्ष्यों का निरीक्षण किया और शिकायतों का अध्ययन किया और सरकार को रिपोर्ट प्रस्तुत की। यह रिपोर्ट मुख्यतया नीतियों और मूलतत्वों और वास्तव में प्राप्त शिकायतों के अध्ययन पर आधारित है।

संसद्, राष्ट्रीय एकीकरण परिषद् और दूसरे स्थानों में हुई बहसों को ध्यान में रखते हुए, स्कूल पाठ्यपुस्तकों में राष्ट्रीय एकीकरण के लिए हानिकारक सामग्री के प्रश्न ने बहुत महत्वपूर्ण रूप धारण कर लिया। इस कारण से समस्या का संपूर्णता से जाँच करना भारत सरकार के सम्मुख आया।

मार्च 1970 में यह प्रश्न उठा था कि क्या उन सभी पाठ्यपुस्तकों को जिनमें राष्ट्रीय एकीकरण के लिए हानिकारक सामग्री होने की सम्भावना है, जाँच की जाए और सम्बन्धित राज्यों को इस मामले में सुझाव दिए जायें। इस समय तक राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड की स्थापना हो चुकी थी। अप्रैल 1969 में हुई अपनी पहली बैठक में इसने यह सुझाव दिया कि एक राज्य में निर्धारित स्कूल पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन प्रथमतः उसी राज्य को करना चाहिए। इस बात को ध्यान में रखते हुए स्कूल पाठ्यपुस्तकों का राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से मूल्यांकन का प्रश्न मई 1970 में हुई राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड की दूसरी बैठक के समक्ष रखा गया। सभी राज्यों के शिक्षा मन्त्री इस राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड के सदस्य हैं। उनमें से बहुत ने बैठक में भाग लिया। जिन राज्यों के शिक्षा मंत्री बैठक में भाग लेने न आ सके उनके सरकारी प्रतिनिधि नियुक्त किए गए थे। राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड की इस दूसरी बैठक में एक मत होकर संकल्प किया

गया कि सभी राज्यों और संघ क्षेत्रों के स्कूलों में निर्धारित या सिफारिश की गई सभी पाठ्यपुस्तकों का राष्ट्रीय एकीकरण के दृष्टिकोण से मूल्यांकन किया जाए।

राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड की उपर्युक्त सिफारिश और संसद में हुई बहस के आधार पर भारत सरकार ने कार्यवाही करने का फैसला किया। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को इस संदर्भ में लिखा गया और परिषद् ने भारत सरकार को सूचित किया कि वह इस कार्य को एक प्रचंड कार्यक्रम के रूप में शुरू कर सकती है और नियत कार्य 6 महीने की अवधि में समाप्त कर सकती है। परिणामस्वरूप श्री टी० आर० जयरामन, संयुक्त सचिव, शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय के अर्धसरकारी पत्र संख्या एफ० 11-41-70 एस 4, दिनांक 27 मई 1970 द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को यह कार्य शुरू करने को कहा गया।

2. कार्यक्रम

परिषद् ने कई दृष्टिकोणों से इस समस्या पर विचार किया। यह इस परिणाम पर पहुंची, कि इतिहास और भाषा जैसे विवादास्पद विषयों में जहाँ दो व्यक्ति एक ही तथ्यों के आधार पर दो भिन्न परिणाम निकाल सकते हैं, यह आवश्यक है कि मूल्यांकन तीन स्वतंत्र व्यक्तियों द्वारा और इसकी जाँच तीन स्वतंत्र संगठनों द्वारा की जाए। आगे परिषद् ने ऐसा अनुभव किया कि आँकड़ों पर कार्य करने की कठिनाइयों और संदिग्धता से बचने के लिए मूल्यांकन के लिए मानक प्रक्रियाओं को विकसित किया जाए। इसी लिए परिषद् ने एक स्क्रीनिंग अभिलेख पुस्तिका बनाई जिसमें विस्तृत अनुदेशों को जितना संभव हो सकता था, असंदिग्ध ढंग से दिया गया। परिषद् ने अपनाए जाने वाली प्रक्रियाओं की और जाँच की। ऐसा अनुभव किया गया कि सब से अधिक उपयुक्त निर्धारक विद्यालय के शिक्षक होंगे जो विभिन्न स्तरों पर वास्तव में विषय पढ़ा रहे हैं। यह भी अनुभव किया गया कि इन विद्यालय शिक्षकों पर कार्यभार की अधिकतम सीमा निश्चित की जाए ताकि उनसे निर्धारण ठीक प्रकार से प्राप्त हो सके। इन विषयों पर लिए गए निर्णयों को ध्यान में रखते हुए, इस कार्य को प्रारम्भ करने की एक समय-अनुसूची भी तैयार की गई।

इस प्रकार प्राप्त सूचना के आधार पर भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय ने सारी राज्य सरकारों को सूचित किया कि यह कार्य प्रारंभ किया जा रहा है और राज्य सरकारें भी दिनांक 19 जून 1970 के पत्र संख्या एफ० 11-41-70-स्कूल 4 में निर्दिष्ट मार्ग पर कार्य करें। पत्र का उत्तर शीघ्र न मिला। परिणामस्वरूप यह विषय राज्यों के शिक्षा सचिवों की 11 अगस्त 1970 को हुई बैठक के सम्मुख रखा गया। इस योजना का ब्यौरा और इसके महत्व को बैठक में समझाया गया और तब जाकर यह फैसला हुआ कि सब राज्य इस कार्य को प्रारंभ करेंगे। परन्तु विलम्ब होने के कारण यह सुझाव दिया गया कि एक संशोधित समय-अनुसूची तैयार की

जाए। तदनुसार एक संशोधित समय-अनुसूची तैयार की गई और राज्य सरकारों को भेजी गई।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को पूर्ण कार्यक्रम के सँभालने और राज्य सरकारों द्वारा किए गए व्यय की प्रतिपूर्ति का कार्य सौंपा गया।

परिषद् ने भारत सरकार की अनुमति से केवल भाषा, इतिहास, नागरिक, शास्त्र नीति विज्ञान और सामाजिक अध्ययन जैसे विषयों की पाठ्यपुस्तकों की ही जाँच करने का ही निर्णय किया। उपरिलिखित विषयों में भी यह निर्णय किया गया कि राज्य की मुख्य भाषा में लिखी पुस्तकों की जाँच पहले चरण में की जाएगी और व्याकरण और निबंध की पुस्तकें, जिनमें राष्ट्रीय एकीकरण के लिए हानिकारक सामग्री होने की संभावना नहीं है, उनका मूल्यांकन पहले चरण में नहीं किया जाएगा। इतनी सीमाएँ होते हुए जाँचने वाली पुस्तकों की संख्या 2000 और 3000 के बीच थी। यह एक विशाल संख्या थी जबकि विभिन्न भाषाओं में लिखी पुस्तकों को हिसाब में लिया गया।

उपरिलिखित निर्णयों से राज्य सरकारों को भी अवगत कराया गया।

परिषद् ने विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों के शिक्षा निदेशकों को लिखा और उनसे कक्षा 1 से 11 तक निर्धारित पाठ्यपुस्तकों और सामान्य अध्ययन की पुस्तकों की सूची प्राप्त की। इन सूचियों से पहले चरण में जाँचने वाली पुस्तकों की सूची तैयार की गई। राज्य सरकारों को सुझाव दिया गया कि पुस्तकों का मूल्यांकन शुरू करने से पहले अपनी सूचियों की जाँच परिषद् द्वारा तैयार की गई सूचियों से कर लें।

परिषद् ने इन विषयों पर सभी राज्यों और संघ क्षेत्रों में तैयार की गई पुस्तकों की प्रतियाँ प्राप्त कीं। आवश्यक मूल्यांकनकर्त्ताओं की नियुक्ति की गई और उनको पुस्तकों के साथ स्क्रीनिंग अभिलेख पुस्तिकाएँ भी भेजी गईं। पहले माध्यम में मूल्यांकन रिपोर्ट के साथ पुस्तक दिल्ली में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान को प्राप्त होनी थी जो अपने विशेषज्ञों द्वारा उनकी छानबीन करा कर एक विशेषज्ञ समिति के सामने पेश करेगा। दूसरे माध्यम में पुस्तक तथा उसकी मूल्यांकन रिपोर्ट की जाँच परिषद् के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में होगी और तब दिल्ली में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान को विशेषज्ञ समिति के सामने पेश करने के लिए भेज दी जायगी। तीसरे माध्यम में मूल्यांकन राज्यों द्वारा किया जाना था। प्रत्येक राज्य से अनुरोध किया गया कि वह पुस्तकों और उनकी मूल्यांकन रिपोर्ट को परिषद् के पास भेजे।

दिल्ली स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और परिषद् के अधीन अजमेर, भूपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में कार्य कर रहे क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय इस कार्य

को अनुसूची अनुसार पूरा कर सके और सभी रिपोर्टें नवम्बर 1970 के उत्तरार्ध में तैयार हो गईं ।

परिषद् के अध्यक्ष ने प्राप्त सामग्री की जाँच करने और उस पर रिपोर्ट देने के लिए निम्नलिखित सदस्यों की एक विशेषज्ञ समिति की नियुक्ति की ।

1. श्री जी० पार्थसारथी
   कुलपति
   जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
   नई दिल्ली

2. श्री के० कुरुविला जैकब
   प्रधानाचार्य
   दि कैथेड्रल एंड जॉन कौनन स्कूल
   6 अउट्रम रोड,
   बम्बई

3. डॉ० त्रिलोचन सिंह
   भूतपूर्व शिक्षा निदेशक
   चंडीगढ़

4. श्रीमती साजदा ज़मीर अहमद
   उप-निदेशक स्त्री शिक्षा
   जम्मू तथा कश्मीर सरकार
   जम्मू

भारत के अंतरविश्वविद्यालय बोर्ड के सचिव, डॉ० अमरीक सिंह को बाद में इस विशेषज्ञ समिति का सदस्य नियुक्त किया गया । इस नियुक्ति का मुख्य उद्देश्य यह था कि मूल्यांकन रिपोर्टों की जाँच के लिए कम से कम चार व्यक्ति उपस्थित हों ।

इस समिति ने राज्यों को भेजी जाने वाली रिपोर्ट के प्रारूप का मानकीकरण किया । यह रिपोर्ट काफी विस्तृत बनाई गई ताकि इसमें संदिग्धता का कोई स्थान न रहे । यह भी निश्चय किया गया कि समिति द्वारा तैयार रिपोर्टों को एक अर्द्ध-सरकारी पत्र द्वारा राज्य तथा संघ क्षेत्र की सरकारों को शिक्षा सचिवों को भेजा जाए । क्योंकि इस विषय पर संबंधित राज्य सरकारों को फैसला लेना था, इसलिए यह फैसला किया गया कि ये रिपोर्टें गोपनीय रखी जाएँगी और उस समय तक किसी को प्रस्तुत नहीं की जाएँगी जब तक कि राज्य सरकारें उन पर अंतिम फैसला नहीं कर लेतीं । यह भी फैसला किया गया कि इसके बाद भी इस संबंध में सूचना सदैव संबंधित राज्य सरकार की अनुमति से दी जाएगी ।

राज्यों द्वारा भेजी गई रिपोर्टों में पुस्तकों को निम्नलिखित चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है :

(अ) पुस्तकें जिनका प्रयोग स्कूलों में जुलाई 1971 से बंद किया जाये ;

(ब) पुस्तकें जो जुलाई 1972 तक दिए गए ब्यौरे के अनुसार संशोधित की जाएँ;

(स) पुस्तकें जिनमें निर्दिष्ट भागों को जुलाई 1972 तक निकाल दिया जाए ; और

(द) पुस्तकें जिनमें कोई आपत्तिजनक सामग्री नहीं है और इसलिए उनका प्रयोग जारी रखा जाये।

जुलाई 1970 में स्थिति

विभिन्न राज्यों और संघ क्षेत्रों की पाठ्यपुस्तकों की सूचियों और शिक्षा निदेशकों की रिपोर्टों के निरीक्षण से यह पता चला कि निम्नलिखित राज्य/संघ क्षेत्र या तो अपने पड़ोसी राज्यों की संस्तुत पुस्तकें प्रयोग कर रहे थे या उनके पास अपनी पुस्तकें बहुत कम थीं या उनकी योजना जुलाई 1971 से संस्तुत पुस्तकों को बदलने की थी :

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
चंडीगढ़
दादरा और नगर हवेली
गोवा, दमन और दीव
हरियाणा
हिमाचल प्रदेश
लक्का दीव, मिनीकॉय और अमीनदिवी द्वीप समूह
नागालैंड
नेफा
पांडीचेरी
त्रिपुरा

उपरोक्त को ध्यान में रखकर उपरिलिखित सब राज्यों/संघ क्षेत्रों को अपने आप मूल्यांकन न करने वरन् परिषद् द्वारा विभिन्न सूत्रों के मूल्यांकन अर्थात् राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के दो माध्यम और एक पड़ोसी राज्य में राज्य द्वारा मूल्यांकन के आधार पर तैयार रिपोर्ट पर अमल करने का सुझाव दिया।

कुछ राज्यों से मूल्यांकन रिपोर्ट जून 1971 से पहले ही प्राप्त हो गई थी। जब और जैसे यह प्राप्त हुई इन रिपोर्टों को राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्रीय

विद्यालयों के माध्यमों से प्राप्त मूल्यांकन रिपोर्टों के साथ विशेषज्ञ समिति के सम्मुख पेश किया गया। विशेषज्ञ समिति की रिपोर्टों को तुरन्त संबंधित राज्यों को भेज दिया गया। इस विधि से निम्नलिखित राज्यों/संघ क्षेत्रों का कार्य समाप्त कर लिया गया :

गुजरात	हिमाचल प्रदेश
केरल	मणिपुर
नागालैंड	मैसूर
जम्मू और कश्मीर	बिहार
हरियाणा	दिल्ली
	उड़ीसा

मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल राज्यों की मूल्यांकन रिपोर्टें अभी प्राप्त हुई हैं। विशेषज्ञ समिति की दोनों राज्यों और तीनों माध्यमों से प्राप्त मूल्यांकन रिपोर्टों पर विचार करने और शीघ्र ही रिपोर्ट तैयार करने के लिए बैठक होगी। इसके बाद उनको संबंधित राज्यों को भेज दिया जाएगा। परन्तु 1971 में पुस्तक को हटाने की कार्यवाही की न तो सिफारिश की जा सकती है और न ही कार्यान्वित किया जा सकता है। फिर भी 1972 में प्रारंभ होने वाले शैक्षणिक सत्र में कार्यवाही की जा सकती है।

निम्नलिखित राज्यों ने कार्य देर से प्रारंभ किया और इनका कार्य 30 सितंबर 1971 तक समाप्त हो जाने की आशा है :

उत्तर प्रदेश
राजस्थान
असम
आंध्रप्रदेश
महाराष्ट्र

इसके पश्चात् विशेषज्ञ समिति मूल्यांकन रिपोर्टों पर विचार करेगी और राज्यों के लिए रिपोर्ट तैयार करेगी। ऐसी आशा की जाती है कि 1972 में प्रारंभ होने वाले शैक्षणिक सत्र से पहले कार्यवाही करने के लिए रिपोर्टें राज्यों को प्राप्त हो जाएँगी।

अब तक समाप्त किए गए कार्य में लगभग 3-4 प्रतिशत पुस्तकें (अ) श्रेणी की हैं अर्थात् वह पुस्तकें जिनका प्रयोग स्कूलों में जुलाई 1971 से बन्द किया जाए। 20 प्रतिशत से कम पुस्तकें (ब) श्रेणी की हैं अर्थात् वह पुस्तकें जिनमें संशोधन जो जुलाई 1972 तक दिए गए ब्यौरे के अनुसार किया जाता है। लगभग 10 प्रतिशत पुस्तकें (स) श्रेणी की हैं जिनमें निर्दिष्ट भागों को जुलाई 1972 तक निकाल दिया जाना है। 65 प्रतिशत से अधिक पुस्तकों में राष्ट्रीय एकीकरण की दृष्टि से कोई आपत्तिजनक सामग्री नहीं है।

पुस्तकों की जांच करते समय हमारी पाठ्यपुस्तकों की बड़ी कमियां सामने आईं। यह पता चला कि बहुत सी पुस्तकों की छपाई और मुखवर्ण संतोषजनक नहीं हैं। यह भी पता चला कि कुछ पुस्तकों में पाठ्य सामग्री इस प्रकार प्रस्तुत नहीं की गई है जो छात्रों को आकर्षित कर सके। विशेषज्ञ समिति ने इनमें से कई बातों पर सुझाव देना उपयुक्त समझा। यह सुझाव यद्यपि बहुत कुछ प्रदर्शित करते हैं फिर भी सारे राज्यों और संघ क्षेत्रों के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। इन सबको राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड द्वारा विचार करने के लिए भेजा जाएगा।

परिषद् अपने प्रचंड कार्यक्रम द्वारा पहली बार भारत के सभी भागों के अध्यापकों के संपर्क में आई जिनको बहुत उत्तरदायी कार्य शुरू करने के लिए और कुछ मामलों में खतरनाक कार्य करने के लिए आमंत्रित किया गया था। अध्यापकों ने जिस प्रकार स्क्रीनिंग अभिलेख पुस्तिकाओं को पूरा किया उस से यह विदित होता है कि हमारे पास ऐसे लगन से कार्य करने वाले अध्यापक हैं जो महान स्तर का कार्य ध्यान और पूर्णता के साथ समय से कर सकते हैं। यह एक महत्वपूर्ण सम्पत्ति है जिस पर वास्तविकता में देश गर्व कर सकता है।

इस प्रचंड कार्यक्रम द्वारा परिषद् के कर्मचारी राज्यों के शिक्षा मंत्रियों शिक्षा सचिवों, शिक्षा निदेशकों और बहुत से दूसरे अधिकारियों के घनिष्ठ संपर्क में आए। सबने परिषद् को अधिकतम सहयोग दिया और यहाँ यह बात लिखते हुए बड़ी खुशी होती है कि परिषद् द्वारा किए गए पत्र-व्यवहार आदि का बड़ी अद्भुत तत्परता और आदर के साथ उत्तर दिया गया।

परिषद् विशेषज्ञ समिति के सभी सदस्यों की बड़ी आभारी है जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर स्क्रीनिंग अभिलेख पुस्तकाओं को जाँचने और सहस्त्रों पुस्तकों के मूल्यांकन का विशेष सावधानी युक्त कार्य प्रारंभ किया।

परिशिष्ट 6

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना 1963 से चालू है जबकि इसको एक अभियान परियोजना के रूप में केवल दिल्ली में शुरू किया गया था। 1964 में इसने अखिल भारतीय योजना के रूप में व्यापक स्वरूप धारण कर लिया।

इस योजना का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर की समाप्ति पर विज्ञान और गणित में प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की खोज करना और उनको मूल विज्ञानों में पीएच० डी० स्तर तक अध्ययन कराना है। इस योजना के अंतर्गत चुने हुए विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ और पुस्तक अनुदान आदि दिए जाते हैं। राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज की 1969 तक हुई परीक्षाओं के आधार पर विद्यार्थियों को दी गई छात्रवृत्ति की दरें निम्नलिखित थीं :

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज की 1969 तक हुई परीक्षाओं के आधार पर चुने हुए विद्यार्थियों को दी गई छात्रवृत्ति की दरें आदि

	बी० एससी० (तीन वर्षीय)	एम० एससी (दो वर्षीय)	पीएच० डी० (चार वर्षीय)
छात्रवृत्ति	100/-रु० प्रतिमास	250/-रु० प्रतिमास	350/-रु० प्रतिमास
पुस्तक के लिए भत्ता	100/-रु० प्रतिवर्ष	250/-रु० प्रतिवर्ष	300/-रु० प्रतिवर्ष
शिक्षा शुल्क की अधिकतम दर	15/-रु० प्रतिमास	18/-रु० प्रतिमास	20/-रु० प्रतिमास

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज की 1970 में व उसके बाद हुई परीक्षाओं के आधार पर विद्यार्थियों को दी गई छात्रवृत्ति आदि की दरें निम्नलिखित हैं :

राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज की 1970 में व उसके बाद हुई परीक्षाओं के आधार पर विद्यार्थियों को दी गई छात्रवृत्ति आदि की संशोधित दरें

	बी० एससी० (तीन वर्षीय)	एम० एससी० (दो वर्षीय)	पीएच० डी० (चार वर्षीय)
छात्रवृत्ति	100/-रुपया प्रतिमास	150/-रुपया प्रतिमास	250/-रुपया प्रतिमास प्रथम वर्ष 300/-रुपया प्रतिमास शेष वर्ष
पुस्तक के लिए भत्ता	100/-रुपया प्रतिवर्ष	150/-रुपया प्रतिवर्ष	1000/-रुपया प्रतिवर्ष
प्रासंगिक भत्ता	—	—	पुस्तकों और प्रयोगशाला सामग्री आदि पर व्यय करने के लिए

चुने हुए प्रत्याशियों को ग्रीष्मकालीन संस्थानों द्वारा द्रुतिचालित और सुसज्जित कार्यक्रम में छोड़ दिया जाता है और शैक्षणिक जीवन कार्य में उनको गाइड की सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

इस योजना ने बहुत से छात्रों को लाभ पहुंचाया है जो कि मूल विज्ञान में उच्चतर शिक्षण प्राप्त कर रहे हैं और हमारे भावी वैज्ञानिक बनने वाले हैं।

1970-71 वर्ष में पुरस्कार प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या निम्नलिखित थी।

अवरस्नातक प्रत्याशी	728
स्नातकोत्तर प्रत्याशी	220
डाक्टरी स्तर के प्रत्याशी	66
	1,014

योजना के सूक्ष्म विश्लेषण से पता चला है कि प्रत्याशियों का सारे देश में समान वितरण नहीं है। इसीलिए छात्रों के चुनाव के लिए अपनाये गए तरीकों

और प्रक्रियाओं तथा उसके बाद के अनुवर्ती कार्यक्रमों को सुधारने के बराबर प्रयत्न किए जा रहे हैं।

विज्ञान प्रतिभा खोज की 1970 की परीक्षा में 1000 से अधिक प्रत्याशी साक्षात्करण के लिए सफल हुए। साक्षात्करण के आधार पर 359 प्रत्याशी अंतिम रूप से छात्रवृत्तियों के लिए चुने गए। 1968 से 1970 तक पुरस्कार पाने वाले प्रत्याशियों की संख्या का राज्यानुसार वितरण अनुबंध में दिया गया है।

विज्ञान प्रतिभा खोज की 1971 की परीक्षा सारे देश में 330 केन्द्रों में आयोजित की गई और इसमें 8,000 से अधिक प्रत्याशियों ने भाग लिया। परीक्षा अंग्रेजी तथा सभी क्षेत्रीय भाषाओं में संचालित की गई। इस परीक्षा के लिए दी जाने वाली छात्रवृत्तियों का फैसला जून 1971 में इन्टरव्यू के बाद होगा।

अवरस्नातक स्तर के प्रत्याशियों के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों में मई-जून 1970 में चार सप्ताह की अवधि के 19 ग्रीष्मकालीन विद्यालयों का आयोजन किया गया। स्नातकोत्तर प्रत्याशियों को उनके ग्रीष्मकालीन कार्यक्रमों के लिए 25 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं और उच्च शिक्षा के संस्थानों में भेजा गया।

अमरीका और इंग्लैंड से 15 विद्वानों के एक दल ने सितंबर 1970 में इस देश का दौरा किया। इनके लिए राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के स्थानीय प्रत्याशियों से मिलने और विचार विनिमय के लिए एक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अनुबंध

राष्ट्रीय विज्ञान-प्रतिभा खोज छात्रवृत्तियाँ

राज्य/क्षेत्र का नाम	प्रदान की गई छात्रवृत्तियों की संख्या		
	1968	1969	1970
1. आंध्र प्रदेश	4	11	3
2. असम	4	5	—
3. बिहार	7	14	6
4. गुजरात	4	7	3
5. हरियाणा	—	1	—
6. जम्मू तथा कश्मीर	—	—	1
7. केरल	32	11	13
8. मध्य प्रदेश	9	10	8
9. महाराष्ट्र	30	35	36
10. मैसूर	30	5	12
11. नागालैंड	—	—	—
12. उड़ीसा	3	2	2
13. पंजाब	3	2	6
14. राजस्थान	9	8	20
15. तमिलनाडु	16	21	28
16. उत्तर प्रदेश	46	25	15
17. पश्चिम बंगाल	55	77	54
18. अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह	—	—	—
19. चंडीगढ़	1	—	2
20. दिल्ली	100	124	149
21. गोवा	—	—	—
22. हिमाचल प्रदेश	1	1	1
23. लक्कादीव, मिनीकाय तथा अमीनदिवी द्वीप समूह	—	—	—
24. मणिपुर	1	—	—
25. नेफा	—	—	—
26. पांडिचेरी	—	—	—
27. त्रिपुरा	—	—	—
जोड़	355	359	359

परिशिष्ट 7

राष्ट्रीय एकीकरण परियोजना

शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय ने परिषद् को विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से स्कूल के छात्रों में राष्ट्रीय एकीकरण को प्रोत्साहित करने का कार्य सौंपा। कार्यक्रमों के सर्वोपरि उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

1. हमारी नानारूप संस्कृति तथा जीवन-पद्धतियों की विषमता और उसके कारणों की विवेचना करना;
2. हमारी मिश्रित भारतीय संस्कृति तथा चिन्तन का निर्माण करने में विभिन्न प्रदेशों में रहने वाले, विभिन्न भाषा-भाषी और विभिन्न धर्मों का अनुसरण करने वाले लोगों के योगदान को समझना;
3. इस बात को अनुभव करना कि देश की सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति भारत के विभिन्न प्रदेशों में सभी लोगों के सहयोग पर और उनके संतुलित विकास पर निर्भर करती है;
4. दूसरों के जन्म स्थान, धर्म और भाषा का विचार किए बिना उनकी तथा उनकी आस्थाओं का सम्मान करना;
5. देश के विभिन्न भागों की आर्थिक अन्तर्निर्भरता और अनेक सामान्य समस्याओं की, जिनका सामना देश को विभिन्न क्षेत्रों में करना पड़ता है, विवेचना करना, जैसे खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता, स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार के अवसर बढ़ाना और शिक्षा का प्रसार, आदि;
6. यह अनुभव करना कि हमारे संविधान में प्रतिष्ठथापित हमारे देश के आदर्शों, जैसे लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, कल्याणकारी राज्य में निहित सामाजिक न्याय और लोगों को कल्याण की प्राप्ति के लिए प्रत्येक नागरिक का सहयोग तथा प्रयास अवश्यक है; और
7. एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करना जिससे कि लोग राष्ट्रीय एकता की शक्तियों को सुदृढ़ करने की जिम्मेदारी स्वेच्छा से स्वीकार कर लें।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिषद् ने प्रतिवेदन वर्ष में जो प्रमुख कार्यक्रम प्रारंभ किए, वे निम्नलिखित हैं :

(क) छात्रों तथा अध्यापकों के लिए और केवल अध्यापकों के लिए अन्तर्राज्यीय शिविरों का आयोजन करना;

(ख) चुने हुए स्कूलों में 'हमारा भारत परियोजना' शुरू करना; और

(ग) छात्रों तथा अध्यापकों के लिए विषय से सम्बन्धित उपयुक्त सामग्री तैयार करना

(क) अन्तर्राज्यीय शिविरों का आयोजन

इस वर्ष में छात्रों तथा अध्यापकों के लिए सोलह अन्तर्राज्यीय शिविर आयोजित करने की योजना थी। मई तथा जून, 1970 के महीनों में छः शिविर आयोजित किए गए थे। इनमें से पंजिम, कसौली, और श्रीनगर में आयोजित तीन शिविर लड़कियों के लिए थे जबकि कोयम्बतूर, उदयपुर, दवांगरी और भुवनेश्वर में आयोजित शेष चार शिविर लड़कों के लिए थे। इन शिविरों में देश के विभिन्न भागों के 99 स्कूलों से आए लगभग 500 लड़के लड़कियों और लगभग 100 अध्यापकों ने भाग लिया।

गर्मियों में आयोजित इन शिविरों के बाद सर्दियों में 9 शिविर और आयोजित किए गए थे। इनमें से 8 शिविर छात्रों तथा अध्यापकों के लिए थे और एक शिविर प्रायोगिक आधार पर केवल अध्यापकों के लिए था। अध्यापकों के शिविर का मुख्य प्रयोजन स्कूलों में किए जाने वाले अनुवर्ती कार्यक्रम तैयार करना था। इन शिविरों का आयोजन नवम्बर-दिसम्बर, 1970 और जनवरी, 1971 में किया गया था। हैदराबाद, एर्नाकुलम और बड़ौदा में आयोजित तीन शिविर लड़कियों के लिए थे और औरंगाबाद, फिरोजपुर, इलाहाबाद, पटना और गौहाटी में आयोजित 5 शिविर लड़कों के लिए थे। कुल मिलाकर 600 छात्रों तथा 200 अध्यापकों ने इन शिविरों में भाग लिया।

शिविरों में उपयुक्त वातावरण उत्पन्न करने के लिए सभी शिविर निदेशकों तथा आयोजकों को स्थितिज्ञान कराया गया था।

शिविरों का विभिन्न प्रक्रियाओं से मूल्यांकन किया गया था जैसे, शिविर निदेशकों की रिपोर्टें, आयोजकों की प्रतिक्रियाएँ, भाग लेने वाले अध्यापकों तथा छात्रों की प्रतिक्रियाएँ, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् से आये दर्शकों का आकलन, शिविरों में आये विशिष्ट दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ, समाचारपत्रों में और आकाशवाणी द्वारा की गई समीक्षाएं, आदि।

छात्रों तथा अध्यापकों के शिविरों में जो कार्यक्रम किए गए उनमें शिविर में आए अन्य साथियों की भाषाएँ सीखना, वार्ताएँ, विचार-विमर्श और वाद-विवाद

प्रदर्शनियाँ, परिभ्रमण और यात्राएँ, शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा की प्रोन्नति के लिए कार्यक्रम; सांस्कृतिक तथा मनोरंजक कार्यक्रम आदि सम्मिलित थे।

23 दिसम्बर, 1970 से 1 जनवरी, 1971 तक 10 दिन की अवधि के लिए इन्दौर में केवल अध्यापकों के लिए एक अन्तर्राज्यीय शिविर का आयोजन किया गया था। पच्चीस अध्यापकों ने शिविर में भाग लिया। शिविर के उद्देश्य निम्न-लिखित थे :

(i) छात्रों तथा अध्यापकों के अन्तर्राज्यीय शिविरों के कार्यक्रम में सुधार करना;

(ii) अध्ययन कक्ष शिक्षण में सुधार करना; और

(iii) अनुवर्ती कार्यक्रम तैयार करना;

(iv) छात्रों के लिए सामग्री का विकास।

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यक्रम तैयार करने हेतु चार कार्यकारी समितियां बनाई गई थीं।

(ख) 'हमारा भारत परियोजना'

'हमारा भारत परियोजन' की योजना शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से स्कूल के बच्चों में राष्ट्रीय एकीकरण को प्रोत्साहित करने के समस्त कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। यह परियोजना समूचे देश के 100 चुने हुए स्कूलों में शुरू की गई थी।

इस परियोजना के उद्देश्य हैं (i) छात्रों तथा अध्यापकों के अन्तर्राज्यीय शिविरों में प्राप्त उपलब्धियों तथा अनुभवों को कार्यान्वित करना; (ii) प्रत्येक स्कूल में छात्रों तथा अध्यापकों के अन्तर्राज्यीय शिविरों के कार्य का अनुसरण करना; और (iii) छात्रों में राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास करने के लिए शिविरों में भाग लेने वाले सभी स्कूलों को परियोजना में शामिल करके छात्रों तथा अध्यापकों के अन्तर्राज्यीय शिविरों के प्रभाव-क्षेत्र का विस्तार करना।

उपर्युक्त उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, केवल वही स्कूल चुने गये थे जिन्होंने छात्रों तथा अध्यापकों के अन्तर्राज्यीय शिविरों के कार्यक्रमों में भाग लिया था।

(ग) छात्रों तथा अध्यापकों के उपयोग के लिए सामग्री तैयार करना

परियोजना के इस पहलू के अन्तर्गत छात्रों तथा अध्यापकों, दोनों के लिए उपयोगी सामग्री प्रकाशित करने का विचार है। इस वर्ष के दौरान (i) नेशन एंड

द स्कूल्स (राष्ट्र तथा स्कूल) और (ii) राष्ट्रीय एकता में कठपुतली नाटकों का योगदान नामक पुस्तिकाएँ प्रकाशित की गई थीं। देश के सभी भाषा वर्गों में से अनेक राष्ट्रीय गीतों का संग्रह किया गया था। छात्रों में राष्ट्रीय एकीकरण को प्रोत्साहित करने के विचार से 1970-71 में भूगोल के अध्यापकों के लिए एक हैंडबुक तैयार करने का कार्य शुरू किया गया था। इस हैंडबुक के प्रारम्भिक अध्याय शिक्षण एककों के भावी लेखकों को भेजे जाने के लिए तैयार हैं।

परिशिष्ट 8

अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष 1971 परिषद् द्वारा आरम्भ किए गए कार्यक्रम

परिषद् ने अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष 1970 को मनाने के लिए निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया।

1. प्राथमिक तथा कार्योन्मुख शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय गोष्ठी

यह गोष्ठी 9 से 11 नवम्बर, 1970 तक नई दिल्ली में हुई थी। इसमें राज्यों के शिक्षा विभागों, विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभागों, केन्द्रीय शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय, योजना आयोग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, स्वैच्छिक शैक्षिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों और प्राथमिक स्कूलों के चुने हुए अध्यापकों ने भाग लिया।

गोष्ठी ने सातवें दशक में देश में पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में विकास के रुख पर विचार किया और आठवें दशक में, प्राथमिक शिक्षा में कार्य-अनुभव, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी और गांधीवादी मूल्यों के स्थान के विशेष निर्देश से, अपनाए जाने वाले कार्यक्रमों तथा नीतियों के सम्बन्ध में सिफारिशें तैयार कीं। पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक शिक्षा विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में बहुत से विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत किए गए बत्तीस पत्रों पर गोष्ठी में विचार-विमर्श किया गया।

2. युवक विज्ञान कार्यकलाप के नेताओं के लिए युनेस्को एशियाई क्षेत्रीय गोष्ठी

यह गोष्ठी 14 से 18 दिसम्बर, 1970 तक नई दिल्ली में हुई थी और इस में 11 एशियाई देशों के 16 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इसने एशिया के देशों के विकास के परीक्षण के भीतर स्कूल के बाहर विज्ञान की शिक्षा की भूमिका और सम्बद्ध समस्याओं पर विचार-विमर्श किया।

3. विज्ञान के प्रस्तुतीकरण और स्कूल के बाहर वैज्ञानिक कार्यकलापों के विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समन्वयकारी समिति की महासभा

भारत सरकार ने विज्ञान के प्रस्तुतीकरण और स्कूल के बाहर वैज्ञानिक कार्यकलापों के विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समन्वयकारी समिति की महासभा

का, जो 18 से 21 दिसम्बर, 1970 तक नई दिल्ली में हुई थी, आतिथ्य किया। सभा के आयोजन का कार्य राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को सौंपा गया था। 22 देशों के तीस प्रतिनिधियों ने इस सभा में भाग लिया। परिषद् के विज्ञान शिक्षा विभाग के कर्मचारिवृन्द ने भी प्रतिनिधियों, प्रेक्षकों और दर्शकों के रूप में बातचीत में भाग लिया।

4. शिक्षा में जन-सम्पर्क साधनों सम्बन्धी राष्ट्रीय गोष्ठी

शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय की ओर से, परिषद् के शिक्षण सामग्री विभाग ने 23 से 25 मार्च, 1971 तक नई दिल्ली में शिक्षा जन-सम्पर्क साधनों सम्बन्धी राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया। देश के विभिन्न भागों के शिक्षा तथा जन-सम्पर्क साधन के क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने इस गोष्ठी में भाग लिया। इस गोष्ठी में अमरीका के दो जन-सम्पर्क साधन सलाहकारों ने भी भाग लिया।

5. आठवें दशक में प्रौढ़ शिक्षा सम्बन्धी राष्ट्रीय गोष्ठी

आठवें दशक में प्रौढ़ शिक्षा के सम्बन्ध में 8 से 10 सितम्बर, 1970 तक बंगलौर में एक राष्ट्रीय गोष्ठी का आयोजन किया गया था। सारे देश में प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले 60 से अधिक प्रतिनिधियों ने इस गोष्ठी में भाग लिया। भाग लेने वालों ने निम्नलिखित चार विषयों पर विचार-विमर्श किया :

(i) प्रौढ़ों में निरक्षरता को दूर करने के लिए सामूहिक या अभियानात्मक मार्ग—उसके लिए अपेक्षित अभिकरण, कार्मिक, सामग्री और वित्त-प्रबन्ध;

(ii) सुविशिष्ट मार्ग और शैक्षिक निरक्षरता—कृषि, उद्योग, वाणिज्य और सेवाएँ;

(iii) प्रौढ़ शिक्षा में स्वैच्छिक संस्थाओं की भूमिका और साक्षरता के अनुवर्ती कार्यक्रम; और

(iv) प्रौढ़ शिक्षा में विश्वविद्यालयों तथा कालेजों की भूमिका और साक्षरता के बाद अनुवर्ती कार्यक्रम।

6. कोमेनियस की 300 वर्षीय पुण्यतिथि पर समारोह

परिषद् ने 16 नवम्बर, 1970 को जोहन एमोस कोमेंसकी, जो शिक्षा जगत में कोमेनियस के नाम से सुविख्यात हैं, की 300 वर्षीय पुण्यतिथि मनाई। परिषद् के अध्यापक शिक्षा विभाग ने इस अवसर पर कोमेनियस पर एक छोटी सी पत्रिका प्रकाशित थी, जिसकी प्रतियां इस समारोह में भाग लेने वाले सदस्यों में वितरित की गई थीं। इस समारोह में कोमेनियस के जीवन और उनकी रचनाओं के बारे में पत्र भी पढ़े गये। चेकोस्लोवाकिया के महामहिम राजदूत इस समारोह के मुख्य अतिथि थे।

परिशिष्ट 9

व्यावसायिक शैक्षिक संगठन को अनुदान (1970-71)

कार्यक्रम मंत्रणा समिति ने, जिसने रिपोर्टाधीन वर्ष में नियमों तथा प्रक्रियाओं को तैयार किया, सिफारिश की कि व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों के निम्नलिखित प्रकार के कार्यों में सहायता दी जा सकती है :

(i) प्रयोगात्मक या शैक्षिक रूप से महत्वपूर्ण परियोजनाएँ;

(ii) पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त शैक्षिक साहित्य, जिसमें शैक्षिक पत्रिकाएँ भी सम्मिलित हैं, का प्रकाशन; और

(iii) वार्षिक नवीकरण पाठ्यक्रमों, गोष्ठियों, कर्मशालाओं, सम्मेलनों और शैक्षिक प्रदर्शनियों का आयोजन।

विभिन्न व्यावसायिक शैक्षिक संगठनों को 1970-71 के दौरान दी गई वित्तीय सहायता का ब्यौरा नीचे दिया गया है :

क्रम संख्या	व्यावसायिक शैक्षिक संगठन का नाम	स्वीकृत राशि (रुपयों में)
1.	भारतीय अभिभावक-अध्यापक राष्ट्रीय संघ	4,000.00
2.	बाल चित्र संस्थान	7,000.00
3.	नेहरू प्रयोगात्मक केन्द्र	3,000.00
4.	भारतीय भूगोल अध्यापक संघ	4,000.00
5.	विज्ञान शिक्षा विकास संघ	3,500.00
6.	भारतीय गणित अध्यापक संघ	3,400.00
7.	दिल्ली गणित अध्यापक संघ	800.00
8.	अखिल भारतीय विज्ञान अध्यापक संघ	8,200.00
9.	बं विज्ञान परिषद	2,000.00
10.	भारतीय अध्यापक-शिक्षक संघ	2,400.00
11.	भारतीय स्कूल-पूर्व शिक्षा संघ	1,800.00
	कुल	40,100.00

परिशिष्ट 10

अनुसंधान अध्ययन, अन्वेषण और सर्वेक्षण
(1970-71)

रिपोर्टाधीन वर्ष में हस्तगत परियोजनाओं के सम्बन्ध में और प्रगति हुई थी और कुछ नए अध्ययन और सर्वेक्षण भी आरंभ किये गये थे। इस वर्ष के दौरान पूरे हुए या आरंभ किए गए अध्ययनों, अन्वेषणों और शैक्षिक सर्वेक्षणों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है :

क. अध्ययन

1. परीक्षण विकास

1 01. सहकारी परीक्षण विकास परियोजना

(क) बुद्धि के समूह परीक्षण

इस परियोजना का उद्देश्य 7+ से 9+, 9+ से 11+, 11+ से 13+ और 13+ से 16+ वर्ष की आयु के बच्चों के लिए समांतर आकार और आंशिक आच्छादन सहित बुद्धि के चार समूह परीक्षण विकसित करना है। 1970-71 में पूर्वपरीक्षण अध्ययनों की तथ्य सामग्री का विश्लेषण किया गया था और परीक्षणों के अंतिम स्वरूपों के लिए मदें चुनीं गईं थीं।

(ख) व्यावसायिक अभिरुचि सूची तैयार करना

इस परियोजना का उद्देश्य अनेक व्यवसायों के लिए हिन्दी, मराठी और कन्नड़ में मापनियों सहित एक व्यावसायिक अभिरुचि सूची तैयार करना है। पूर्व-परीक्षण अध्ययनों की तथ्य सामग्री का विश्लेषण किया गया था और सूची के लिए अंतिम स्वरूप के लिए मदें चुनी गईं थीं। दस व्यवसायों के लिए मापनियाँ भी तैयार की गईं थीं।

(ग) विभेदक अभिक्षमता परीक्षण माला का विकास

कुछ समय पहले, परिषद् की जी० ए० आर० पी० योजना के अधीन जबलपुर के कालेज आफ एजुकेशनल साइकोलाजी द्वारा मध्य प्रदेश में डेल्टा क्लास के लिए एक विभेदक अभिक्षमता परीक्षण माला निर्मित तथा मानकीकृत की गई थी। इन परीक्षणों का अभिप्राय हिन्दी भाषी राज्यों में आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले

छात्रों की विकसित योग्यताओं को मापना है और इनका प्रयोग छात्रों के शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन के लिए भी किया जा सकता है। रिपोर्टाधीन वर्ष में, परियोजना पर जो कार्य किया गया, वह निम्नानुसार है :

(i) मूल परीक्षणों, तकनीकी रिपोर्ट, मूल तथ्य सामग्री आदि का अध्ययन ;

(ii) नमूने के तौर पर लिए गये 236 छात्रों के 18 उपपरीक्षणों में प्राप्तांकों का कारक विश्लेषण ;

(iii) दिक-प्रत्यक्ष के त्रिपक्षीय परीक्षण की निर्मिति ;

(iv) दिक-प्रत्यक्ष के द्विपक्षीय परीक्षण की निर्मिति ;

(v) जोड़ और घटाने के परीक्षणों का नवरूपण ;

(vi) मूल माला में से कुछ उपपरीक्षणों का सम्पादन, पाण्डुलिपियों की तैयारी, परीक्षण पुस्तिकाओं का मुद्रण ; और

(vii) दो राज्यों अर्थात् उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान में परीक्षणों का प्रशासन ।

1.02 'देशनांक तथा करणी' सम्बन्धी नैदानिक परीक्षणों का विकास करना

परियोजना का सामान्य उद्देश्य 'देशनांक तथा करणी' से सम्बन्धित नैदानिक परीक्षणों का विकास करना है। परियोजना के दो विशिष्ट उद्देश्य हैं (i) इस विषय को सीखने में छात्रों की कठिनाइयों को जानना, और (ii) देशनांक तथा करणी सम्बन्धी नैदानिक परीक्षणों का अध्यापकों को अन्य कठिन विषयों के लिए अपने निजी परीक्षण विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रयोग करना । इस परियोजना पर प्रारम्भिक कार्य रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान शुरू किया गया था ।

2. मार्गदर्शन तथा परामर्श

2.01. व्यवसाय अध्ययन

इस परियोजना का उद्देश्य आठवीं तथा ग्यारहवीं कक्षाओं में व्यवसायों के शिक्षण की विभिन्न पद्धतियों का अध्ययन तथा मूल्यांकन करना है। 1970-71 में, तीन कृत्यक परिवारों अर्थात् मानविकी धन्धों, विज्ञान धन्धों और वाणिज्य धन्धों के सम्बन्ध में साहित्य तैयार किया गया था। कार्यजगत के स्थितिज्ञान और आत्म-विश्लेषण के सम्बन्ध में छः छः पत्रिकाएँ तैयार की गई थीं। इनके अलावा विशिष्ट धन्धों के सम्बन्ध में पैंतीस पोस्टर/चार्ट भी तैयार किए गये थे ।

2.02 'व्यवसाय परिचय माला' क्रम में व्यावसायिक सूचना सामग्री

इस परियोजना का उद्देश्य हिन्दी में ऐसा व्यावसायिक सूचना साहित्य तैयार करना है जो आठवीं तथा नवीं कक्षा के छात्रों के लिए उपयोगी हो। रिपोर्टाधीन वर्ष में, इस क्रम में चार पुस्तिकाएँ तैयार करके समीक्षा के लिए भेजी गई थीं।

2.03. छात्रों के लिए मार्गदर्शन साहित्य तैयार करना

इस परियोजना का उद्देश्य ऐसा सरल मार्गदर्शन साहित्य तैयार करना है जो माध्यमिक स्कूलों के लिए उपयोगी हो। पहले से तैयार की गई चार पुस्तिकाओं में, अर्थात 'ह्वाट मेक्स यू ए गुड रीडर,' 'हाउ यू कैन लर्न बैटर,' 'हाउ टू गैट एलांग विद अदर्स' और 'हाउ टू स्टडी इफेक्टिवली' में एक बाहरी समीक्षक की टिप्पणियों तथा सुझावों के आधार पर संशोधन किया गया था।

3. शिशु विकास

3.01 2½ से 5 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों के लिए प्रतिमान परियोजना का विकास

इस परियोजना का उद्देश्य 2½ से 5 वर्ष के आयु-वर्ग के भारतीय बच्चों में विकास के मानक तैयार करना है। यह अध्ययन विभिन्न वर्गीय तथा देशांतरीय ढंग से किया जा रहा है। अनुकूली विकास और वैयक्तिक सामाजिक विकास के पहलुओं पर रिपोर्टें तैयार की गई थीं। भाषा के विकास और प्रेरक विकास के पहलुओं पर भी रिपोर्टें तैयार की गई थीं।

3.02 5½ से 11 वर्ष के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए प्रतिमान परियोजना का विकास

यह परियोजना 1969-70 में शुरू की गई थी। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य 5½ से 11 वर्ष की आयु के भारतीय बच्चों की शिक्षा के प्रक्रम में सुधार करने के विचार से इस आयु-वर्ग के विकास को समझना है। इस अध्ययन का लक्ष्य घर तथा स्कूल में पर्यावरणगत प्रक्रम चरों के बीच सम्बन्धों का अन्वेषण करना तथा स्कूली उपलब्धि, संज्ञानात्मक विकास और सामाजिक परिपक्वता पर इनके प्रभाव का अध्ययन करना है। इसके अलावा, उपलब्ध तथ्य सामग्री के आधार पर विकास के विभिन्न पहलुओं के लिए मानक भी तैयार किए जाएँगे। यह अध्ययन कुछ चुने हुए विश्वविद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं के सहयोग से बीज-अध्ययन के रूप में शुरू किया गया है। अभिप्राय यह है कि बीज-अध्ययन को आंशिक रूप से आच्छादित करने वाले अनेक अध्ययन विभिन्न विश्वविद्यालयों में स्थापित किए जाने वाले सहकारी केन्द्रों के सहयोग से किए जाने चाहिये। रिपोर्टाधीन वर्ष में इस परियोजना की पहुंच तथा कार्य पद्धति पर विचार करने के लिए सहकारी केन्द्रों के अध्यक्षों की एक बैठक की गई थी। विभिन्न केन्द्रों पर जिन विकासात्मक पहलुओं

के बारे में अन्वेषण किया जाना है उन्हें अंतिम रूप दिया गया था और केन्द्रों ने साधन निर्माण तथा प्रायोगिक अध्ययनों के सम्बन्ध में कार्य शुरू कर दिया।

3.03 स्कूल पूर्व वर्गों में दो विधियों से शिक्षित संकल्पना निर्माण का अध्ययन

यह अध्ययन चल रहा है और इसका उद्देश्य निर्देशित अनुभवों के द्वारा तथा अन्य अनुभवों के संदर्भ में बोध-प्रशिक्षण के द्वारा, जो स्कूल-पूर्व शिक्षा कार्यक्रम के भाग हैं संप्रत्यय निर्माण में तुलनात्मक प्रभावशीलता और विलगन में बोध प्रशिक्षण के वैयक्तिक सामाजिक समायोजन का पता लगाना है। रिपोर्टाधीन वर्ष में, तथ्य सामग्री का विश्लेषण जारी रखा गया।

4. किशोरावस्था

4.01 किशोरों के लिए व्यक्तित्व सूची का विकास

इस अध्ययन का उद्देश्य किशोरों के लिए एक व्यक्तित्व सूची तैयार करना है। इस वर्ष के दौरान सूची को प्रैस में भेजने के लिए अंतिम रूप दिया गया था।

4.02 किशोरों की प्राधिकरण के प्रति अभिवृत्ति-अध्ययन हेतु मापक्रम का विकास

इस अध्ययन का उद्देश्य किशोरों की प्राधिकरण के प्रति अभिवृत्ति के मापदण्ड का विकास करना है। प्रतिवेदन वर्ष में, विभिन्न एकांशों को आज़माया गया तथा तथ्य सामग्री संहिताबद्ध की गई और उसे अनुक्रिया पत्रकों पर रूपांतरित किया गया। एकांश-विश्लेषण पर कार्य भी आरम्भ किया गया।

5. सामाजिक मनोविज्ञान

5.01 प्रति पुष्टि के द्वारा अध्यापक के व्यवहार में परिवर्तन करना

इस अध्ययन के उद्देश्य हैं : (i) अध्यापक के कुछ आदर्श अध्ययन कक्षीय व्यवहारों का उपयोग चार प्रकार की प्रतिपुष्टियों अर्थात अध्यापक द्वारा आत्म-मूल्यांकन, उसके समकक्ष अध्यापकों द्वारा मूल्यांकन, छात्रों द्वारा अध्यापक के मूल्यांकन और बाह्य प्रेक्षकों द्वारा अध्यापक के मूल्यांकन के लिए उनका अभिज्ञान करना ; (ii) अध्यापक के अध्ययन कक्षीय व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए सर्वाधिक प्रभावी प्रतिपुष्टि प्रणाली की आज़माइश करना तथा उसे स्थापित करना।

1970-71 में, बीकानेर के 16 स्कूलों के 154 अध्यापकों तथा लगभग 2000 छात्रों से एकत्र की गई परीक्षण पूर्व तथ्य सामग्री के सम्बन्ध में परीक्षणोत्तर तथ्य सामग्री का गुणात्मक तथा परिमाणात्मक निर्वचन किया गया था। इसके आधार पर एक प्रारूप प्रतिवेदन तैयार किया गया था।

5.02 शिक्षा के सामाजिक मनोविज्ञान के सम्बन्ध में कुछ चुने हुए अनुसंधानों की समीक्षा

इस परियोजना का उद्देश्य अध्यापकों के उपयोगार्थ शिक्षा के सामाजिक मनोविज्ञान के सम्बन्ध में कुछ चुने हुए अनुसंधानों की समीक्षा करना है। रिपोर्टाधीन वर्ष में सम्बन्धित सामग्री पृथक की गई थी।

5.03 छात्रों के अध्ययन व्यवहार में सुधार के लिए सामाजिक पुनर्बलन तकनीक का प्रयोग

इस परियोजना का उद्देश्य छात्रों के अध्ययन की आदतों के सुधार के लिए सामाजिक पुनर्बलन तकनीक का प्रयोग करना है जिस से कि वे अधिक अच्छा शैक्षिक निष्पादन प्रस्तुत कर सकें। इस अध्ययन के बारे में प्रारम्भिक कार्य इस वर्ष के दौरान पूरा किया गया था।

5.04 अध्यापकों तथा छात्रों द्वारा यथा अनुभूति अध्यापक छात्र सम्बन्ध

यह अध्ययन अध्ययनकक्षीय विन्यास में अन्तयर्वैक्तिक अनुभव के बारे में है जिसकी योग्यता तथा छात्रों के बीच बढ़ते हुए संचार सम्बन्धी व्यवधान के कारण आज की स्कूली शिक्षा से विशेष सम्बन्ध है। रिपोर्टाधीन वर्ष में, इस अध्ययन के लिए भारतीय स्कूलों में कुछ प्रतिनिधि अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों को चित्रित करने वाली सचित्र सूची और एक चिह्नांकन सूची तैयार की गई थी। इन साधनों की परीक्षा करने और प्रेक्षण तथा प्रत्यक्षालाप करने के लिए दिल्ली के एक स्कूल में विभिन्न आयु-वर्ग के छात्रों का एक प्रायोगिक अध्ययन भी किया गया था।

6. अधिगम

6.01 शिक्षित प्रौढ़ों द्वारा द्वित्तीय भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए कार्यक्रमित अधिगम तकनीकों का उपयोग

इस परियोजना के अधीन, कार्यक्रमों के दो सैट अर्थात हिन्दी भाषी प्रौढ़ों के लिए बंगला और बंगला भाषी प्रौढ़ों के लिए उड़िया, तैयार किए जा रहे हैं। प्रत्येक सैट में एक लिपि और एक व्याकरण कार्यक्रम होगा। प्रतिवेदन वर्ष में, बंगला लिपि के लिए एक कार्यक्रम तैयार किया गया था। बंगला से उड़िया के लिए शब्द-भण्डार सूची भी संकलित की गई।

6.02 स्कूलों में द्वित्तीय भारतीय भाषाओं के शिक्षण/अधिगम के लिए विधि तथा सामग्री का विकास करना

यह एक सहकारी अनुसंधान परियोजना है जो राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् और तीन बाह्य केन्द्रों द्वारा संयुक्त रूप से चलाई जा रही है। इसका उद्देश्य फिल्टर भाषाओं के माध्यम से द्वितीय भाषा के रूप में सीखी

जाने वाली छः भाषाओं अर्थात मराठी भाषी लोगों के लिए हिन्दी, गुजराती भाषी लोगों के लिए हिन्दी, मणिपुरी भाषी लोगों के लिए हिन्दी, हिन्दी भाषी लोगों के लिए अंग्रेजी, तमिल भाषी लोगों के लिए अंग्रेजी और हिन्दी भाषी लोगों के लिए तमिल, के लिए शिक्षण की रीतियों तथा सामग्री के छः घटक विकसित करना है। प्रतिवेदन वर्ष में, स्कूलों में परीक्षा के लिए पाठ्यपुस्तकों, अध्यापक-दर्शिकाओं, अनुपूरक रीडरों, शब्दकोश और टेपों से युक्त प्रारूप प्रारंभिक पाठ्यक्रम संवेष्टन तैयार किये गये थे जिनके अधिगम की अवधि लगभग 100-100 घंटे थी।

6.03 कार्यक्रमबद्ध अधिगम के संदर्भ में सामूहिक गतिक्रम के विरुद्ध व्यक्ति की प्रभावशीलता

इस परियोजना के अन्तर्गत कार्यक्रम बद्ध अधिगम के सामूहिक गतिक्रम के विरुद्ध सापेक्ष प्रभावकारिता का अध्ययन करने का प्रस्ताव है। वैयक्तिक गतिक्रम में प्रस्तुतीकरण की विधि पाठ है। प्रयुक्त होने वाली सामग्री सांख्यिकी तथा बीजगणित में कार्यक्रमबद्ध इकाइयाँ हैं जिनका प्रयोग क्रमशः कक्षा 8 तथा 11 के छात्रों के लिए होता है। प्रतिवेदन वर्ष में, सांख्यिकी की उपलब्ध सामग्री की अनुकूलीकरण के लिए परीक्षा की गई थी। परीक्षा के परिणामस्वरूप नए सिरे से सामग्री लिखने की आवश्यकता सामने आई, जो पूरी कर दी गई थी। इस सामग्री की दो इकाइयाँ लिखी गई थीं।

6.04 स्कूल के बच्चों में प्रतिनिधान की रीतियाँ

इस अध्ययन का उद्देश्य बच्चों की उस आयु का निश्चय करना है जिसमें रूढ़िवादी प्रतिनिधान के स्थान पर प्रतीकात्मक निरूपण के प्रभाव का उदय होता है। इस अध्ययन में यह पता लगाने का भी प्रयास किया गया है कि क्या लिंग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति और ग्रामीण-शहरी पृष्ठभूमि जैसे चरों का बीच की आयु पर प्रभाव पड़ता है। दिल्ली के राजकीय उच्चतर माध्यमिक स्कूलों से एकत्र की गई प्रारम्भिक परीक्षा सम्बन्धी तथ्य सामग्री के आधार पर इस वर्ष के दौरान साधनों में रूपभेद किया गया था।

6.05 अंग्रेजी जानने वाले व्यक्तियों को हिन्दी पढ़ाने के लिए रेखाबद्ध तथा योजनाबद्ध कार्यक्रमों के गुणावगुण का अध्ययन करने के लिए अन्वेषण

इस अन्वेषण का उद्देश्य अंग्रेजी जानने वाले व्यक्तियों को हिन्दी पढ़ाने के लिए दो स्वयं शिक्षणात्मक कार्यक्रम—एक रेखाबद्ध पद्धति पर और दूसरा योजनाबद्ध पद्धति पर—तैयार करना है जिनके अन्तर्गत लगभग 10 घंटे की शिक्षण सामग्री होगी जिसमें उद्देश्यों, सैद्धांतिक परीक्षणों और विषय-वस्तु की निरन्तरता बनी रहे और उसके बाद प्रत्येक प्रकार के कार्यक्रम की कार्यकुशलता का इस दृष्टि से अध्ययन करना है कि उसके माध्यम से भाषा के सीखने में कितना समय लगा है, योग्यता का कैसा स्तर प्राप्त किया जा सका है और उसे तैयार करने और लागू करने में

में कितना खर्च आया है। रिपोर्टाधीन वर्ष में, संरचना तथा शब्द भण्डार, जिनकी शिक्षा इस कार्यक्रम के अन्तर्गत दी जानी है, की सूचियाँ तैयार की गई थीं। प्रथम प्रारूप पाठ भी लिखा गया था।

7. प्रतिभा

भारत के माध्यमिक स्कूलों में प्रतिभा का अभिज्ञान-अनुदैर्घ्य अध्ययन

इस परियोजना के उद्देश्य हैं : (i) 1963-66 के दौरान विकसित प्रतिभा के अभिज्ञान के परीक्षणों में संशोधन करना; और (ii) प्रतिभा और आयु, लिंग, सामाजिक स्थिति, व्यक्तित्व और स्कूली चरों के बीच परस्पर सम्बन्धों का अध्ययन करना। 1970-71 के दौरान प्रतिभा सम्बन्धी अनुदैर्घ्य अध्ययनों की एक शृंखला पूरी की गई थी और अगले तीन वर्षों के लिए एक और शृंखला शुरू की गई थी। अनुदैर्घ्य अध्ययनों की पूरी की गई शृंखला के लिए अंक देने और उसकी तथ्य सामग्री के विधायन का कार्य भी शुरू किया गया था।

8. शैक्षिक उपलब्धि (एक अन्तर्राष्ट्रीय परियोजना)

शैक्षिक उपलब्धि के मूल्यांकन सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की इस अनुसंधान परियोजना पर भारत समेत बीस देशों द्वारा संयुक्त रूप से कार्य आरंभ किया गया है। इस परियोजना का मुख्य प्रयोजन स्कूलों के संगठन तथा संरचना और उनकी सामग्री सम्बन्धी सुविधाओं, अध्यापकों की योग्यताओं; अनुभव, अभिप्रेरणा और अभिवृत्तियों और छात्रों की किन्हीं स्कूली विषयों में उपलब्धि सहित पृष्ठभूमि जैसे परिवर्तनशील तथ्यों का वर्णन करना है। 1970-71 के दौरान मुख्य परीक्षण के नमूने को अंतिम रूप दिया गया था और विहित शर्तों के अधीन परीक्षार्थियों के बारे में मुख्य परीक्षण तथा अपेक्षित तथ्य सामग्री के संग्रहण को सुनिश्चित करने के लिए संस्थाओं के अध्यक्षों के साथ बैठकें की गई थीं।

9. शिक्षा का इतिहास

शिक्षा के माध्यम सम्बन्धी विवाद का ऐतिहासिक अध्ययन

9.01 इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य हैं : (i) इस समस्या के मूल सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों का पता लगाना; (ii) इस बात का पता लगाना कि ये कारक कैसे विकसित हुए; और (iii) इस समस्या को सुलझाने के लिए समय-समय पर किए गए उपायों का मूल्यांकन करना। रिपोर्टाधीन वर्ष में, 1871 तक की अवधि के बारे में चार अध्याय तैयार किए गए। शेष अध्यायों के सम्बन्ध में भी कार्य जारी रखा गया।

9.02 स्वाधीनता के पश्चात् दिल्ली के स्कूलों में सामाजिक अध्ययन का शिक्षण

इस अध्ययन के उद्देश्य हैं : (i) दिल्ली के स्कूलों की पाठ्यचर्या में सामाजिक

अध्ययन की विभिन्न शाखाओं के पाठ्यविवरण पर बदलती हुई सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों के प्रभाव को सुनिश्चित करना; (ii) इन विषयों की पाठ्य-पुस्तकों तथा निर्देश पुस्तकों का मूल्यांकन करना; (iii) इस बात पर विचार करना कि क्या इन विषयों को पढ़ाने वाले अध्यापकों के पास उचित साधन हैं और क्या उन्हें नए विषयों की अपेक्षाओं की जानकारी देने के लिए कदम उठाए गए हैं; और (iv) इस बात की जाँच करना कि क्या शैक्षिक प्रशासकों को अध्ययन की इस शाखा में परिवर्तन लाने की हाल की माँग के बारे में पता है। इस अध्ययन के लिए अपेक्षित अधिकांश तथ्य सामग्री इस वर्ष के दौरान एकत्र की गई थी।

10. तुलनात्मक शिक्षा

10.01 माध्यमिक शिक्षा में प्रवेश और विषयों के वरण पर दबाव

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य हैं : (i) विभिन्न देशों में माध्यमिक शिक्षा में प्रवेश पर तथा स्कूल के विषयों के वरण पर डाले जाने वाले दबावों की प्रकृति का विश्लेषण करना; और (ii) व्यष्टिक सफलता तथा वरण की स्वतंत्रता के परिमाण का पता लगाना। इस अध्ययन का प्रथम भाग इस वर्ष के दौरान पूरा किया गया था।

10.02 कुछ चुने हुए देशों में भाषा सम्बन्धी नीतियों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन

रिपोर्टाधीन वर्ष में, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया था और एक अनुसंधान डिजाइन तैयार किया गया था।

11. शिक्षा का दर्शन

चरित्र तथा व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया के रूप में शिक्षा

यह एक ऐसी समस्या का दर्शनात्मक अध्ययन है जिसके सम्बन्ध में पहले सामान्यतः मनोवैज्ञानिकों तथा समाजशास्त्रियों द्वारा अध्ययन किया जाता रहा है। इसमें व्यक्तित्व का मूल्यात्मक विवरण, व्यक्तित्व का वास्तविक आधार और ऐसे विभिन्न मूल्य, जिनसे विकसित व्यक्तित्व बनता है, प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसमें दर्शनात्मक दृष्टिकोण से व्यक्तित्व के कुछ महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का निरूपण किया गया है। इसमें शिक्षा को किसी विकसित व्यक्तित्व को रूप प्रदान करने की एक प्रभावी प्रक्रिया बनाने के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं। रिपोर्टाधीन वर्ष में, सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया था और रिपोर्ट के कुछ अध्याय तैयार किए गए थे।

12. पाठ्यचर्या तथा मूल्यांकन

12.01 मानक हिन्दी में भाषागत विश्लेषण और ध्वन्यात्मक परिवर्तनों का विवरण

मानक हिन्दी में ध्वन्यात्मक परिवर्तनों का अध्ययन करने के लिए समूच

हिन्दी भाषी क्षेत्र को उन्नीस बोली क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक वाक समुदाय के तीन विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन सूचक अभिलिखित किए जाने हैं। रिपोर्टाधीन वर्ष में उन्नीस के उन्नीस बोली क्षेत्रों से वाक-नमूने एकत्र किए गए थे और उनका अनुलेखन अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला में किया गया था। परियोजना के दूसरे चरण के अधीन योजनाबद्ध कार्य की अन्य मदें, जैसे सूचकों तीन स्तरों पर तथ्य सामग्री का संग्रहण तथा विश्लेषण और प्रत्येक बोली क्षेत्र की रिपोर्टों की तैयारी, भी पूरी की गई थीं।

12.02 भाषा सम्बन्धी मूलभूत अनुसंधान

भाषा विज्ञान, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान, गणित, काव्यशास्त्र, तांत्रिक शरीर क्रिया विज्ञान, योग और धर्म के क्षेत्रों से भाषा की आधारभूत प्रकृति सम्बन्धी विचार जानने के लिए 22 से 27 मार्च, 1971 तक एक गोष्ठी का आयोजन किया गया था। इन क्षेत्रों के लगभग 25 विद्वानों ने इस गोष्ठी में भाग लिया और प्रबंध प्रस्तुत किए। इन प्रबंधों का सम्पादन किया जा रहा है, जो पुस्तक के रूप में प्रकाशित किए जाएँगे।

12.03 विभिन्न राज्यों/संघक्षेत्रों में स्कूली पाठ्यचर्या में भाषाओं की स्थिति का अध्ययन

स्कूल स्तर पर भाषा के शिक्षण के विभिन्न पहलुओं सम्बन्ध में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और चण्डीगढ़ को छोड़कर सभी राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों से आवश्यक सूचना एकत्र की गई थी। इन राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों से तथ्य सामग्री एकत्र करने का कार्य भी शुरू किया गया था। जिन राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के सम्बन्ध में तथ्य सामग्री उपलब्ध थी, उनकी पृथक-पृथक रिपोर्टें तैयार की गई थीं।

12.04 आंतरिक आकलन कार्यक्रम का मूल्यांकन करने के लिए अध्ययन

इस वर्ष के दौरान राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सहयोग से राजस्थान में आंतरिक आकलन कार्यक्रम का मूल्यांकन करने की योजना बनाई गई थी। इस बोर्ड ने उस राज्य के सभी माध्यमिक स्कूलों में आंतरिक आकलन की प्रणाली आरंभ की हुई है।

12.05 राज्यों के माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा संचालित हाई स्कूल/उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं के परिणामों का विश्लेषण

इस वर्ष के दौरान राज्यों के माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा संचालित परीक्षाओं के विश्लेषण के लिए वार्षिक प्रत्यावर्ती अध्ययन किया गया था।

12.06 प्राथमिक स्कूलों के 6-11 वर्ष के आयु-वर्ग के छात्रों के व्यक्तित्व सम्बन्धी चुने हुए विशेषकों के आकलन के निर्धारण की मापनियों का विकास

इस वर्ष के दौरान इस परियोजना की रिपोर्ट में और संशोधन किए गये तथा उसे छपवाया गया। एन० आई० ई० एक्सपेरिमेंटल स्कूल, नई दिल्ली में और इन्दौर के कुछ चुने हुए स्कूलों में निर्धारण मापनियों का पूर्वपरीक्षण जारी रखा गया था।

12.07 प्रयोगात्मक संचीय वृत्त पत्रक का परिष्कार

एन० आई० ई० एक्स्पेरिमेंटल स्कूल, नई दिल्ली में तथा इलाहाबाद के कुछ चुने हुए प्राथमिक स्कूलों में प्रयोगात्मक संचयी वृत्त पत्रक का पूर्णपरीक्षण जारी रखा गया। वृत्त पत्रक में अपेक्षित उपांतरणों के बारे में पूर्वपरीक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले अध्यापकों के साथ विचार-विमर्श किया गया था। प्रयोगात्मक वृत्त पत्रक की संभाव्यता तथा उपयोगिता के सम्बन्ध में विभिन्न राज्यों से प्राप्त टिप्पणियों पर भी विचार किया गया था।

12.08 प्राथमिक छात्र विकास की विभिन्न विमाओं (विद्यालीय तथा गैर विद्यालीय) का अवस्थान और मूल्यांकन के सिद्धांत का विकास

साहस, सत्य, सार्वजनिक प्रेम, समाज सेवा, शुद्धता, शारीरिक कार्य की प्रतिष्ठा, सभी धर्मों के लिए आदर, नम्रता, शांति और आह्लाद जैसे मूल्यों की स्कूल अवस्थान सम्बन्धी विमाओं का अभिज्ञान किया गया था। "प्राथमिक स्कूलों में आध्यात्मिक नैतिक और सामाजिक मूल्य" नामक हैंडबुक का संशोधित प्रारूप भी तैयार किया गया था।

12.09 एम० एड० शैक्षिक मनोविज्ञान के पाठ्य विवरण में सुधार

एक गोष्ठी का आयोजन किया गया था जिसमें अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लेकर एम० एड० के पाठ्यक्रम के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा विहित शैक्षिक मनोविज्ञान के वर्तमान पाठ्यविवरण का अध्ययन किया। पाठ्यविवरणों के अध्ययन के आधार पर, भाग लेने वाले अध्यापक-शिक्षकों ने बारह अनिवार्य पर्चों तथा चार ऐच्छिक पर्चों के लिए आदर्श पाठ्यविवरण तैयार किए। पाठ्यविवरण के साथ लगाई जाने वाली प्रयोगों की सूची और पठन-सामग्री की सूची भी तैयार की गई थीं।

12.10 बाल साहित्य मूल्यांकल शोध-सामग्री

शिक्षा तथा युवक सेवा मंत्रालय पिछले कुछ समय से बाल साहित्य के लिए एक राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता का संचालन करता रहा है। मंत्रालय ने अब तक ऐसी 15 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया है। अब यह योजना इसके क्रियान्वयन के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को हस्तांतरित कर दी गई है। सोलहवीं प्रतियोगिता के क्रियान्वयन की दिशा में आगे बढ़ते हुए 1970-71 में मूल्यांकन के लिए शोध-सामग्री विकसित की गई थी। इस शोध-सामग्री में मूल्या-

त्मक सिद्धांत दिए गए हैं और प्रत्येक सिद्धांत पर बल दिया जाएगा। यह शोध सामग्री इस प्रतियोगिता के लिए पुस्तकों के मूल्यांकन में उपयोग के लिए राज्यों को भेजी गई है।

13. अध्यापक शिक्षा

13.01 शिक्षा कालेजों में अनुसंधान का संवर्धन

रिपोर्टाधीन वर्ष में, अध्यापक-शिक्षकों के लिए दो गोष्ठियों का, एक दक्षिणी क्षेत्र के लिए तथा एक पश्चिमी क्षेत्र के लिए, आयोजन किया गया था। इन गोष्ठियों में भाग लेने वालों को अपनी अनुसंधान परियोजनाओं की योजना बनाने तथा उनके बारे में एक दूसरे के साथ तथा विशेषज्ञों के साथ विचार-विमर्श करने के लिए सहायता दी गई ताकि उनके डिजाइनों, कार्यपद्धति आदि में सुधार हो सके।

13.02 अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रवेश सम्बन्धी प्रक्रियाओं में सुधार

देश की सभी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं से अनुरोध किया गया था कि वे प्रवेश सम्बन्धी अपनी प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में विस्तृत टिप्पणी भेजें। इन संस्थाओं से प्राप्त सूचना के आधार पर, प्रारम्भिक तथा माध्यमिक स्तरों के लिए प्रत्येक राज्य के लिए अलग अलग रिपोर्टें तैयार की गई थीं। दो माध्यमिक शिक्षा कालेजों और एक प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थान के बारे में व्यक्ति अध्ययनों का संचालन भी किया गया था। चुनी हुई प्रशिक्षण संस्थाओं के सदस्यों तथा राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अध्यापक शिक्षा विभाग के अनेक सदस्यों से मिलकर बने कार्यकारी दलों की बैठकें की गई थीं जिनमें अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रवेश की सुधरी हुई प्रक्रिया पर सुझाव देने के विचार से व्यक्ति अध्ययनों की रिपोर्टों और प्रत्येक राज्य की रिपोर्टों पर विचार किया गया था। कार्यकारी दलों की बैठकों की रिपोर्टों को अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में परिचालन के लिए साइक्लोस्टाइल कराने का विचार है।

13.03 स्कूलों में वास्तविक नवपद्धतिस्थापक कार्यप्रणाली और अध्यापकों के व्यावसायिक प्रशिक्षण में उसके उपयोग का सघन अध्ययन

स्कूलों की नवपद्धतिस्थापक कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में 500 अध्यापकों को जिन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए थे, एक प्रोफार्मा भेजा गया था। उनमें से लगभग 125 के उत्तर प्राप्त हुए थे और उनका विश्लेषण किया गया था। दिल्ली के संघ राज्यक्षेत्र तथा राजस्थान की उदयपुर और कोटा डिवीज़नों के उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के प्रिंसीपलों को एक और प्रश्नावली भेजी गई थी। इसका प्रयोजन इन स्कूलों द्वारा नवपद्धतियों का अध्ययन करना था। राजस्थान की उदयपुर तथा कोटा डिवीजनों के स्कूलों में और बम्बई के कुछ स्कूलों में नवपद्धतिस्थापक कार्य प्रणाली का तत्स्थानी अध्ययन भी किया गया था। इसके अलावा, राजस्थान के

दो शिक्षा कालेजों में अध्यापकों के व्यावसायिक प्रशिक्षण के सम्बन्ध में नवपद्धति-स्थापक कार्यप्रणाली के उपयोग का भी अध्ययन किया गया था।

13.04 प्रशिक्षण कालेजों के श्रेणीकरण के लिए उपस्कर का विकास

इस अध्ययन का उद्देश्य अध्यापकों के प्रशिक्षण कालेजों का उनकी कार्यक्षमता के अनुरूप श्रेणीकरण करने के लिए उपस्कर का विकास करना है। रिपोर्टाधीन वर्ष में, अध्ययन के लिए कार्य की योजना भी तैयार की गई थी। उपस्कर की विभिन्न मदों के लिए सिद्धांत भी तैयार किए गए थे। इसके अलावा उपस्कर के एक पहलू अर्थात लिखाई-पढ़ाई के सम्बन्ध में न्यादर्श मदें तैयार की गई थीं।

13.05 अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित एम० एड० शोध-निबन्धों की समीक्षा

विभिन्न विश्वविद्यालयों से अध्यापक शिक्षा के सम्बन्ध में एम० एड० शोध निबन्धों की सूचियाँ प्राप्त की गई थीं। ऐसे लगभग 200 शोध-निबन्धों के सारांश उपलब्ध थे जिनका क्षेत्रवार विश्लेषण किया गया था। इस विश्लेषण के आधार पर प्रारूप रिपोर्ट तैयार की गई थी।

13.06 अन्य अध्ययन

इसके अलावा, 1970-71 में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित अध्ययन भी किए गए थे :

(i) 4-वर्षीय तथा 1-वर्षीय अध्यापक शिक्षा प्रतिमान का तुलनात्मक अध्ययन

(ii) क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर में 1963 से 1970 तक दाखिल किए गए छात्रों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन

(iii) क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भुवनेश्वर में अपनाई गई दाखले की प्रक्रिया का इसकी लक्षणसूचक कार्यक्षमता में सुधार करने के विचार से अध्ययन

(iv) अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में अभ्यास-अध्यापन का मूल्यांकन।

14. प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक स्तर पर बरबादी तथा गतिरोध को कम करने के लिए श्रेणीकृत स्कूल प्रणाली के सम्बन्ध में प्रायोगिक परियोजना

उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले में लोनी ब्लाक के दस स्कूलों में 'अश्रेणीकृत स्कूल प्रणाली', के सम्बन्ध में एक प्रायोगिक परियोजना शुरू की गई थी जिसका उद्देश्य प्राथमिक स्तर पर बरबादी तथा गतिरोध को कम करने में इसके प्रभाव का अध्ययन करना था। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, इसमें भाग लेने वाले स्कूलों के

हैडमास्टरों तथा सहायक अध्यापकों को अश्रेणीकृत स्कूल प्रणाली में अन्तर्निहित मूलभूत विचारों का स्थितिज्ञान कराया गया था। इसमें भाग लेने वालों ने हिन्दी में न्यादर्श अध्यापन एकक में सुधार किया और उन्होंने विभिन्न विषयों अर्थात गणित, सामाजिक अध्ययन और सामान्य ज्ञान में एक एक अध्यापन एकक भी विकसित किया था, इस परियोजना के अधीन आयोजित एक और कर्मशाला में उत्तर प्रदेश की कक्षा 1 तथा 2 की पाठचर्या तथा पाठ्यपुस्तकों के आधार पर अश्रेणीकृत स्कूलों के लिए हिन्दी में 40 अध्यापन एकक तैयार किए गये थे। इसके अलावा इस परियोजना के अधीन दो और कर्मशालाओं में उत्तर प्रदेश की कक्षा 1 तथा कक्षा 2 के लिए पाठचर्या को सामने रखकर सामाजिक अध्ययन के लिए 32 अध्यापन एकक तथा दत्तकार्य और शिक्षण साधन और उसी राज्य की कक्षा 1 से कक्षा 8 तक के लिए पाठचर्या को सामने रखकर गणित के लिए 20 अध्यापन एकक तथा दत्तकार्य और शिक्षण-साधन भी तैयार किये गये थे।

15. जनजातीय शिक्षा

15.01 दिल्ली के संध्याकालीन कालेजों में पढ़ने वाले अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के कर्मचारियों को प्राप्त छात्रवृत्तियों की उपयोगिता का अध्ययन

इस वर्ष के दौरान इस अध्ययन की रिपोर्ट तैयार की गई थी।

15.02 दिल्ली के साँसी कबीले का सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक अध्ययन :

साँसियों को पहले अपराधिक कबीला समझा जाता था। इस अध्ययन का अभिप्राय इस कबीले की नई पीढ़ी की अपने माता-पिता तथा उनके व्यवसाय के प्रति प्रतिक्रिया का पता लगाना है। रिपोर्टाधीन वर्ष में, परियोजना का क्षेत्र-कार्य पूरा कर लिया गया था और तथ्य-सामग्री के सारणीकरण का कार्य भी शुरू किया गया था।

15.03 प्राथमिक तथा मिडिल स्कूलों में जनजातीय क्षेत्रों में बरबादी तथा गतिरोध

इस अध्ययन के लिए तथ्य-सामग्री एकत्र करने के लिए एक प्रोफार्मा तैयार किया गया था।

15.04 जनजातीय युवकों की महत्वाकांक्षाएँ तथा लक्ष्य

इस परियोजना की अनुसंधान सम्बन्धी रूप रेखा तैयार की गई थी।

15.05 जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा तथा सामाजिक आर्थिक गतिशीलता

अध्ययन की अनुसंधान सम्बन्धी रूपरेखा तैयार की गई थी।

16. श्रव्य दृश्य शिक्षा

तत्कालीन भारत में शिक्षा सम्बन्धी प्रदर्शनी का मूल्यांकन

आने वाली जनता की टिप्पणियों के विश्लेषण के आधार पर पिछले वर्ष रिपोर्ट का प्रथम प्रारूप तैयार किया गया था । 1970-71 में रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया गया था ।

17. पाठ्यपुस्तक की तैयारी तथा मूल्यांकन

17.01 राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों की स्थिति का अध्ययन

राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तकों की संख्या तथा स्वरूप और ऐसे ही अन्य सम्बन्धित मामलों के सम्बन्ध में नवीनतम स्थिति को सुनिश्चित करने के लिए एक अध्ययन शुरू किया गया था । इस सम्बन्ध में विभिन्न राज्यों तथा संघ राज्यक्षेत्रों को एक प्रश्नावली भेजी गई थी । अधिकांश राज्यों से सूचना प्राप्त हुई थी और इसका विश्लेषण भी शुरू किया गया था ।

17.02 विभिन्न राज्यों में अल्पसंख्यक भाषा वर्गों में पाठ्यपुस्तकों की स्थिति का अध्ययन

यह अध्ययन राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड की द्वितीय बैठक में की गई इस आशय की सिफारिश के अनुसरण में शुरू किया गया था । इस सम्बन्ध में, एक रूप-रेखा तैयार की गई थी और समूचे देश के शिक्षा निदेशालयों, पाठ्यपुस्तक अभिकरणों और माध्यमिक शिक्षा बोर्डों को एक प्रश्नावली भेजी गई थी । विभिन्न राज्यों से प्राप्त तथ्य-सामग्री का निरीक्षण किया गया था और सम्पादन किया गया था ।

17.03 इतिहास की विषय-वस्तु के चयन तथा प्रस्तुतीकरण का अध्ययन

इस समय इतिहास की पुस्तकों की गंभीर आलोचना की जाती है कि वे ऐसी भावनाएँ उत्पन्न करती हैं जो राष्ट्रीय एकीकरण के प्रतिकूल हैं । अतः यह निर्णय किया गया था कि एक गोष्ठी का आयोजन किया जाए जिसमें व्यावसायिकी इतिहासकार, अध्यापक-शिक्षक और कार्यरत अध्यापक उन आधारभूत बातों का अभिज्ञान करें जो भविष्य में इस समस्या पर आगे विचार-विमर्श तथा अन्वेषण का आधार बनेंगी । इस गोष्ठी का आयोजन मार्च, 1971 में किया गया था और इसके निष्कर्षों को संकलित किया जा रहा है ।

17.04 स्कूल के विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों की तैयारी तथा मूल्यांकन के सिद्धांत तथा प्रक्रियाएँ

रिपोर्टाधीन वर्ष में नागरिकशास्त्र तथा सामान्य विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने तथा उनका मूल्यांकन करने के मूलभूत सिद्धांत तथा प्रक्रियाएँ विकसित

करने के लिए कार्य आरंभ किया गया था। 1969-70 में मातृभाषा, सामाजिक अध्ययन, इतिहास, भूगोल, गणित, भौतिकशास्त्र, जीव-विज्ञान, अंग्रेजी आदि के लिए विकसित की गई ऐसी ही सामग्री को उसके प्रयोगात्मक लाभ के आधार पर प्राप्त टिप्पणियों तथा अन्य सूचना के प्रकाश में अंतिम रूप दिया गया था।

18. प्रौढ़ शिक्षा

18.01 दिल्ली में कृषि दूरदर्शन कार्यक्रम का मूल्यांकन—दूसरा चरण

दिल्ली में 'कृषि दर्शन' नामक कृषि दूरदर्शन कार्यक्रम के निरन्तर मूल्यांकन का दूसरा चरण पूरा किया गया था।

18.02 लखनऊ में कार्यपरक साक्षरता का प्रायोगिक मूल्यांकन अध्ययन

इस वर्ष के दौरान अध्ययन की रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया गया था।

18.03 भारत में सामाजिक/प्रौढ़ शिक्षा में रत स्वैच्छिक संगठनों/प्रमुख कार्मिकों की एक निदेशिका का संकलन

देश में सामाजिक/प्रौढ़ शिक्षा में रत 48 स्वैच्छिक संगठनों से प्राप्त तथ्य-सामग्री का संकलन किया गया था।

प्रौढ़/सामाजिक शिक्षा के प्रमुख कार्मिकों को अपेक्षित सूचना एकत्र करने के लिए एक अनुसूची भेजी गई थी।

18.04 कार्यपरक साक्षरता कार्यक्रम का मूल्यांकन

यह परियोजना आठ जिलों अर्थात संगरूर (पंजाब), दिल्ली (दिल्ली), दरभंगा (बिहार), जलगाँव (महाराष्ट्र), बेल्लारी (मैसूर), तंजौर (तमिलनाडु), बर्द्धवान (पश्चिमी बंगाल) और सम्बलपुर (उड़ीसा) में शुरू किए जाने का विचार है। रिपोर्टाधीन वर्ष में, इस परियोजना पर प्रारंभिक कार्य आरंभ किया गया था।

19. विज्ञान शिक्षा

उड़ीसा के हाई स्कूलों में विज्ञान के अध्यापन की सुविधाओं का अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य उड़ीसा के हाई स्कूलों में विज्ञान के अध्यापन के लिए उपलब्ध सुविधाओं जैसे अर्हता प्राप्त अध्यापकों, प्रयोगशालाओं के लिए साज-सामान, आदि के उपलभ्यता का पता लगाया है। इस वर्ष के दौरान इस अध्ययन के लिए तथ्य सामग्री एकत्र की गई थी।

20. कृषि शिक्षा

20.01 युवक किसानों के लिए व्यावसायिक कार्य-अनुभव सम्बन्धी प्रायोगिक परियोजना

पश्चिमी बंगाल तथा बिहार के लगभग एक दर्जन माध्यमिक स्कूलों में इस अध्ययन का संचालन किया गया था।

20.02 पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक प्रशिक्षण कालेजों में कृषि के अध्यापन का अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य पूर्वी क्षेत्रों के माध्यमिक प्रशिक्षण कालेजों में कृषि के अध्यापन की सुविधाओं की व्यवस्था के सम्बन्ध में वर्तमान स्थिति का पता लगाना है। इस अध्ययन का उद्देश्य इन कालेजों में कृषि के अध्यापन की गुणता का निरीक्षण करना भी है। यह अध्ययन रिपोर्टाधीन वर्ष में पूरा कर लिया गया था और इसके निष्कर्षों के आधार पर अध्यापक शिक्षकों को कृषि के अध्यापन का सघन प्रशिक्षण देने के लिए एक योजना तैयार की गई थी।

21. शैक्षिक वित्त-प्रबन्ध

शिक्षा के परिव्यय का अध्ययन (एन आई ई एच ई डब्ल्यू परियोजना 007)

एक बाह्य विशेषज्ञ की टिप्पणियों के प्रकाश में अध्ययन के प्रारूप रिपोर्ट को संशोधित किया गया था। संशोधित रिपोर्ट अंतिम रूप दिए जाने के लिए अध्ययन दल के सदस्यों को भेजी गई थी।

ख. शैक्षिक सर्वेक्षण

1. भारत में माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों का नमूना सर्वेक्षण

इस सर्वेक्षण का आयोजन माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करने के लिए किया गया था। सर्वेक्षण के अन्तर्गत ये पहलू थे : अध्यापक की पारिवारिक पृष्ठभूमि; उसकी अर्हताएँ, अनुभव, वेतन तथा सेवा की अन्य शर्तें; उसके परिवार की कुल आय; उसके परिवार की ऋणग्रस्तता; अध्यापन व्यवसाय में उसकी स्थिरता तथा गतिशीलता; उसकी व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक समस्याएँ, अपने व्यवसाय तथा व्यावसायिक सहयोगियों के प्रति उसका रवैया, आदि। अंदमान तथा निकोबार और लक्कादीव, मिनिकाय और अमीनदीव द्वीपों को छोड़ कर सभी राज्यों तथा संघ राज्यक्षेत्रों में यह सर्वेक्षण किया गया था। इस नमूना सर्वेक्षण में प्रत्येक राज्य में एक सामुदायिक विकास खण्ड तथा एक औसत नगर, एक दरमियाने आकार का नगर और एक बड़ा शहर और संघराज्य क्षेत्र में केवल उस राज्यक्षेत्र की राजधानी सम्मिलित है। जबकि नगरों की नगरपालिका सीमाओं

या अन्य प्रशासनिक अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत आने वाले सभी हाई/उच्चतर माध्यमिक स्कूल और इंटरमीडिएट कालेज इसमें सम्मिलित होते हैं, शहरों में नगरपालिका या निगम की सीमाओं के अन्तर्गत आने वाले केवल पाँच प्रतिशत स्कूलों को लिया जाता है। रिपोर्टाधीन वर्ष में, तथ्य-सामग्री का विश्लेषण पूरा किया गया था और विभिन्न पहलुओं के सम्बन्ध में प्रारूप रिपोर्टें पूरी होने वाली थीं।

2. माध्यमिक स्कूल में छात्रों की शैक्षणिक प्रगति के लिए उपलब्ध सुविधाओं का नमूना सर्वेक्षण

इस सर्वेक्षण का उद्देश्य पुस्तकालय तथा वाचनालय, प्रयोगशालाओं, कर्मशालाओं, श्रव्य-दृश्य साधनों, विषय-क्लबों तथा एसोसिएशनों, मार्गदर्शन सेवाओं, दोपहर के भोजन, स्कूल की स्वास्थ्य सेवा आदि के लिए सुविधाओं जैसे पहलुओं के सम्बन्ध में सूचना एकत्र करना है। अंडमान तथा निकोबार और लक्कादीव, मिनिकाय और अमीनदीव द्वीपों को छोड़कर सभी राज्यों तथा संघ राज्यक्षेत्रों से प्रश्नावलियों के माध्यम से इन पहलुओं के बारे में सूचना एकत्र की जा रही है। यह नमूना सर्वेक्षण प्रत्येक राज्य के 3 प्रतिशत स्कूलों और प्रत्येक संघ राज्यक्षेत्र की राजधानी में स्थित सभी स्कूलों तक सीमित है।

3. भारत में स्कूल की पाठ्यपुस्तकों का सर्वेक्षण

यह सर्वेक्षण स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर पाठ्यपुस्तकों के निम्नलिखित पहलुओं का अध्ययन करने के लिए 1969 के प्रारम्भ में शुरू किया गया था :

(i) स्कूली पाठ्यपुस्तकें तैयार, विहित, अनुमोदित और अनुशंसित करने वाले अभिकरण;

(ii) इन अभिकरणों का विधान, गठन और कृत्य;

(iii) विभिन्न श्रेणी की स्कूली पाठ्यपुस्तकों के सम्बन्ध में प्रत्येक राज्य में अपनाई गई नीतियाँ तथा प्रक्रियाएँ, पाण्डुलिपियों की तैयारी तथा समीक्षा और पाठ्यपुस्तकों के मुद्रण तथा वितरण के विशेष निर्देश सहित;

(iv) 1968-69 में स्कूलों में विहित पाठ्यपुस्तकों की स्थिति; और

(v) स्कूली पाठ्यपुस्तकों के लेखक।

एकत्र की गई सूचना के आधार पर 1969-70 में प्रत्येक राज्य तथा संघ राज्यक्षेत्र के लिए रिपोर्टें तैयार की गई थीं। एक अखिल भारतीय रिपोर्ट का प्रारूप जो पिछले वर्ष तैयार किया गया था, उसे 1970-71 में अंतिम रूप देकर छपने के लिए भेजा गया।

4. भारत के स्कूलों की बृहत्, न्यादर्श सूची

यह परिषद् की एक अविरत परियोजना है । यह भारत में स्कूलों का न्यादर्श ढाँचा तैयार करने के प्रयोजन से शुरू की गई थी, जिसका उपयोग शिक्षा सम्बन्धी अखिल भारतीय सर्वेक्षणों तथा अनुसंधान अध्ययनों के लिए स्कूलों के न्यादर्श हेतु किया जा सकता है । बृहत् न्यादर्श सूची तैयार कर ली गई है ।

5. माध्यमिक अध्यापक शिक्षा का तीसरा राष्ट्रीय सर्वेक्षण

माध्यमिक अध्यापक शिक्षा के तीसरे राष्ट्रीय सर्वेक्षण का आयोजन करने के लिए एक प्रारूप प्रश्नावली को अंतिम रूप देकर छपने के लिए भेजा गया था ।

6. प्रारम्भिक अध्यापक शिक्षा का राष्ट्रीय सर्वेक्षण

प्रारम्भिक अध्यापक शिक्षा के राष्ट्रीय सर्वेक्षण के लिए एक प्रारूप प्रश्नावली तैयार की गई थी और राज्यों के शिक्षा संस्थानों को टिप्पणियों के लिए भेजी गई थी । इसके बाद एक अभिविन्यास सम्मेलन बुलाया गया था । इसका आयोजन राज्य शिक्षा संस्थानों के उन अधिकारियों के लिए किया गया था जिन्हें सर्वेक्षण के लिए तथ्य सामग्री एकत्र करने का कार्य करना था । इस सम्मेलन में प्रश्नावली तथा विश्लेषण-पत्रों को अंतिम रूप दिया गया था ।

7. दिल्ली के माध्यमिक स्कूलों में श्रव्य-दृश्य उपकरण तथा सामग्री की उपलभ्यता, उपयोगिता और आवश्यकता के बारे में सर्वेक्षण

इस वर्ष के दौरान दिल्ली के माध्यमिक स्कूलों में श्रव्य-दृश्य उपकरण तथा सामग्री की उपलभ्यता, उपयोगिता और आवश्यकता के बारे में एक सर्वेक्षण किया गया था । प्रश्नावली तैयार करके दिल्ली के सभी उच्चतर माध्यमिक स्कूलों को भेजी गई थी ।

8. विभिन्न राज्यों में पाठ्यपुस्तकों की तैयारी, उत्पाद और वितरण सम्बन्धी कार्यप्रणाली का सर्वेक्षण

विभिन्न राज्यों में स्कूली पाठ्यपुस्तकों की तैयारी, उत्पादन और वितरण के सम्बन्ध में प्रचलित कार्यप्रणाली के बारे में तथ्यगत सूचना एकत्र करने के लिए एक सर्वेक्षण किया गया था । सूचना का विश्लेषण किया गया था और रिपोर्टाधीन वर्ष के दौरान "स्कूली पाठ्यपुस्तकों की तैयारी, उत्पादन और वितरण की प्रक्रियाएँ" नामक पुस्तिका प्रकाशित की गई थी ।

9. दिल्ली में अभिभावक-अध्यापक संघों का सर्वेक्षण

इस वर्ष के दौरान दिल्ली में अभिभावक अध्यापक संघों का एक सर्वेक्षण शुरू किया गया था । इस सर्वेक्षण का प्रयोजन अभिभावक-अध्यापक संघों की संख्या, उनके कृत्यों तथा सदस्यता, उनकी बैठकों की बारम्बारता आदि का पता लगाना था ।

10. अन्य सर्वेक्षण

पिछले वर्षों के दौरान निम्नलिखित सर्वेक्षणों का संचालन किया गया था। हालांकि इन सर्वेक्षणों की तथ्य-सामग्री और प्रारूप रिपोर्टों का विश्लेषण पहले ही पूरा कर लिया गया था, फिर भी अंतिम रिपोर्टें 1970-71 के दौरान ही प्रकाशित की जा सकी थीं :—

(क) हैदराबाद-सिकंदराबाद और दिल्ली में स्कूल पूर्व/प्रारम्भिक शिक्षा की व्यवस्था करने वाले और गैर-मान्यता प्राप्त संस्थाओं का सर्वेक्षण

(ख) भारत में अभिभावक-अध्यापक संघों का सर्वेक्षण

(ग) राजस्थान के भीलवाड़ा, जयपुर और बीकानेर जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में महिला अध्यापकों का सर्वेक्षण

परिशिष्ट 11

अनुमोदित अनुसंधान परियोजनाओं के लिए सहायतानुदान (1970-71)

इस योजना के अधीन, 1970-71 में परिषद् द्वारा कई अनुसंधान परियोजनाओं का अनुमोदन किया गया था। जिन संस्थाओं/व्यक्तियों को अनुदान दिए गए उनके नाम और उनकी परियोजनाओं के शीर्षक अनुबन्ध में किए गए हैं।

अनुबंध

1970-71 में शिक्षा में अनुसंधान परियोजनाओं के लिए बाह्य संस्थाओं/व्यक्तियों को दी गई वित्तीय सहायता

क्रम संख्या	संस्था/व्यक्ति	परियोजना का शीर्षक	अवधि	कुल अनुमोदित [रुपयों में]
1	2	3	4	5
1.	एस० आई० टी० यू० कौंसिल आफ एजुकेशनल रिसर्च, 34/1 रामकृष्ण मठ रोड, मद्रास-28।	स्कूल-पूर्व आयु के बच्चों में पढ़ने के लिए तत्परता विकसित करने के हेतु सामग्री की तैयारी।	$1\frac{1}{2}$ वर्ष	17,700.00
2.	सी० एच० जी० खालसा कालेज आफ् एजुकेशन, गुरुसर सधार (लुधियाना)	प्रशिक्षण कालेजों के स्नातकों का अनुवर्ती कार्य, कालेज के पश्चात् रोजगार और समायोजन।	2 वर्ष	9,200.00
3.	विद्या भवन जी० एस० टीचर्स कालेज, उदयपुर	अध्यापकों के व्यावसायिक कार्य के एक विश्लेषण के आधार पर उनकी शिक्षा का यथार्थवादी कार्यक्रम विकसित करना	2 वर्ष	21,400.00
4.	त्यागराजार कालेज आफ् प्रीसेपटर्स, मदुरै	मदुरै नगर के स्कूल में नवीं कक्षा के लिए बीजगणित के नैदानिक परीक्षण का निर्माण।	2 वर्ष	10,300.00
5.	मनोविज्ञान विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद	बच्चों को भाषाओं के अध्यापन की कार्यक्रम बद्ध अधिगम तथा रूढ़िगत तकनीकों की तुलना।	$1\frac{3}{4}$ वर्ष	13,600.00

1	2	3	4	5
6.	दर्शनशास्त्र विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद	मूल्यों के एकीकरण तथा मूल्यों में परिवर्तन लाने के माध्यम के रूप में शिक्षा	2½ वर्ष	18,800.00
7.	डा० वी० पी० शर्मा, लैक्चरर, विश्वविद्यालय अध्यापन मनोविज्ञान विभाग, रविशंकर विश्व-विद्यालय, रायपुर	"पश्चिमी महाराष्ट्र में माध्यमिक स्कूल स्तर पर संघीय हिन्दी में अवाप्ति का मूल्यांकन" पीएच० डी० के शोध-प्रबन्ध का प्रकाशन	1 वर्ष	1,000.00
8.	डा० एम० गुलाम रसूल, 176, नरसिंहगढ़, श्रीनगर, कश्मीर	"मौलाना आज़ाद के चिन्तन के शैक्षिक पहलू" पीएच० डी० के शोध प्रबन्ध का प्रकाशन	1 वर्ष	1,000.00
				कुल 93,000.00

परिशिष्ट 12

प्रशिक्षण कार्यक्रम

पिछले वर्षों की भाँति, 1970-71 में भी परिषद् ने नीचे दिए गए अपने विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा अध्यापकों तथा अध्यापक-शिक्षकों की सेवा पूर्व तथा सेवा के दौरान शिक्षा की ओर पूरा-पूरा ध्यान दिया —

1. सेवा-पूर्व शिक्षा

1.01 केन्द्रीय शिक्षा संस्थान

रिपोर्टाधीन वर्ष में, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली ने दिल्ली विश्वविद्यालय की बी० एड० की डिग्री के लिए अपना पूर्णकालिक पाठ्यक्रम और एम० एड० की डिग्री के लिए संध्याकालीन पूर्णकालिक तथा अंशकालिक पाठ्यक्रम जारी रखे। तथापि बी०एड० पत्राचार पाठ्यक्रम के लिए कोई नए दाखले नहीं किए गए क्योंकि यह निर्णय किया गया था कि इस पाठ्यक्रम को वर्ष 1970-71 से बन्द कर दिया जाए। संस्थान ने अपने पीएच० डी० के कार्यक्रम को भी जारी रखा और दो शोध छात्र सर्वश्री एन० ए० अन्सारी और के० एल० पंडित दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा यह डिग्री दिए जाने के लिए हकदार घोषित किए गए। केन्द्रीय शिक्षा संस्थान की परीक्षा के परिणाम अनुबन्ध I में देखे जा सकते हैं।

1.02 क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

परिषद् के अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय हैं। ये महाविद्यालय स्थापित करने का मुख्य प्रयोजन उच्चतर माध्यमिक परीक्षा के बाद 4 वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रमों के द्वारा, जिनमें विभिन्न विषयों का शिक्षण तथा शिक्षण सम्बन्धी प्रशिक्षण संयुक्त रूप से हो, अध्यापकों को तैयार करना था। प्रौद्योगिकी तथा वाणिज्य के 4 वर्षीय पाठ्यक्रम क्रमशः 1968-69 तथा 1970-71 से खत्म कर दिए गए थे। प्रतिवेदन वर्ष में, विज्ञान तथा अंग्रेजी के 4 वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम जारी रखे गये थे। इन विषयों के संशोधित पाठ्यक्रम बनाए जा रहे हैं जो शीघ्र ही शुरू किए जाएँगे। चारों के चारों महाविद्यालयों में वाणिज्य तथा विज्ञान में स्नातक अध्यापकों के लिए बी० एड० के एक वर्षीय पाठ्यक्रम की भी व्यवस्था है। प्रतिवेदन वर्ष में, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर में स्नातक अध्यापकों के लिए बी० एड० के एक-वर्षीय कार्यक्रमों की तरह 1969-70 में अंग्रेजी तथा हिन्दी

में अध्यापकों के लिए शुरू किया गया बी०एड० का एक-वर्षीय पाठ्यक्रम जारी रखा गया। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल तथा भुवनेश्वर में एम०एड० का पाठ्यक्रम भी जारी रखा गया। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर तथा भोपाल में कृषि में बी० एड० के एक वर्षीय पाठ्यक्रम की व्यवस्था जारी रखी गई। क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, भोपाल ने जुलाई, 1970 से मानविकी में बी० एड० का एक-वर्षीय पाठ्यक्रम और शुरू किया। 1970-71 के शिक्षा-सत्र में सभी क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में चार-वर्षीय पाठ्यक्रमों के लिए कुल 1538 छात्र थे जिनमें से 918 विज्ञान के लिए, 70 प्रौद्योगिकी के लिए, 375 अंग्रेजी के लिए और 175 वाणिज्य के लिए थे। एक-वर्षीय पाठ्यक्रम के लिए दाखिल किए गए प्रशिक्षार्थियों की संख्या 516 थी जिनमें से 74 वाणिज्य के लिए, 306 विज्ञान के लिए, 48 कृषि के लिए और 88 भाषाओं के लिए थे। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल तथा भुवनेश्वर में एम० एड० के पाठ्यक्रम के लिए क्रमशः 8 तथा 10 छात्र दाखिल किए गए।

देश के उच्च/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में अप्रशिक्षित अध्यापकों को खत्म करने के लिए, परिषद् ग्रीष्मकालीन स्कूली एवं पत्राचार पाठ्यक्रमों का आयोजन करती रही है जिनके बाद इसके चारों क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों से बी० एड० की डिग्री ली जा सकती थी। इस पाठ्यक्रम में दो गर्मी की छुट्टियों (4 महीनों) के दौरान पूर्णकालिक आशु प्रशिक्षण और दो गर्मी की छुट्टियों के बीच की दस महीने की अवधि में पत्राचार के द्वारा अनुदेश सम्मिलित हैं। 1970-71 में चारों महाविद्यालयों में इस पाठ्यक्रम के छात्रों की कुल संख्या 1764 थी। प्रत्येक क्षेत्रीय कालेज के सम्बन्ध में 1970-71 की परीक्षाओं के परिणाम अनुबन्ध II में दिए गए हैं।

2. सेवा के दौरान शिक्षा

रिपोर्टाधीन वर्ष में परिषद् द्वारा अध्यापकों तथा स्कूली शिक्षा से सम्बद्ध अन्य शैक्षिक कर्मचारियों के लिए सेवा के दौरान अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन पाठ्यक्रम प्रस्तुत किये जाने के लिए किये गये कार्य का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है :

2.01 ग्रीष्मकालीन विज्ञान संस्थान

माध्यमिक स्कूलों के विज्ञान तथा गणित के अध्यापकों को उनके विषयों में हुए नवीनतम विकास से अवगत रखने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से पिछले कुछ वर्षों में ग्रीष्मकालीन संस्थानों का आयोजन करती रही है। ये ग्रीष्मकालीन संस्थान सामान्यतः 5-6 सप्ताह की अवधि के लिए होते हैं और इनका आयोजन विश्वविद्यालय/कालेजों के ज्ञानसाधन व्यक्तियों की सहायता से विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों की अध्यक्षता में किया जाता है। 1970 तक, विज्ञान तथा गणित के 353 ग्रीष्म-

कालीन संस्थानों का आयोजन किया गया था जिनमें 13,700 अध्यापकों ने भाग लिया था।

2.02 सामाजिक विज्ञानों तथा मानविकी के ग्रीष्मकालीन संस्थान

1970-71 में, सामाजिक विज्ञानों तथा मानविकी के पाँच ग्रीष्मकालीन संस्थानों का आयोजन किया गया था। इन में से दो पूर्वी तथा दक्षिणी प्रदेश के राज्यों में प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के अध्यापक-शिक्षकों के लिए थे जबकि शेष तीन में माध्यमिक प्रशिक्षण कालेजों तथा विश्वविद्यालयों क शिक्षा विभागों के अध्यापक-शिक्षकों ने हिस्सा लिया था। इन संस्थानों के विषय निम्न-लिखित थे :

(i) (ii) प्राथमिक शिक्षा के सिद्धांत और समस्याएँ (इस विषय पर दो संस्थानों का आयोजन किया गया था)

(iii) भारतीय शिक्षा की समकालीन समस्याएँ

(iv) अधिगम, अभिप्रेरणा और समूह-प्रक्रम

(v) भाषा-विज्ञान तथा भाषा शिक्षण

2.03 बाल मनोविज्ञान सम्बन्धी शरदकालीन संस्थान

बाल मनोविज्ञान सम्बन्धी एक शरदकालीन संस्थान का आयोजन सितम्बर, 1970 में हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में किया गया था। इसमें विभिन्न राज्यों के प्राथमिक-पूर्व तथा प्राथमिक प्रशिक्षण केन्द्रों के अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया था।

2.04 शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन डिप्लोमा पाठ्यक्रम

रिपोर्टाधीन वर्ष में, राज्य मार्गदर्शन ब्यूरो के सलाहकारों और अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए शैक्षिक तथा व्यावसायिक मार्गदर्शन सम्बन्धी 9 मास का एक पूर्णकालिक स्नाकोत्तर पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया था। प्रशिक्षण कालेजों में मार्गदर्शन पढ़ाने वाले कुछ अध्यापक-शिक्षकों ने भी पाठ्यक्रम से लाभ उठाया। बारह प्रशिक्षार्थियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया; जिनमें से दो-दो पंजाब तथा उत्तर प्रदेश राज्यों से, तीन दिल्ली से और एक-एक गुजरात, मध्य प्रदेश, मैसूर, पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा राज्यों से थे।

2.05 अन्य अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम

विभिन्न क्षेत्रों में अन्य अनेक अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया था। इन कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्ट नीचे दी गई है :

(1) नवम्बर, 1970 में कार्यक्रमबद्ध अधिगम के एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था जिस में पंजाब राज्य के पाँच जिलों के 33 व्यक्तियों ने भाग लिया था।

(2) मार्च, 1970 में पश्चिमी ज़ोन के जिला शिक्षा अधिकारियों के लिए मार्गदर्शन के क्षेत्र में एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम का उद्देश्य स्कूलों में मार्गदर्शन के विकास के लिए अनुकूल वातावरण उत्पन्न करना था। सोलह शिक्षा अधिकारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

(3) मई, 1970 में पर्यवेक्षकों के लिए कार्यात्मक साक्षरता सम्बन्धी पाँचवें दस-दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था। आंध्र प्रदेश, गुजरात और उत्तर प्रदेश राज्यों के सोलह पर्यवेक्षकों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

(4) जून-जुलाई, 1970 में भारत सरकार के मंत्रिमंडल सचिवालय के अधीन सुरक्षा महानिदेशालय के एस० एस० बी० के प्रौढ़ साक्षरता शिक्षकों के लिए दो-दो सप्ताह के प्रशिक्षण पाठ्क्रयमों का आयोजन किया गया था। इन पाठ्यक्रमों में 20-20 शिक्षकों के दो बैचों ने भाग लिया।

(5) इस वर्ष के दौरान कृषक शिक्षा तथा कार्यात्मक साक्षरता परि-योजना के अधीन पर्यवेक्षकों के छठे, सातवें और आठवें बैचों के लिए कार्मात्मक साक्षरता सम्बन्धी तीन पाठ्यक्रमों का आयोजन किया गया था। छठे बैच में मध्य प्रदेश तथा पंजाब राज्यों के 18 पर्यवेक्षक थे। सातवें बैच में गुजरात, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के 23 पर्यवेक्षक जबकि आठवें बैच में दिल्ली तथा हिमाचल प्रदेश के 9 पर्यवेक्षक थे।

(6) मई-जून, 1970 में दिल्ली के उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के कुछ चुने हुए प्रिंसिपलों और शिक्षा अधिकारियों के लिए तीन सप्ताह के एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों ने इस पाठ्यक्रम को चलाने में सहयोग दिया।

(7) अप्रैल-मई, 1970 में श्रव्य-दृश्य शिक्षा सम्बन्धी दो सप्ताह के एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन किया गया था। दक्षिणी ज़ोन के माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के 29 लैक्चररों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

(8) इस वर्ष के दौरान शैक्षिक फिल्म लायब्रेरी की तकनीक तथा प्रक्रियाओं सम्बन्धी दो सप्ताह के एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था और इस में राज्यों के शिक्षा विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा कालेजों आदि का प्रतिनिधित्व करने वाले 24 व्यक्तियों ने भाग लिया।

(9) नवम्बर, 1970 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के अधिकारियों के लिए श्रव्य दृश्य शिक्षा सम्बन्धी एक सप्ताह के एक प्रशिक्षण पठ्यक्रम का आयोजन किया गया था। तैंतीस अधिकारियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

(10) 16.11.70 से 11.12.70 तक अखिल भारतीय एक-मासीय तकनीकी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था जिस में राज्यों के शिक्षा विभागों तथा राज्यों के शिक्षा संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले चौदह व्यक्तियों ने भाग लिया। इस प्रशिक्षण में प्रदर्शन, फिल्मों तथा फिल्म पट्टियों का प्रदर्शन, कार्य-पद्धति सम्बन्धी व्यावहारिक अधिवेशन, विभिन्न श्रव्य-दृश्य उपकरणों का संधारण तथा मरम्मत, कार्यकारी मंडलों का निर्माण, शैक्षिक क्षेत्र पर्यटन आदि सम्मिलित थे।

(11) जनवरी-फरवरी, 1971 में प्रक्षेप-साधनों सम्बन्धी अखिल भारतीय छः सप्ताहीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन किया गया था जिस में समूचे भारत के राज्यों के शिक्षा विभागों, राज्यों के शिक्षा संस्थानों और श्रव्य-दृश्य शिक्षा विभागों का प्रतिनिधित्व करने वाले ग्यारह व्यक्तियों ने भाग लिया।

(12) अगस्त, 1970 में पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए वाणिज्य-अध्यापन के अल्पकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था जिस में बीस व्यक्तियों, आसाम से एक, पश्चिमी बंगाल तथा त्रिपुरा से पाँच-पाँच और बिहार से नौ व्यक्तियों ने भाग लिया था।

(13) अक्टूबर, 1970 में आसाम राज्य के अंग्रेजी के अध्यापकों के लिए ध्वनिशास्त्र तथा पठन सम्बन्धी 10-दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। आसाम के अठारह विभिन्न जिलों के अठारह अध्यापकों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

(14) क्रिसमस की छुट्टियों में उड़ीसा के शिल्प प्रशिक्षणों के लिए एक अल्पकालीन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिल्प प्रशिक्षकों के स्तर पर कर्मशाला विज्ञानों के अध्यापन में सुधार करना था।

(15) क्रिसमस की छुट्टियों में बिहार तथा पश्चिमी बंगाल राज्यों के कृषि अध्यापकों के लिए 10-दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

(16) अप्रैल-मई, 1970 में दक्षिणी क्षेत्र के शिक्षा कालेजों के लैक्चररों के लिए श्रव्य-दृश्य सम्बन्धी अल्पकालीन पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था। उनतीस लैक्चररों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया। विभिन्न प्रकार की श्रव्य-दृश्य सामग्री की तैयारी और विभिन्न प्रकार के उपकरणों के संचालन का प्रशिक्षण दिया गया था। इक्यावन ग्राफिक-साधन भी तैयार किए गए थे।

(17) जून, 1970 में मैसूर राज्य के माध्यमिक प्रशिक्षण कालेजों के अध्यापक-शिक्षकों के लिए कार्य-अनुभव सम्बन्धी तीन सप्ताहीय पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था। पन्द्रह अध्यापक-शिक्षकों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया।

(18) जनवरी, 1971 में मैसूर राज्य के प्राथमिक अध्यापक-शिक्षकों के लिए कार्य-अनुभव सम्बन्धी पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था। इसमें आठ अध्यापक-शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया था।

(19) मई, 1970 में क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर के स्नातकों के लिए अंग्रेजी के अध्यापन के सारतत्व तथा प्रणाली सम्बन्धी 4-सप्ताहीय आशु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का संचालन किया गया था। इस पाठ्यक्रम में तीन स्नातकों ने भाग लिया।

(20) नवम्बर, 1970 तथा जनवरी, 1970 के दौरान क्षेत्रीय शिक्षा कालेज, मैसूर के सहकारी स्कूलों के हैडमास्टरों तथा अध्यापकों के लिए, उन्हें उस कालेज के छात्र-अध्यापकों को प्रभाव मार्गदर्शन प्रदान करने के योग्य और अध्यापन कार्यक्रम में स्थानबद्धता के दौरान उनका विषयनिष्ठ आकलन करने के लिए, दो अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था।

(23) लोक-शिक्षा मैसूर के संयुक्त निदेशक के अनुरोध पर अगस्त, 1970 में माँडिया जिले के माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए कार्य-अनुभव सम्बन्धी 10-दिवसीय पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया था। सत्ताईस अध्यापकों ने इस में पाठ्यक्रम में भाग लिया और उन्हें बागवानी, काष्ठ-शिल्प तथा शीट मैटल वर्क का प्रशिक्षण दिया गया था।

(22) दिल्ली नगर निगम के कहने पर मई, 1970 में मिडिल के स्कूल स्तर का गणित पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए नए गणित के शिक्षण सम्बन्धी एक सप्ताह के कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

(23) जून-जुलाई, 1970 में दिल्ली के उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के लिए व्यावसायिक परामर्शदाताओं को प्रशिक्षण देने के लिए शिक्षा निदेशालय, दिल्ली के सहयोग से तीन सप्ताह के एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इससे पचपन व्यक्तियों ने भाग लिया था।

(24) सितम्बर, तथा अक्टूबर, 1970 में दिल्ली नगर निगम के प्राथमिक स्कूलों के लिए विज्ञान क्लबों के प्रायोजकों को प्रशिक्षण देने के लिए दो दस दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। इन कार्यक्रमों में 93 अध्यापकों को अपेक्षित प्रशिक्षण प्रदान किया गया था।

(25) दिल्ली नगर निगम के अनुरोध पर जनवरी, 1971 में प्राथमिक स्कूलों के हैडमास्टरों तथा पर्यवेक्षकों को स्कूल के विभिन्न विषयों में वस्तुपरक परीक्षण की चीजें लिखने का प्रशिक्षण देने के लिए मूल्यांकन के लिए सम्बन्धी एक सप्ताह के कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

(26) दिसम्बर, 1970 में केन्द्रीय विद्यालय संगठन के सहयोग से भोपाल में अंग्रेजी के अध्यापन सम्बन्धी एक अल्पकालीन नवीकरण पाठ्यक्रम का आयोजन

किया गया था । इस पाठ्यक्रम का संचालन केन्द्रीय विद्यालयों में काम करने वाले अंग्रेजी के अध्यापकों के लाभ के लिए किया गया था ।

(27) मई, 1970 में भोपाल में माध्यमिक स्तर की इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों के लेखकों तथा मूल्यांककों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया था । इस में तेईस लेखकों तथा मूल्यांककों ने भाग लिया था । इस अवसर पर विचार-विमर्श के सारांश और इतिहास की पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन के लिए शोध-सामग्री से युक्त एक रिपोर्ट भी प्रकाशित की गई थी ।

(28) दिल्ली नगर निगम के अनुरोध पर प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए सामाजिक अध्ययनों के अध्यापन सम्बन्धी एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन किया गया था ।

(29) अक्टूबर-नवम्बर, 1970 में विभिन्न राज्यों के उन प्रमुख कार्मिकों के लिए 10-10 दिन के दो अभिविन्यास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था जो पिछले वर्ष के कार्यक्रमों में भाग नहीं ले सके । भाग लेने वालों को प्राथमिक तथा मिडिल स्कूल के स्तर पर विज्ञान के अध्यापन के लिए विकसित की गई पाठचर्या विषयक सामग्री के नए उपागम और सार-तत्व से परिचित कराया गया । उन्हें इन दो स्तरों पर विज्ञान के अध्यापन के लिए उपस्करों तथा उपकरणों से भी परिचित कराया गया था । ये अभिविन्यास एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम विज्ञान अध्यापन में सुधार के लिए यूनेस्को-यूनीसेफ से सहायता प्राप्त प्रायोगिक परियोजना का एक भाग थे। पाँच राज्यों के नौ प्रमुख कार्मिकों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया ।

अनुबंध I

केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली के 1970-71 के परीक्षा परिणाम

पाठ्यक्रम	दाखिलों की संख्या	बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने वालों की संख्या	परीक्षा में बैठने वालों की संख्या	पास	फेल	कंपार्टमेंट	पास %	विशेष योग्यता
बी०एड० नियमित	143	9	134	132	—	2	98.5	5
बी०एड० पत्राचार	139	8	131	95	19	17	72.5	4
एम०एड० नियमित	20	1	19	19	—	—	100.0	4
एम०एड० अंशकालिक सांध्य	16	2	14	12	2	—	85.7	2

अनुबंध II

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर के वर्ष 1970-71 के परीक्षा परिणाम

पाठ्यमक्रम	दाखिले	बीच में छोड़ देने वालों की संख्या	परीक्षा देने वाले	पास	फेल	कंपार्टमेंट	पास %
चारवर्षीय प्रौद्योगिकी							
I वर्ष	—	—	—	—	—	—	—
II वर्ष	—	—	—	—	—	—	—
III वर्ष	4	—	4	1	—	3	25.0
अन्तिम वर्ष	15	—	15	15	—	—	100.0
चारवर्षीय विज्ञान							
I वर्ष	43	—	43	31	2	10	72.9
II वर्ष	54	2	52	34	4	14	65.9
III वर्ष	63	4	59*	48	—	10	81.4
IV वर्ष	49	—	49*	43	1	4	87.8
एक वर्षीय बी० एड०							
(i) विज्ञान	85	1	84*	75	8	—	89.3
(ii) वाणिज्य	32	—	32	26	6	—	81.3
(iii) कृषि	32	1	31	28	3	—	90.3
(iv) भाषाएँ	72	—	72	65	7	—	90.3

*एक प्रत्याशी का परिणाम रोक लिया गया था।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर के 1970-71 के परीक्षा परिणाम

पाठ्यक्रम	दाखिले	पढ़ाई छोड़ देने वालों की संख्या	परीक्षा देने वालों की संख्या	पास	फेल	कंपार्टमेंट	पास %
चार वर्षीय प्रौद्योगिकी							
अंतिम वर्ष	30	—	30	24	6	—	80.0
चार वर्षीय विज्ञान							
I वर्ष	64	6	58	38	5	15	65.5
II वर्ष	55	—	55	27	5	23	49.9
III वर्ष	50	—	50	37	4	9	74.0
IV वर्ष	60		60	31	29		51.0
चार वर्षीय अंग्रेजी							
I वर्ष	41	5	36	28	3	5	77.8
II वर्ष	34	2	32	22	1	9	68.8
III वर्ष	26	—	26(1)	22	1(1)	3	84.6
IV वर्ष	34	—	34	27	7	—	79.0
चार वर्षीय वाणिज्य							
II वर्ष	33	1	32	9	8	15	28.1
III वर्ष	28	1	27	16	2	9	59.3
IV वर्ष	38	—	38	25	13	—	65.8
एक वर्षीय बी० एड०							
(i) विज्ञान	100	9	91	87	4	—	95.0
(ii) वाणिज्य	10	—	10	10		—	100.0

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर के 1970-71 के परीक्षा परिणाम

पाठ्यक्रम	दाखिले	पढ़ाई छोड़ देने वालों की संख्या	परीक्षा देने वालों की संख्या	पास	फेल	कंपार्टमेंट	पास %
चार वर्षीय प्रौद्योगिकी							
अंतिम वर्ष	8	—	8	8	—	—	100.0
चार वर्षीय विज्ञान							
I वर्ष	73	11	62	52	—	10	83.9
II वर्ष	85	3	82	72	—	10	87.8
III वर्ष	71	—	*71	59	—	11	83.9
IV वर्ष	43	—	43	42	—	1	97.7
चार वर्षीय अंग्रेजी							
I वर्ष	31	3	28	27	—	1	96.4
II वर्ष	39	—	39	38	—	1	97.4
III वर्ष	39	—	39	35	—	4	89.7
IV वर्ष	29	—	29	28	—	1	96.5
चार वर्षीय वाणिज्य							
I वर्ष							
II वर्ष							
III वर्ष							
IV वर्ष							
एक वर्षीय बी० एड०							
(i) विज्ञान	106	6	100	98	2	—	98.0
(ii) वाणिज्य	13	2	11	10	1	—	91.0
(iii) कृषि	—	—	—	—	—	—	—

*एक प्रत्याशी निकाल दिया गया

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल के 1970-71 के परीक्षा परिणाम

पाठ्यक्रम	दाखिले	पढ़ाई छोड़ देने वालों की संख्या	परीक्षा देने वालों की संख्या	पास	फेल	कंपार्टमेंट	पास %
1	2	3	4	5	6	7	8
चार वर्षीय प्रौद्योगिकी							
अंतिम वर्ष	11	—	नि 11 12 पू 1	10	—	2	83.3
चार वर्षीय विज्ञान							
I वर्ष	60	8	नि 52 61 पू 9	47	—	14	77.0
II वर्ष	44	—	नि 56 53 . पू 9	25	—	28	47.2
III वर्ष	56	—	नि 56 63 पू 7	57	—	6	90.5
IV वर्ष	40	—	नि 40 44 पू 3 भू 1	37	—	7	84.1
चार वर्षीय अंग्रेजी							
I वर्ष	25	—	नि 25 27 पू 2	19	—	8	70.4
II वर्ष	29	—	नि 29 29	22	—	7	76.0
III वर्ष	22	—	नि 22 24 पू* 26	20	—	2	83.3
IV वर्ष	26	—	नि 26 27 पू 1	24	—	3	88.9

1	2	3	4	5	6	7	8
चार वर्षीय वाणिज्य							
1 वर्ष	—	—	पू 2 2	1	—	1	50. 0
II वर्ष	36	—	नि 36 —	30	—	6	83.3
III वर्ष	31	—	नि 31 —	26	—	5	83.9
IV वर्ष	12	—	नि 12 —	12	—	—	100.0
एक वर्षीय बी० एड०							
(i) कृषि	16	2	14	13	—	1	92.8
(ii) कला	24	1	23	22	1	—	95.6
(iii) विज्ञान	38	3	35	35	—	—	100.0
(iv) वाणिज्य	17	1	16	14	—	1	87.6
			(एक छात्र का परिणाम रोक लिया गया)				

संकेत

नि = नियमित

पू = पूरक

भू = भूतपूर्व छात्र

*परिणाम उपलब्ध नहीं है।

परिशिष्ट 13

विस्तार और क्षेत्र सेवाएँ

1970-71 में विस्तार और क्षेत्र सेवाएँ उपलब्ध करने के लिए किए गये कार्य की प्रगति निम्नलिखित पैराग्राफों में दी जा रही है :

1. विस्तार सेवा केन्द्र

पिछले वर्षों की तरह ही, देश भर की चुनी हुई माध्यमिक और प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में स्थित 140 विरतार सेवा केन्द्रों को सहायता अनुदान के जरिये वित्तीय सहायता दी गई ताकि उनके क्षेत्राधिकार में चल रहे स्कूलों को विस्तार सेवा उपलब्ध की जा सके। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिशद् के राज्यों में स्थित क्षेत्र सलाहकारों तथा राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों के कुछ अधिकारियों ने भी कुछ सीमित परिमाण में इन केन्द्रों को अकादमिक मार्गदर्शन दिया। क्षेत्र सलाहकारों द्वारा दिये गए मार्गदर्शन का एक संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है :

राजस्थान के माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों/यूनिटों का एक राज्य स्तर का सम्मेलन जुलाई 1970 में किया गया। परिषद् के क्षेत्रसलाहकार ने केन्द्रों/यूनिटों के 1971-72 के कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने में सम्मेलन की सहायता की।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों का राज्यस्तर का एक संयुक्त सम्मेलन फरवरी 1971 में आयोजित किया गया। परिषद् के क्षेत्र सलाहकार ने 1971-72 में किये जाने वाले कार्यक्रमों के लिए सिद्धान्त तैयार करने में सम्मेलन की सहायता की।

केरल के माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं का एक राज्य स्तर का सम्मेलन अप्रैल 1970 में किया गया। परिषद् के संबंधित क्षेत्रसलाहकार ने "विस्तार सेवाओं" के सम्बन्ध में एक टिप्पण प्रस्तुत किया जिस पर चर्चा की गई और बाद में केन्द्रों की अकादमिक और प्रशासनिक समस्याओं पर कुछ संकल्प किए गए। परिषद् में यह संकल्प पारित किया गया कि लोकशिक्षण के क्षेत्रीय उपनिदेशकों को तिमाही में एक बार अध्यापक-कालेजों के सभी प्रिंसिपलों के क्षेत्रीय सम्मेलन बुलाने चाहिए और स्कूल अध्यापकों के लिए अपने सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की समीक्षा करनी चाहिए। राज्य के तीनों

शैक्षिक क्षेत्रों में से हर एक के लिए एक-एक सलाहकार समिति का भी गठन किया गया।

परिषद् के त्रिवेन्द्रम स्थित क्षेत्र, सलाहकार के अनुरोध पर राज्य शिक्षा संस्थान के निदेशक ने राज्यों के प्राथमिक एवं माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों/यूनिटों के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं के दो संयुक्त सम्मेलन किये। इन सम्मेलनों में प्रत्येक केन्द्र/यूनिट के वार्षिक प्लान को अन्तिम रूप दिया गया।

मैसूर राज्य के माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों के सभी अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं का एक द्वि-दिवसीय सम्मेलन जून 1970 में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में प्रत्येक केन्द्र द्वारा किए गए कार्य की समीक्षा की गई और विभिन्न केन्द्रों के आगामी वर्षों के कार्यक्रमों को अन्तिम रूप दिया गया।

क्षेत्र सलाहकार (उत्तरीक्षेत्र) द्वारा अपने क्षेत्र के माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों को दिए गये अकादमिक मार्गदर्शन की विशेष बात यह थी कि केन्द्रों का ध्यान अपने काम को कक्षाओं की परिस्थितियों के अनुरूप बनाने की ओर आकर्षित किया गया। इसके पहले ओरियंटेशन पाठ्यक्रम कर्मशालाएँ आदि चलाने, शैक्षणिक सामग्री तैयार करने और कुछ स्कूलों में प्रायोगिक परियोजनाएँ चलाने पर बल दिया जाता था। प्राथमिक विस्तार सेवा केन्द्रों में किसी प्रकार की शैक्षणिक सामग्रियों के विकास पर बल दिया गया, जब कि पहले कक्षाओं में काम पर बल दिया जाता था।

उत्तरी क्षेत्र में, जहाँ कहीं भी संभव हो सका, माध्यमिक विस्तार सेवा केन्द्रों के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं को उन स्कूलों में ले जाया गया जहाँ पर प्राथमिक विस्तार केन्द्रों के कार्यक्रम चल रहे थे और इसी प्रकार प्राथमिक विस्तार केन्द्रों के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं को माध्यमिक विस्तार केन्द्रों के कार्यक्रम देखने का अवसर दिया गया। इसके अतिरिक्त विस्तार सेवा केन्द्रों से क्षेत्र सलाहकार के पास आने वाली त्रैमासिक रिपोर्टों की भी समीक्षा की गयी और क्षेत्र सलाहकार द्वारा केन्द्रों को उनके सुधार के लिए आवश्यक सुझाव दिए गए।

पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्र सलाहकार ने अंडमान निकोबार द्वीप समूह में विस्तार सेवा केन्द्र स्थापित करने का एक प्रस्ताव तैयार करके आवश्यक कार्यवाही के लिए शिक्षा निदेशक, अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पास भेजा।

2. संगोष्ठी पठन

संगोष्ठी-पठन के कार्यक्रमों में पुरस्कार प्राप्त करने वालों का वार्षिक राष्ट्रीय सम्मेलन मार्च 1971 में नई दिल्ली में किया गया। इस सम्मेलन में पुरस्कृत व्यक्तियों ने अपने-अपने पत्र पढ़े और विषयानुसार गठित अलग-अलग वर्गों में उन

पर चर्चाएँ कीं । पुरस्कार के लिए चुने गए 20 पत्रों का विषयावार वर्गीकरण इस प्रकार है :

राष्ट्रीय एकता—	—2
समाज विज्ञान का अध्यापन	—3
भाषा-अध्यापन	—4
विज्ञान अध्यापन	—4
स्कूलों में प्रशासनिक समस्याएँ	—4
विविध	—3
जोड़	20

3. संगोष्ठियाँ, कर्मशालाएँ, बैठकें, सम्मेलन आदि

1970-71 में विभिन्न क्षेत्रों में कई संगोष्ठियों, कर्मशालाओं, बैठकों, सम्मेलनों आदि का आयोजन किया गया, जिनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है :

(i) व्यापक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आई० टी० ई० पी०) के अन्तर्गत जून, 1970 में गौहाटी विश्वविद्यालय में एक संगोष्ठी की गयी। गौहाटी और डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालयों से संबंद्ध सभी नौ प्रशिक्षण कालेजों के बीस प्रिंसिपलों और लेक्चरारों ने संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के सुधार के लिए प्लान तैयार करना था । निम्नलिखित पक्षों पर विचार किया गया :

(क) पाठचर्या की पुनर्रचना ;

(ख) मार्गदर्शित स्कूल अनुभव ;

(ग) मूल्यांकन ; और

(घ) अन्य व्यावहारिक कार्य ।

दोनों विश्वविद्यालयों ने बी० एड० की पाठचर्या के आधार पर परिषद द्वारा पहले तैयार किए गये संशोधित कार्यक्रम को अपने सम्बद्ध प्रशिक्षण कालेजों में 1971-72 से लागू करने की सिफारिश की ।

(ii) पंजाब विश्वविद्यालय के शिक्षा-अध्ययन बोर्ड (बोर्ड आफ स्टडीज इन एजूकेशन) की एक बैठक अक्टूबर, 1970 में चंडीगढ़ में की गई थी, जिसमें परिषद् द्वारा अपने व्यापक अध्यापक-शिक्षा कार्यक्रम के अधीन तैयार किया गया बी० एड० का नया कार्यक्रम, मामूली फेर बदले के साथ 1971-72 के अकादमिक सत्र से लागू करने के लिए चुन लिया गया ।

(iii) पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ के अध्यापक शिक्षकों के लिए मार्च 1971 में एक संगोष्ठी-सहित कर्मशाला का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य परिषद् द्वारा विकसित नए बी० एड० पाठ्यक्रम के अध्यापन की तैयारी करने में अध्यापक-शिक्षकों की सहायता करना था। गणित, विज्ञान, और मातृभाषा के अध्यापन में संगोष्ठी सहित कर्मशाला की व्यवस्था एन० आई० ई० कैंपस, नई दिल्ली में की गई और अंग्रेजी के अध्यापन के संबंध में ऐसी व्यवस्था क्षेत्रीय अंग्रेजी संस्थान चंडीगढ़ के सहकार से चंडीगढ़ में की गई।

(iv) पूर्व प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के लिए पाठचर्या का एक प्रयोगात्मक संस्करण तैयार करके विभिन्न राज्यों व संघ राज्यक्षेत्रों में स्कूलपूर्व शिक्षा में रत विभिन्न अभिकरणों और संस्थाओं में वितरित किया गया।

(v) बी० एड० कार्यक्रम के विभिन्न पक्षों पर विचार करने के लिए पूर्वी क्षेत्र के अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के प्रिंसिपलों और वरिष्ठ लेक्चररों का एक सम्मेलन फरवरी 1971 में किया गया। क्षेत्र के विभिन्न राज्यों से 25 व्यक्तियों ने सम्मेलन में भाग लिया।

(vi) मद्रास विश्वविद्यालय के अध्यापक-शिक्षकों के लिए एक कर्मशाला का आयोजन कोयंबटूर में सितंबर 1970 में किया गया। इस कर्मशाला का उद्देश्य विश्वविद्यालय के बी० एड० और एम० एड० के कार्यक्रमों में संशोधन करना था। इस कर्मशाला में मद्रास विश्वविद्यालय से संबद्ध तेरह कालेजों के चालीस अध्यापक-शिक्षकों ने भाग लिया। बी० एड० (ग्रीष्मस्कूल सहित पत्राचार पाठ्यक्रम) और एम० एड० (विभिन्न प्रश्नपत्रों के लिए विस्तृत सिलेबस और व्यवहारिक कार्य के लिए सुझावों सहित) में सुधार करने के लिए योजनाओं के प्रारूप तैयार किए गए।

(vii) प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण के स्तर में सुधार करने के लिए पश्चिमी क्षेत्र के प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों का एक सम्मेलन मार्च, 1971 में भोपाल में किया गया। गुजरात, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश के प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों से प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया।

(viii) पिछली कर्मशालाओं में तैयार की गई विभिन्न यूनिटों के संबंध में चर्चा करने के लिए प्रशिक्षण कालेजों के लेक्चररों के लिए मनोविज्ञान की एक कर्म-शाला का आयोजन अजमेर में किया गया। राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा विहित नए सिलेबस के संबंध में उसकी कार्यात्मक उपयोगिता की दृष्टि से चर्चा की गई।

(ix) "महात्मा गांधी-हिजलाइफ एण्ड मैसेज" (महात्मागांधी—उनका जीवन और संदेश) नामक फिल्म पट्टी के 1800 प्रिंट तैयार करके राज्यों के शिक्षा विभागों में वितरित किए गए।

(x) समीक्षाधीन वर्ष में परिषद् की केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी के स्टाक में 160 फिल्में और आईं तथा 74 नए लोग उसके सदस्य बने। इसके अलावा विभिन्न

विषयों पर 54 फिल्मों का निरीक्षण (प्री-व्यू) किया गया और संग्रह के लिए 48 फिल्मों के लिए स्वीकृति दी गई। इस वर्ष लाइब्रेरी के 1524 सदस्यों को 9977 फिल्म और 219 फ़िल्म पट्टियाँ दी गई।

(xi) परिषद् की केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी का विस्तार करने की दृष्टि से चार फिल्म लाइब्रेरियाँ स्थापित की गई हैं—जो अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर स्थित चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में हैं। 1970-71 के अन्त तक इन लाइब्रेरियों के लिए विभिन्न शैक्षिक विषयों पर 62 फिल्मों के 248 प्रिंट प्राप्त किए गए। समीक्षाधीन वर्ष में इन चारों लाइब्रेरियों ने अपने-अपने क्षेत्र की आवश्यकताएँ पूरी कीं।

(xii) स्कूल के अध्यापकों में अध्यापन की इन सहायक सामग्रियों के प्रयोग के प्रति और उनके निर्माण में काम में लाए गए सिद्धान्तों और तकनीकों के प्रति रुचि पैदा करने के लिए प्रतियोगिता की एक योजना तैयार की गई। इस योजना के अधीन कुल 7,500 रुपए की कीमत के 20 पुरस्कार (10 पुरस्कार 500 रुपए प्रति पुरस्कार तथा 10 पुरस्कार 250 रुपये प्रति पुरस्कार) देने का प्रस्ताव है। यह योजना सभी प्रशिक्षण कालेजों राज्य शिक्षा संस्थानों, और राज्य शिक्षा विभागों में परिचालित की गई थी। इसका खूब प्रचार करने के लिए प्रमुख समाचार-पत्रों में इसका विज्ञापन भी किया गया। समीक्षाधीन वर्ष में 300 से अधिक प्रविष्टियाँ आई जिनका 1971-72 में पुरस्कार देने के लिए मूल्यांकन किया जाएगा।

(xiii) देश में स्कूलों को जिस प्रकार की मानक श्रव्य-दृश्य सहायक-सामग्री की आवश्यकता है उसका उत्पादन करने के लिए निजी उत्पादकों को प्रोत्साहन देने के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार देने की एक और योजना इस वर्ष तैयार की गई। इस योजना के आधीन नौ पुरस्कार देने का प्रस्ताव है—पाँच पुरस्कार 500 रुपए प्रति पुरस्कार वाले और चार पुरस्कार 250 रुपए प्रति पुरस्कार वाले। यह योजना प्रमुख समाचार-पत्रों में प्रकाशित की गई थी जिसमें श्रव्य दृश्य सामग्रियों के निजी निर्माताओं से प्रतियोगिता के लिए चीजें भेजने के लिए कहा गया था। पुरस्कार 1971-72 में वितरित किए जाएँगे।

(xiv) श्रव्य दृश्य-शिक्षा की एक कर्मशाला, पूर्वी क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय स्कूलों के भाषा अध्यापकों के लिए क्रिसमस की छुट्टियों के दौरान आयोजित की गई। इस अवसर पर अध्यापन सामग्री की एक प्रदर्शनी भी की गई।

(xv) क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अजमेर में प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के अध्यापक शिक्षकों के लिए श्रव्य दृश्य शिक्षा की एक कर्मशाला आयोजित की गई। भाग लेने वालों को श्रव्य दृश्य सहायक-सामग्री तैयार करने का प्रशिक्षण दिया गया।

(xvi) समीक्षाधीन वर्ष में किसानों की शिक्षा और कार्यात्मक साक्षरता परियोजना के अधीन 'किसान साक्षरता योजना' से संबंधित चार क्षेत्रीय कर्मशालाएँ,

हर क्षेत्र में एक-एक के हिसाब से चलाई गई। दक्षिणी क्षेत्रीय कर्मशाला का आयोजन अगस्त 1970 में हैदराबाद में किया गया। भाग लेने वालों ने इस कार्यक्रम को मजबूत बनाने और उसे और अधिक कार्यात्मक तथा प्रभावी बनाने के लिए किए जाने वाले प्रमुख उपायों के संबंध में चर्चा की। कार्यक्रम की सक्रिया योजना (आपरेशनल प्लान) भी तैयार की गयी। पश्चिमी क्षेत्रीय कर्मशाला का आयोजन सितंबर 1970 में जलगाँव में किया गया। योजना से संबंधित राज्य स्तर के सभी कार्मिकों ने कर्मशाला में भाग लिया। उत्तरी क्षेत्रीय कर्मशाला का आयोजन अक्टूबर, 1970 में किया गया। इस क्षेत्र में स्थित राज्यों के, इस कार्यक्रम से संबंध रखने वाले महत्त्वपूर्ण कार्मिकों ने कर्मशाला में भाग लिया। भाग लेने वालों ने अपने-अपने राज्यों में कार्यात्मक साक्षरता परियोजना की प्रगति के संबंध में संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने इस कार्यक्रम को चलाने के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों के संबंध में भी चर्चा की। पूर्वी क्षेत्रीय कर्मशाला दिसम्बर 1970 में दरभंगा में आयोजित की गई। इस क्षेत्र में पढ़ने वाले राज्यों के प्रतिनिधियों ने कार्य की प्रगति के संबंध में संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की और कार्यक्रम के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों के संबंध में बताया। उन्होंने कार्यक्रम को मजबूत बनाने के लिए कई सिफारिशें भी कीं।

(xvii) कार्यात्मक साक्षरता परियोजना के संबंध में एक राष्ट्रीय कर्मशाला का आयोजन शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय के सरकार से जनवरी, 1971 में नई दिल्ली में आयोजित किया गया। इस परियोजना से संबंधित सभी राज्यों के कार्मिकों ने कर्मशाला में भाग लिया। कर्मशाला में संघ शिक्षा और युवक सेवा, सूचना और प्रसारण, खाद्य और कृषि तथा सामुदायिक विकास और सहकारिता मंत्रालयों के अधिकारी तथा यूनेस्को, एफ० ए० ओ० तथा यू० एन० डी० पी० के प्रतिनिधि भी उपस्थित हुए। राज्यों से आये प्रतिनिधियों ने अपने अपने राज्यों में परियोजना के संबंध में हुई प्रगति की संक्षिप्त रिपोर्टें प्रस्तुत कीं। कार्यात्मक साक्षरता कार्यक्रम के सभी पहलुओं पर भी विस्तार से चर्चा की गई।

(xviii) समीक्षाधीन वर्ष में श्रमिक विद्यापीठ (पोलिवलेंट सेंटर), बंबई को अपने कार्यक्रम का विकास करने और उसकी डिजाइन करने के काम में तकनीकी मार्गदर्शन देने का काम जारी रखा गया। केन्द्र के विभिन्न श्रेणियों के औद्योगिक कर्मचारियों के लिए आवश्यकता अनुरूप कई पाठ्यक्रम चलाए गए। इन पाठ्यक्रमों का कार्यक्रम तैयार करने के काम में केन्द्र उद्योग, कर्मचारी संघों और अन्य अभिकरणों का सहयोग प्राप्त करने में सफल रहा। परिषद् द्वारा तैयार की गई "पोली वलेंट एजूकेशन सेंटर-एन इंटग्रेटेड एप्रोच टु दि एजूकेशन आफ वर्कर्ज" नामक पुस्तिका की प्रतियाँ पोलीवलेंट सेंटर बंबई तथा परियोजना में रुचि रखने वाले अन्य अभिकरणों को मार्गदर्शन के लिए भेजी गई थीं।

(xix) समीक्षाधीन वर्ष में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के फिल्म प्रभाग ने यूनेस्को के सहकार से 'पोलीवलेंट सेंटर' पर एक फिल्म बनाई। परिषद् ने स्क्रिप्ट

तैयार करने के काम में फिल्म प्रभाग की मदद की और फिल्म के लिए वांछित तकनीकी दत्त सामग्री भी उपलब्ध की।

(xx) परिषद् ने, समीक्षाधीन वर्ष में अपने पाठ्यपुस्तक कार्यक्रम के अधीन नमूने के कुछ निदर्शन चित्र (इलस्ट्रेशन) और अध्यापन यूनिटें बनाईं। ये चीजें संबंधित अभिकरणों को उपलब्ध की जाएँगी।

(xxi) समय समय पर विभिन्न पाठ्यपुस्तक अभिकरण, स्कूल पाठ्य-पुस्तकों के क्षेत्र में सक्षम लेखकों और समीक्षकों के नाम सुझाने के लिए अनुरोध करते रहे हैं। इसलिए इस क्षेत्र में योग्य व्यक्तियों की एक अखिल भारतीय सूची तैयार करने का निश्चय किया गया था। तदनुसार विभिन्न राज्यों और अन्य अभि-करणों से उपयुक्त नाम भेजने के लिए कहा गया था। उसके बाद उन लोगों से एक प्रोफार्मा पर अपना विवरण भेजने के लिए कहा गया था। इस वर्ष 1000 से अधिक ऐसे लोगों के विवरण एकत्र कर के उनका विषयवार और राज्यवार वर्गीकरण किया गया।

(xxii) पाठ्यपुस्तकों के निर्माण के काम को सुविधाजनक बनाने की दृष्टि से नेशनल बोर्ड आफ स्कूल टेक्स्टबुक्स (स्कूल पाठ्यपुस्तकों के राष्ट्रीयबोर्ड) ने पाठ्य-सामग्रियों के राष्ट्रीय संग्रह (पूल) के निर्माण की सिफारिश की है। इस सिफारिश को ध्यान में रखकर परिषद् में पाठ्य सामग्रियोंका एक राष्ट्रीय केंद्र स्थापित किया गया है। शुरू-शुरू में देश की और विदेश की-दोनों ही प्रकार की पाठ्यपुस्तकें एकत्र की जा रही हैं जिससे कि विभिन्न प्रयोजनों के लिए उनका अध्ययन किया जा सके और उनकी सहायता ली जा सके। केन्द्र में लगभग 6000 पुस्तकें हैं। समीक्षाधीन वर्ष में अनेक अध्यापकों, पाठ्यपुस्तकों के लेखकों, समीक्षकों और अन्य शिक्षकों ने केंद्र में उपलब्ध पाठ्य सामग्रियाँ देखीं और उनका उपयोग किया। विभिन्न अवसरों पर परिषद् में आने वाले शिक्षकों के लाभ के लिए विभिन्न विषयों की पाठ्यपुस्तकों की कई विशेष प्रदर्शनियाँ भी इस वर्ष आयोजित की गई। कुछ विदेशी शिक्षक और महानुभाव भी पाठ्यसामग्रियों का राष्ट्रीय केंद्र देखने आए।

(xxiii) परीक्षाओं की योजना तथा पश्चिमी बंगाल के एंग्लो इंडियन स्कूलों के अध्यापकों के लिए परिषद् द्वारा चलाई गई कर्मशालाओं के दौरान अंग्रेजी, गणित, सामान्य विज्ञान, इतिहास और भूगोल के विषयों में मिडिल स्कूल परीक्षा (1970 और आगे) के लिए विकसित नमूने की मूल्यांकन सामग्रियों से युक्त पाँच फोल्डर पश्चिमी बंगाल के एंग्लो इंडियन स्कूलों के निरीक्षणालय द्वारा प्रकाशित किए गए।

(xxiv) इस वर्ष, मूल्यांकन की अवधारणा और तकनीक के संबंध में प्रश्न पत्र तैयार करने वालों के लिए कर्मशालाओं की तीन रिपोर्टें, गुजरात एस० एस० सी० परीक्षा बोर्ड के लिए दो रिपोर्टें और राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के लिए

एक रिपोर्ट प्रकाशित की गई। ये रिपोर्टें देश में राज्य-स्तर के विभिन्न शैक्षिक अभिकरणों में परिचालित की गई।

(xxv) राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के एक कार्यदल के जरिए बुक कीपिंग और कमर्शियल प्रैक्टिस के नमूने के प्रश्नपत्रों वाले ब्रोशर तैयार किए गए। प्रश्नपत्र निर्माताओं की एक कर्मशाला के दौरान गुजरात एस० एस० सी० परीक्षा बोर्ड के लिए अंग्रेजी, प्रारंभिक गणित, सामान्य विज्ञान और सामाजिक अध्ययनों के विषयों में भी नमूने के प्रश्नपत्र तैयार किए गए।

(xxvi) आसाम के स्कूल अध्यापकों के लिए आन्तरिक मूल्यांकन पर एक कर्मशाला का आयोजन मई 1970 में किया गया। इसमें 32 लोगों ने भाग लिया।

(xxvii) राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के प्रश्नपत्र निर्माताओं के लिए प्रारंभिक गणित, सामान्य विज्ञान और सामाजिक अध्ययन के विषयों की एक कर्मशाला का आयोजन मई 1970 में किया गया। इसमें 44 लोगों ने भाग लिया।

(xxviii) गुजरात एस० एस० सी० परीक्षा बोर्ड के प्रश्नपत्र निर्माताओं के लिए अंग्रेजी, प्रारंभिक गणित, सामान्य विज्ञान और सामाजिक अध्ययन के विषयों में एक कर्मशाला का आयोजन जुलाई 1970 में किया गया। इसमें 37 व्यक्तियों ने भाग लिया।

(xxix) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान के लिए प्रारंभिक गणित, सामान्य विज्ञान और सामाजिक अध्ययन के विषयों में सूझ-बूझ वालों की एक कर्मशाला 24 दिसम्बर, 1970 से 2 जनवरी, 1971 तक चलाई गई। कर्मशाला में 54 लोगों ने भाग लिया।

(xxx) गुजरात एस०एस०सी० परीक्षा बोर्ड के प्रश्नपत्र निर्माताओं के लिए अंग्रेजी, प्रारंभिक गणित, सामान्य विज्ञान और सामाजिक अध्ययन के विषयों की एक कर्मशाला का आयोजन फरवरी, 1971 में किया गया। उसमें 36 लोगों ने भाग लिया।

(xxxi) समीक्षाधीन वर्ष में, परिषद् के अनुरोध पर, भारतीय स्कूल प्रमाणपत्र परीक्षा के लिए परीक्षा सुधार का एक व्यापक कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। प्रारंभ में भारतीय स्कूल प्रमाणपत्र परीक्षा के लिए परिषद् के परीक्षा के ढांचे के स्तर का अध्ययन किया गया और सभी संबद्ध स्कूलों के लिए मौलिक विषयों की नयी सामान्य परीक्षाओं में परिषद् जिन सुधारों को लागू करना चाहती है उसके लिए एक प्लान तैयार किया गया। इस प्लान के आधार पर नमूने की मूल्यांकन सामग्रियों के विकास के लिए एक कर्मशाला की योजना बनाई गई जो 1971-72 के प्रारंभ में आयोजित की जाएगी।

(xxxii) विभिन्न राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक पत्रिकाओं में से मूल्यांकन के क्षेत्र से संबंधित अनेक समस्याओं पर लिखित सात निबंध छाँटे गए थे।

इनकी प्रतियाँ बनवा कर उन्हें बड़ी संख्या में शैक्षिक अभिकरणों तथा इस विषय में रुचि लेने वाले व्यक्तियों में बाँटा गया, जिससे वे इस क्षेत्र की नवीनतम गतिविधियों से परिचित हो सकें।

(xxxiii) माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, मध्यप्रदेश के सहकार से वाणिज्य विषय के प्रश्नपत्र निर्माताओं की एक कर्मशाला अप्रैल, 1970 में आयोजित की गई। इसमें मध्यप्रदेश के उच्चतर माध्यमिक स्कूलों और अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के 28 लोगों ने भाग लिया।

(xxxiv) उड़ीसा के माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लाभ के लिए मूल्यांकन पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का ध्यान परीक्षा के लिए सुधरी हुई परीक्षा सामग्री तैयार करने की ओर केन्द्रित था।

(xxxv) दिसम्बर, 1970 में एक संगोष्ठी का आयोजन किशोरों की समस्याओं के संबंध में चर्चा करने के लिए किया गया। उसमें देशभर की अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं से शैक्षिक मनोविज्ञान के पन्द्रह अध्यापकों ने भाग लिया।

(xxxvi) दक्षिणी ज़ोन और केंद्रीय ज़ोन के अध्यापक-शिक्षकों और मार्गदर्शन कर्मचारियों के लिए कक्षा में समाजमिति विषय पर दो कर्मशालाएँ क्रमशः दिसम्बर, 1970 और मार्च 1971 में आयोजित की गई। दक्षिणी ज़ोन की कर्मशाला में केरल, आंध्रप्रदेश, मैसूर और तामिलनाडु क राज्यों में तेईस अध्यापक शिक्षकों और मार्गदर्शन कर्मचारियों ने भाग लिया जबकि केन्द्रीय ज़ोन की कर्मशाला में मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात से अट्ठाइस अध्यापक शिक्षकों और मार्गदर्शन कर्मचारियों ने भाग लिया।

(xxxvii) प्रशिक्षण कालेजों के अध्यापकों, विश्वविद्यालयों और डिग्री कालेजों के मनोविज्ञान के अध्यापकों, अस्पतालों, औषधालयों, अनुसंधान संस्थानों और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में काम करने वाले मनोवैज्ञानिकों या मनश्चिकित्सकों के लाभ के लिए, कक्षा की स्थितियों में व्यवहार में सुधार लाने के विषय पर 28 जनवरी से 4 फरवरी 1971 तक एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। देश भर से पैंतालीस व्यक्तियों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया।

(xxxviii) प्राथमिक स्कूलों के ग्रेड I में अध्यापन कार्य का संगठन करने के लिए उपयुक्त मार्ग निश्चित करने के लिए एन०आर०ई० प्रयोगात्मक स्कूल, नई दिल्ली में एक प्रयोगशाला फरवरी, 1971 में आयोजित की गई। इसमें दिल्ली के चुने हुए प्राथमिक स्कूलों के बारह अध्यापकों ने भाग लिया। इस कर्मशाला में अध्यापन के लिए एक एकीकृत मार्ग अपनाने और शिक्षा को बाल मनोविज्ञान से संबद्ध करने पर बल दिया गया। कर्मशाला में भाग लेने वालों ने ग्रेड I के लिए पहले तीन महीने का कार्यक्रम तैयार किया जिसका लक्ष्य एक ओर तो बच्चे में स्कूल जाने की आदत डालना तथा अध्यापक और बच्चों में घनिष्ठता पैदा करना

था और दूसरी ओर अभिभावकों और अध्यापकों तथा स्कूल और समाज में संबंध स्थापित करना था।

(xxxix) प्राथमिक स्कूल अध्यापकों के लिए पढ़ने के संबंध में एक संगोष्ठी मार्च, 1971 में आयोजित की गई।

(xl) विभिन्न राज्यों में कार्य-अनुभव के क्षेत्र में चल रहे कार्यक्रमों के संबंध में चर्चा करने के लिए फरवरी, 1971 में नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय सम्मेलन किया गया। सम्मेलन में बारह राज्यों के चौबीस प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अन्य बातों के साथ साथ सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों ने कार्य-अनुभव की संक्रिया-अवधारणा का निर्माण किया, पाठ्यचर्या के ढाँचे का विकास किया और इस क्षेत्र के ऐसे न्यूनतम कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जिसे प्राथमिक स्कूलों में तुरन्त शुरू किया जा सकता है। सम्मेलन ने उच्चतर स्तर के कार्यक्रमों के लिए एक रूपरेखा भी तैयार की। इसके अतिरिक्त परिषद् ने कार्य-अनुभव शुरू करने के लिए जरूरी अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के संबंध में भी विचार किया।

(xli) बालबाड़ियों के लिए उपयुक्त कार्यक्रमों/क्रियाकलापों का विकास करने के लिए एक कर्मशाला का आयोजन मार्च, 1971 में किया गया जिसमें विभिन्न राज्यों से विशेषज्ञों ने भाग लिया।

(xlii) "भारत के आदिवासियों की शिक्षा और आर्थिक विकास" पर एक संगोष्ठी का आयोजन दिसम्बर, 1970 में किया गया।

(xliii) विभिन्न राज्यों के प्राथमिक विस्तार सेवा केंद्रों के अवैतनिक निदेशकों और समन्वयकर्ताओं का, प्राथमिक स्कूलों और कनिष्ठ अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में प्रयोगों और परियोजनाओं के लिए सहायता की योजना के संबंध में दिशा निर्देशन के लिए एक संगोष्ठी का आयोजन फरवरी, 1971 में किया गया। योजना पर विस्तार के साथ चर्चा करने के अलावा संगोष्ठी में भाग लेने वालों ने प्रयोगात्मक, विकासात्मक, क्रियाशील अनुसंधान और सहकारिता परियोजनाओं के लिए चार डिजाइनें तैयार कीं।

(xliv) अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष, 1970 मनाने के लिए प्राथमिक और कार्याभिमुखी शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के संबंध में प्राथमिक और कार्याभिमुखी शिक्षा की समस्याओं और उसके निदानों के संबंध में एक प्रदर्शनी की गई।

(xlv) सभी राज्य शिक्षा संस्थानों के अधिकारियों के लिए नवम्बर, 1970 और फरवरी-मार्च, 1971 में दो राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं। संगोष्ठियों का मुख्य उद्देश्य पाठचर्या, शिक्षण-सामग्रियों और पद्धतियों, मूल्यांकन, अध्यापन संबंधी सहायया सामग्रियों के क्षेत्र में नए विचारों, आविष्कारों आदि के संबंध में चर्चा करना था। शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकीकरण, जनसंख्या शिक्षण, अवर्गित स्कूल प्रणाली, आदि जैसे अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर भी चर्चा की गई।

(xlvi) रीजनल कालेज आफ एजुकेशन, अजमेर, ने कनिष्ठ प्रशिक्षण कालेजों के अध्यापक शिक्षकों के लाभ के लिए चलाए जा रहे सेवावर्ती शिक्षा कार्य-क्रमों के संबंध में चर्चा करने के लिए उत्तरी क्षेत्र के राज्यशिक्षा के निदेशकों की एक द्वि-दिवसीय बैठक बुलायी।

(xlvii) पश्चिमी क्षेत्र के राज्य शिक्षा संस्थानों के निदेशकों का एक सम्मेलन, रीजनल कालेज आफ एजुकेशन भोपाल तथा उक्त क्षेत्र-सलाहकार, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा संयुक्त रूप से मार्च, 1971 में आयो-जित किया गया। इस सम्मेलन में संबंधित राज्य संस्थानों के कार्यक्रमों के संबंध में चर्चा की गई।

(xlviii) पूर्वी क्षेत्र के माध्यमिक स्कूल अध्यापकों के लिए प्रयोगात्मक परियोजनाओं के विषय में तीन दिनों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का उद्देश्य सम्मेलन में भाग लेने वालों को कक्षाओं की परिस्थितियों में प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना था।

(xlix) उड़ीसा के माध्यमिक स्कूलों के चुने हुए गणित-अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षण कालेजों के मैथड-मास्टरों का एक सम्मेलन, राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विहित गणित के सिलेबस का अध्ययन करने और उसमें सुधारों का सुझाव देने के लिए जनवरी, 1971 में आयोजित किया गया।

(l) संस्थानों के प्लानों की तैयारी, उनके क्रियान्वयन और मूल्यांकन के संबंध में विस्तार से चर्चा करने के लिए राजस्थान के हाई और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के प्राधनाध्यापकों की तीन दिनों की एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

(li) राजस्थान के हाई/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए गणित में कार्यक्रमानुवर्ती अधिगम के सम्बन्ध में एक कर्मशाला आयोजित की गई: इस कर्मशाला में भाग लेने वालों ने 'सेट थ्योरी' तथा 'स्कालर वैक्टर क्वांटिटीज' के कार्यक्रमों का अध्ययन किया और इस प्रकार वे उदाहरणों की सहायता से और कार्यक्रमानुवर्ती शिक्षण का अभ्यास कर के कार्यक्रमों के मूल्यांकन की प्रक्रिया सीख सके।

(lii) समीक्षाधीन वर्ष में राजस्थान के हाई/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए गणित की शिक्षण सामग्रियाँ तैयार करने के लिए एक कर्मशाला आयोजित की गई। भाग लेने वाले प्रतिनिधि गणित के विभिन्न विषयों की शिक्षण की सहायता सामग्रियों की खोज और निर्माण में लगे रहे।

(liii) विज्ञान क्लब प्रयोजकों के लिए इस वर्ष दो संस्थान आयोजित किए गए—एक राजस्थान के विज्ञान अध्यापकों के लिए और दूसरा पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश के विज्ञान अध्यापकों के लिए। इन दोनों ही संस्थानों में भाग लेने वालों ने काष्ठकर्म और धातुकर्म की कलाएँ सीखीं, अनुसंधानात्मक

परियोजना तैयार की और संगृहीत दत्त सामग्री के आधार पर उन्होंने एक परियोजना रिपोर्ट भी तैयार की। इस के अलावा भाग लेने वालों से सस्ती देशी सामग्री से कामचलाऊ उपकरण भी बनवाए गए।

(liv) राजस्थान के अंग्रेजी के अध्यापकों के लिए अंग्रेजी अध्यापन की एक कार्मशाला आयोजित की गई। भाग लेने वाले व्यक्तियों ने आधुनिक भाषा अध्यापन के सभी पहलुओं पर चर्चा की और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में अंग्रेजी के अध्यापन में पाठों की योजना तैयार की।

(lv) अंग्रेजी के अध्यापन में 'फंक्शनल ग्रामर' और 'स्ट्रक्चरल एप्रोच' के संबंध में चर्चा करने के लिए राजस्थान के हाई/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के अंग्रेजी के अध्यापकों की एक संगोष्ठी आयोजित की गई।

(lvi) राजस्थान के हाई/उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के हिन्दी अध्यापकों को हिन्दी के अध्यापन में व्याकरण की महत्त्वपूर्ण भूमिका का परिचय कराने के लिए एक कर्मशाला आयोजित की गई। कर्मशाला में जिन विषयों पर चर्चा की गई उनमें नागरी लिपि और हिन्दी शब्दों का उच्चारण; क्रियात्मक (फंक्शनल) व्याकरण और उसकी उपयोगिता; तथा संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और काल का अध्यापन सम्मिलित था। भाग लेने वालों ने व्याकरण के मॉडल पाठों की मदद से माध्यमिक स्तर पर हिन्दी के अध्यापन में सुधार करने के लिए एक विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया।

(lvii) उत्तर प्रदेश के माध्यामिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए कृषि-विज्ञान के अध्यापन विषय में एक कर्मशाला आयोजित की गई। कर्मशाला में प्रयोगात्मक परियोजनाओं, खेत में काम करने, किचन गार्डनिंग आदि के से विषयों पर चर्चा की गई।

(lviii) राजस्थान और उत्तर प्रदेश के माध्यमिक स्कूलों के वाणिज्य अध्यापकों को बुक कीपिंग के अध्यापन के नए तरीकों से परिचित कराने के लिए एक कर्मशाला आयोजित की गई।

(lix) राजस्थान के सहकारी स्कूलों के अध्यापकों के लिए रीजनल कालेज आफ एजुकेशन, अजमेर ने जीव विज्ञान में एक कर्मशाला आयोजित की। जिन लोगों ने भाग लिया उन्हें जीव विज्ञान और जन्तु विज्ञान के अध्यापन में व्यावहारिक कार्य का विशेष प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा इन विषयों में हाल ही में सम्मिलित की गई नई सामग्री के अध्यापन के विषय में भी बताया गया।

(lx) समीक्षाधीन वर्ष में, मैसूर के हाइस्कूल तथा रीजनल कालेज आफ एजुकेशन, मैसूर के विज्ञान विभाग के अध्यापकों का एक अध्ययन मंडल (स्टडी सर्कल)

बनाया गया। इस ग्रुप ने अपनी कई बैठकें कीं और "दि ऐटम" विषयक फिल्म पट्टी तैयार करने के लिए सामग्री को अंतिम रूप दिया।

(lxi) केंद्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली ने ब्रिटिश काउंसिल के सहकार से स्कूल पुस्तकालयों के उपयोग पर एक संगोष्ठी का आयोजन नवम्बर, 1970 में किया। इसमें 30 लोगों ने भाग लिया।

(lxii) दिल्ली के उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों के लिए माध्यमिक स्तर पर भूगोल के अध्यापन के विषय में एक-एक दिन की तीन संगोष्ठियाँ आयोजित की गई। विहित पाठ्यचर्या और भूगोल के अध्यापन की पद्धति आदि के संबंध में चर्चा करने के लिए माध्यमिक स्कूलों के भूगोल के अध्यापकों, दिल्ली विश्वविद्यालय में भूगोल विभाग के कार्मिकों और केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अधिकारियों को विहित पाठचर्या और भूगोल के अध्यापन की पद्धति पर चर्चा करने के लिए एकत्र किया गया।

(lxiii) विभिन्न निर्देशन-क्रमों में दिल्ली के कैरियर मास्टरों के दिशा निर्देशन के लिए जनवरी, 1971 में दो कर्मशालाएँ आयोजित की गई।

(lxiv) लोकशिक्षण निदेशालय मध्यप्रदेश के सहकार से भोपाल के कुछ चुने हुए स्कूल-अध्यापकों के लिए मई, 1970 में एक संगोष्ठी आयोजित की गई। छियालिस अध्यापकों ने संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी में एक प्रमुख काम स्कूलों के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने का था।

(lxv) माध्यमिक स्तर पर इतिहास के अध्यापन में छात्रों के योग पर एक अखिल भारतीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी के मुख्य लक्ष्य ये थे—

(क) इतिहास के अध्यापन का उद्देश्य और उसके पाठचर्या संबंधी पहलू तथा इस कार्य में विद्यार्थियों के योगदान के संबंध में चर्चा करना।

(ख) इतिहास के अध्यापन में विद्यार्थियों के योगदान की प्रकृति और संभावनाओं के संबंध में चर्चा करना ;

(ग) इतिहास के अध्यापन में विद्यार्थियों के योगदान के रूप और तरीके ठोस उदाहरण देकर सुझाना ; और

(घ) इतिहास के अध्यापन के कुछ उद्देश्यों के आधार पर विद्यार्थियों के योगदान के कुछ उदाहरण तैयार करना।

संगोष्ठी के अनुवर्ती कार्य के रूप में "स्टुडेंट पार्टिसिपेशन इन द टीचिंग आफ हिस्ट्री" विषय पर एक ब्रोशर तैयार किया जा रहा है।

(lxvi) 'दि इंडियन एसोसिएशन आफ टीचर एजुकेटर्स' तथा 'आल इंडिया फेडरेशन आफ एजुकेशनल एशोसिएशन' के सहकार से जनसंख्या-शिक्षण पर एक कर्मशाला मई, 1970 में आयोजित की गई। कर्मशाला का मुख्य काम शैक्षणिक सामग्रियाँ तैयार करना और माध्यमिक प्रशिक्षण कालेजों में जनसंख्या शिक्षण के अध्यापन के लिए पद्धति विकसित करना था। कर्मशाला में 36 लोगों ने भाग लिया। इस कर्मशाला में माध्यमिक प्रशिक्षण कालेजों के अध्यापक-शिक्षकों के अलावा यू०एस०ए०आइ०डी०, यू०एन०डी०पी०, पाथ फाइंडर फंड, भारतीय फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो तथा स्वास्थ्य और परिवार नियोजन ब्यूरों के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। कर्मशालो में प्रस्तुत किए गए पत्रों और कार्यदलों की रिपोर्टों के आधार पर माध्यमिक प्रशिक्षण कालेजों के लिए जनसंख्या-शिक्षण पर एक पुस्तिका तैयार की गई थी जो संबंधित अभिकरणों में परिचालित की गई।

(lxvii) प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए जनसंख्या शिक्षण पर एक संगोष्ठी का आयोजन ग्वालियर में अक्टूबर, 1970 में किया गया था। पश्चिमी क्षेत्र के बहुत से लोगों ने संगोष्ठी में भाग लिया।

(lxviii) जनसंख्या शिक्षण पर दो अखिल भारतीत कर्मशालाएँ जुलाई और दिसम्बर 1970 में आयोजित की गईं। जनसंख्या शिक्षण में पाठचर्या के लिए प्रस्ताव तैयार करने के लिए इन कर्मशालाओं में विषयों के बहुत से विशेषज्ञ और योग्य अध्यापक बुलाए गए। जनसंख्या-शिक्षण पर सिलेबस का एक प्रारूप कर्मशाला में तैयार किया गया। सिलेबस इस विचार पर आधारित है कि जनसंख्या शिक्षण स्कूलों के वर्तमान विषयों के साथ एकीकृत होना चाहिए। इसमें जनसंख्या शिक्षण का स्कूल वर्गीकरण निम्नलिखित विषयों के अनुसार किया गया है :—

(क) जनसंख्या वृद्धि

(ख) आर्थिक विकास और जनसंख्या

(ग) सामाजिक विकास और जनसंख्या

(घ) स्वास्थ्य, पोषाहार और जनसंख्या

(ङ) जीववैज्ञानिक तत्व—पारिवारिक जीवन और जनसंख्या

4. सामान्य

उपर्युक्त पैराग्राफों में उल्लिखित कार्यक्रमों के अलावा, समीक्षाधीन वर्ष ने अपने अधिकारियों को, राज्य शिक्षा विभागों, राज्य माध्यमिक शिक्षा बोर्डों तथा

परिषद् की रुचि के स्कूल-शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे अभिकरणों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में, सलाहकार/सहायकों के रूप में काम करने के लिए अनेक अवसरों पर भेजा। विचारों और अनुभवों के विनिमय के लिए परिषद् के अधिकारियों ने स्वयं भी अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/बैठकों में भाग लिया।

परिशिष्ट 14

राज्यों तथा संघ क्षेत्रों के साथ सहकार
(1970-71)

संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार स्कूल-शिक्षा अनिवार्यत: राज्यों की कार्य-सूची के अंतर्गत आता है और केन्द्र के योगदान की सीमा एक ऐसे संगठन के रूप में कार्य करने तक सीमित है जिसका काम विचारों और सूचना के सम्बन्ध में सम्मति देना ; शोध कार्य करना, प्रयोग तथा मार्ग-दर्शक प्रायोजनाओं का संचालन, एवं मौलिकता लाने वाले प्रभावों की व्यवस्था-विशेषत: गुणात्मक सुधार के कार्य-क्रमों के बारे में—है। अत: एक केन्द्रीय अभिकरण के रूप में एन० सी०ई० आर० टी के कार्य की उपयोगिता इस बात पर निर्भर करती है कि वह कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में किस सीमा तक राज्य सरकारों तथा संघ राज्यक्षेत्र प्रशासनों से सहयोग प्राप्त कर सकती है। फलत: वर्ष के दौरान राज्यों के साथ एक घनिष्ठ सम्पर्क विकसित करने के लिए सभी सम्भव प्रयास किए गए। 1970-71 के दौरान राज्य सरकारों तथा परिषद् के बीच सहकार के सूचक कार्यक्रमों का एक संक्षिप्त ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है :

1. विज्ञान की शिक्षा में सुधार

सभी विज्ञान-विषयों में प्राथमिक और मिडिल स्कूल के स्तर पर पाठ्यक्रम और शैक्षणिक सामग्री, प्राथमिक विज्ञान एवं माध्यमिक स्कूल किट सप्लाई करने तथा राज्य को प्रयोगात्मक मार्गदर्शक प्रायोजना स्कूलों के शिक्षकों के लिए अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने में सहायता देने के लिए आधार कर्मचारियों की प्रतिनियुक्ति के रूप में सहकार प्रदान किया गया। सभी अहिन्दी भाषी राज्यों को उनके द्वारा तैयार किए गए भाषा रूपान्तरों में प्रयोग के लिये सभी पाठ्यपुस्तकों के लिए चित्र भी सप्लाई किए गए। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश तथा दिल्ली के प्रदेशों/संघ राज्य क्षेत्रों को पाठ्यपुस्तकों के हिन्दी भाषान्तर सप्लाई किए गए। वर्ष के दौरान कुल 46,320 (प्राथमिक 18,650 और माध्यमिक 27,670) पाठ्यपुस्तकें सप्लाई की गईं। इन पाठ्यपुस्तकों के अलावा राज्यों के अनुरोध पर उन्हें अंग्रेजी में अध्यापकों के लिए गाइडें भी सप्लाई की गईं। राज्यों/संघ राज्यक्षेत्रों को 1717 प्राइमरी विज्ञान तथा मिडिल स्कूल स्तर के किट भी सप्लाई किये गये जिनका राज्यवार ब्यौरा संलग्निका में दिया गया है।

2. सामाजिक विज्ञानों तथा मानव विज्ञानों की शिक्षा में सुधार

आंध्र प्रदेश

परिषद् ने सामाजिक विज्ञानों के पाठ्यक्रम में संशोधन और सुधार में राज्य सरकार के शिक्षा-विभाग की सहायता की।

केरल

परिषद् ने त्रिवेन्द्रम की हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण संस्था को उसके द्वारा स्थापित एक कार्यशाला (वर्कशाप) में तकनीकी सहायता दी।

मैसूर

मैसूर राज्य के शिक्षा विभाग ने सामाजिक विज्ञानों तथा हिन्दी के कक्षा I से vII तक के पाठ्यक्रमों में संशोधन करने और समुन्नत पाठ्यक्रम बनाने के लिए पाठ्यक्रम समितियों की स्थापना की। पाठ्यक्रम समितियों ने पाठ्यक्रमों के प्रारूप तैयार किए जिन्हें सितम्बर 1970 में मैसूर में हुई कार्यशाला में अंतिम रूप दिया गया। परिषद् ने पाठ्यक्रमों के प्रारूपों को अंतिम रूप देने में तकनीकी सहायता तथा मार्गदर्शन दिया।

परिषद् ने 'भौतिक भूगोल' पर अपनी पाठ्यपुस्तक के कन्नड़ में अनुवाद की अनुमति प्रदान कर दी। कन्नड़ अनुवाद कागज की पृष्ठ और कपड़े की जिल्द वाले दो संस्करणों में प्रकाशित किया गया है। वर्ष के दौरान परिषद् की दो अन्य भूगोल पुस्तिकों के अनुवाद की भी अनुमति दे दी गई है।

अन्डमान और निकोबार द्वीप समूह

परिषद् द्वारा संघ राज्य क्षेत्र अन्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के शिक्षा विभाग को श्रेणी III के लिए उसकी सामाजिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक स्वीकार करने में तकनीकी सहायता प्रदान की गई।

3. स्कूलों के पाठ्यक्रमों में जनगणना शिक्षा को लागू करना

परिषद् ने उदयपुर (राजस्थान) तथा पटना (बिहार) की राज्य शिक्षा संस्थाओं और असम के माध्यमिक शिक्षा मण्डल को अनेक स्कूल पाठ्यक्रमों में जनगणना शिक्षा को शामिल करने के बारे में कार्यक्रमों के संगठन सम्बन्धी सहायता दी।

4. समाज शास्त्र में प्राइमरी स्कूल अध्यापकों को दिशा निदेशन

दिल्ली नगर निगम तथा केन्द्रीय विद्यालय संगठन को उनके प्राथमिक कक्षाओं के अध्यापकों का 'समाज-शास्त्र' के क्षेत्र में दिशानिदेशन में आवश्यक सहायता प्रदान की गई।

5. कार्यक्षेत्रीय सम्बन्धों द्वारा राज्यों के बीच सम्पर्क

राज्यों में परिषद् के कार्यक्षेत्रीय सलाहकारों ने प्रतिवेद्य वर्ष के दौरान अपने क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत जितने भी अधिक से अधिक विस्तार सेवा-केन्द्रों का निरीक्षण कर सकते थे उतनों का किया और उनकी प्रशासनिक तथा अकादमिक समस्याओं के हल के लिए अपेक्षित सहायता दी

उत्तरी क्षेत्र के कार्यक्षेत्रीय सलाहकार ने अपने क्षेत्र के राज्यों के शिक्षा विभागों के सम्बन्धित अधिकारियों के साथ अनेक बैठकें कीं और उनके साथ विस्तार सेवा केन्द्रों की समस्याओं पर चर्चा की। उन्होंने राज्यों के शिक्षा विभागों के अधिकारियों को एन०आई०ई० के विभिन्न विभागों का निरीक्षण करने के लिये भी निमंत्रित किया। इससे राज्यों के अधिकारियों को अपार सहायता मिली क्योंकि वे अपने-अपने राज्यों की विभिन्न शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं को हल करने में परिषद् के अधिकारियों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सके।

परिषद् ने पंजाब तथा हरियाणा के स्कूल बोर्ड्स आफ़ एजुकेशन को मूल्य निर्धारण विषयक साहित्य दिया। इन दोनों बोर्डों के अधिकारियों ने परीक्षाओं में में सुधार के अपने कार्यक्रमों पर चर्चा करने के लिए प्रतिवेद्य वर्ष के दौरान एन० आई० ई० का निरीक्षण किया। जम्मू व कश्मीर के सैकन्ड्री बोर्ड आफ़ एजुकेशन को भी माध्यमिक स्तर पर अपनी पाठ्यपुस्तकों के संशोधन में सहायता प्रदान की गई। बोर्ड को परिषद् की पाठ्यपुस्तकों का एक सैट दिया गया ताकि इनका बोर्ड द्वारा अपनी पाठ्यपुस्तकों में सुधार करने के लिए मार्गदर्शक के रूप में प्रयोग किया जा सके।

राज्यों में परिषद् के कार्यक्षेत्रीय सलाहकारों ने राज्य सरकार के अधिकारियों का ध्यान एन०आई०ई० के विभिन्न विभागों के अनेक कार्यक्रमों की ओर आकर्षित किया।

6. राज्यों से प्राप्त पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन

परिषद् ने राजस्थान और जम्मू व काश्मीर से प्राप्त पाठ्यपुस्तकों की पाण्डुलिपियों की विस्तृत समीक्षा की। समीक्षा की रिपोर्टें सम्बन्धित पाठ्यपुस्तक अभिकरणों को भेज दी गईं।

7. पाठ्यपुस्तक निर्माण के बारे में सामग्री बाँटना

विभिन्न स्कूल विषयों पर पाठ्यपुस्तकों के निर्माण और मूल्यांकन सम्बन्धी आधारभूत सिद्धांतों और प्रक्रियाओं के नमूनों और साहित्य के रूप में राज्यों को पाठ्यपुस्तक निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर परिषद् द्वारा तैयारी की गई सामग्री भेजी गई।

8. परीक्षाओं में सुधार

परिषद् ने राजस्थान के शिक्षा-प्रशासकों के वार्षिक सम्मेलन को राज्य में परीक्षाओं में सुधार के कार्यक्रम से सम्बन्धित कुछ विषयों को स्पष्ट करने में सहायता दी। यह सम्मेलन दिसम्बर, 1970 में बीकानेर में हुआ और इन विषयों पर सम्मेलन के तीन अधिवेशनों में विचार किया गया।

राजस्थान के तकनीकी शिक्षा निदेशालय को भी अपने परीक्षा-सुधार कार्यक्रम के तैयार करने में सहायता दी गई।

पश्चिम बंगाल के एंग्लो इंडियन स्कूलों के निरीक्षालय को उस परीक्षा-सुधार कार्यक्रम पर पुनर्विचार करने तथा उसे मजबूत बनाने में भी सहायता की गई जिसे उसने फरवरी, 1971 में कलकत्ता में हुई स्कूलों के अध्यक्षों की संगोष्ठी के दौरान एन०सी०ई०आर०टी० की सहायता से शुरू किया था।

9. राज्यों में साक्षरता कार्य निदेशकों का दिशा-निदेशन

परिषद् ने 'किसान साक्षरता योजना' में कार्य करने के लिये चुने गए साक्षरता कार्य निदेशकों के दिशा निदेशन में उत्तर प्रदेश में आगरा जिले के और तमिलनाडु में तिरुचिरापल्ली के जिला शिक्षा अधिकारियों की सहायता की।

10. स्कूल सुधार कार्यक्रम

परिषद् ने मध्य प्रदेश में स्कूल सुधार के सारे कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिये मार्गदर्शक सिद्धांत तैयार करने में राज्य के शिक्षा विभाग को सहायता दी।

11. संगठनात्मक योजना

परिषद् ने मैसूर और तमिलनाडु के राज्य शिक्षा विभागों को दोनों राज्यों के जिला शिक्षा अधिकारियों के लिये संगठनात्मक योजना पर संगोष्ठियों के आयोजन में सहायता दी।

12. विज्ञान में निदेशक सामग्री की तैयारी करना

परिषद् ने पांडिचेरी के शिक्षा विभाग को माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिये विज्ञान की निदेशन सामग्री तैयार करने की एक कार्यशाला चलाने में जनवरी, 1971 में सहायता दी।

13. मनीपुर में निरीक्षण अधिकारियों तथा समायोजन कर्त्ताओं के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाने में मार्गदर्शन

मनीपुर प्रशासन के शिक्षा विभाग के अनुरोध पर परिषद् ने संघ राज्य क्षेत्र मनीपुर के प्राथमिक विस्तार केन्द्रों के सभी निरीक्षण अधिकारियों तथा

संमायोजकों के लिए एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाने में मार्गदर्शन किया। यह प्रशिक्षण पाठ्यक्रम फरवरी 1971 में इम्फाल में चलाया गया।

14. स्त्री शिक्षा में सुधार

स्त्री शिक्षा के सिद्धान्तों और कार्यक्रमों पर राज्य स्तरीय संगोष्ठी के आयोजन का कार्यक्रम केन्द्रीय शिक्षा तथा युवक सेवाएँ मंत्रालय द्वारा 1970-71 में एन० सी० ई० आर० टी को हस्तांतरित कर दिया गया। परिषद् ने इस वर्ष के दौरान इन संगोष्ठियों के आयोजन में राज्य सरकारों की सहायता की।

15. कार्य अनुभव पर विकास कार्यक्रम

परिषद् ने आंध्र प्रदेश तथा मैसूर राज्यों के शिक्षा विभागों और केन्द्रीय विद्यालय संगठन को भी उनके कार्य-अनुभव का विकास करने में सहायता दी।

उदयपुर (राजस्थान) के राज्य शिक्षा विभाग को शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिये कार्य-अनुभव की कार्यशाला चलाने में भी सहायता दी गई।

16. स्कूलों के प्रिंसिपलों तथा शिक्षा अधिकारियों के लिए दिशा-निदेशन कार्यक्रम

दिल्ली प्रशासन के अनुरोध पर हायर सैकंड्री स्कूलों के प्रिंसिपलों के एक चुने हुए दल तथा दिल्ली के शिक्षा अधिकारियों के लिए मई-जून, 1970 के दौरान 3 सप्ताह का एक दिशा-निदेशन कार्यक्रम चलाया गया।

अनुबंध

प्राथमिक विज्ञान और मिडिल स्कूल स्तर के किटों का राज्यवार, वितरण—1970-71

क्र० सं	राज्य/ संघ शासित क्षेत्र का नाम	प्राथमिक विज्ञान किट	कक्षा VI के लिए भौतिकी-किट	कक्षा VI के लिए जीव विज्ञान किट
1.	आंध्रप्रदेश	51	35	33
2.	बिहार	51	35	35
3.	गुजरात	50	31	30
4.	हरियाणा	52	31	31
5.	जम्मू और कश्मीर	40	40	40
6.	केरल	51	30	31
7.	मध्यप्रदेश	51	31	31
8.	महाराष्ट्र	46	47	46
9.	मैसूर	50	31	31
10.	उड़ीसा	1	1	1
11.	पंजाब	51	32	32
12.	राजस्थान	51	33	31
13.	तमिल नाडु	51	32	31
14.	उत्तर प्रदेश	51	32	31
15.	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	1	1	1
16.	दिल्ली	50	—	—
17.	हिमाचल प्रदेश	36	33	31
18.	लकादीव, मिनिकॉय और अमिनदीवी द्वीप समूह	1	1	1
19.	मणिपुर	—	1	—
20.	त्रिपुरा	20	10	10
	योग	754	487	476

परिशिष्ट 15

शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय के साथ सहकार
(1970-71)

समीक्षाधीन वर्ष में परिषद्, शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय के काम से सक्रिय रूप से संबद्ध रही। ऐसे सभी कार्यों में परिषद् के योग-दान की संक्षिप्त रिपोर्ट नीचे दी जा रही है।

1. राष्ट्रीय स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड

पाठ्यपुस्तकों के उत्पादन और उनमें सुधार करने के लिए राष्ट्रीय और राज्यस्तर के संगठनों के कार्यों में समन्वय करने और उनका मार्गदर्शन करने के लिए भारत सरकार ने दिसम्बर 1968 में राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तक बोर्ड की स्थापना की थी : समीक्षाधीन वर्ष में परिषद् के पाठ्यपुस्तक विभाग ने जिसकी रचना जून, 1969 में की गई थी, इस राष्ट्रीय बोर्ड के अकादमिक सचिवालय के रूप में सेवा जारी रखी। बोर्ड की दूसरी बैठक 3 मई, 1970 को की गई। बैठक की रिपोर्ट इस वर्ष प्रकाशित करके परिचालित कर दी गई थी।

2. राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा बोर्ड

भारत सरकार ने प्रौढ़शिक्षा के कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने तथा उनका मार्ग-दर्शन और मूल्यांकन करने के लिए दिसम्बर 1969 में राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा बोर्ड की स्थापना की थी। परिषद् के प्रौढ़ शिक्षा बोर्ड ने 1970-71 के दौरान बोर्ड को सचिवालयीय और अकादमिक सेवाएँ देने का काम जारी रखा। बोर्ड की पहली बैठक मई 1970 में की गई, जिसने निरक्षरता उन्मूलन के लिए महत्वपूर्ण सिफारिशें कीं।

3. अग्रणी परियोजनाओं के संबंध में अध्ययन मंडल

शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय ने शिक्षा के विविध क्षेत्रों में अग्रणी परियो-जनाओं के लिए डिज़ायन तैयार करने के लिए एक अध्ययन मंडल की स्थापना की थी। पिछले वर्ष की तरह 1970-71 में भी बरबादी और स्थिरता, अंशकालिक और सतत्शिक्षा, कन्या शिक्षा, अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जन जातियों की शिक्षा,स्कूल संकुल, संस्था संबंधी आयोजना, शिक्षा का व्यवसायीकरण और क्रियात्मक साक्षरता जैसे विषयों में अग्रणीपरि योजनाओं के लिए डिजाइन तैयार करने के काम, में परिषद् ने मंत्रालय के साथ सहकार जारी रखा।

4. कर्मचारियों के समाज शिक्षा संस्थानों के संबंध में विशेषज्ञ मंडल

शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय ने नागपुर और इंदौर स्थित कर्मचारी समाज शिक्षा संस्थानों के लिए ठोस सुझाव देने के लिए, जुलाई, 1970 में एक विशेषज्ञ मंडल की स्थापना की। परिषद् के प्रौढ़शिक्षा विभाग के डॉ० टी० ए० कोशी तथा श्री बी० सी० रोकाडिया, ग्रुप के क्रमशः अध्यक्ष और सदस्य सचिव चुने गए।

5. व्यापक शैक्षिक जिला विकास परियोजना (आई० ई० डी० डी० पी०) :

शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय ने बिहार के दरभंगा, मैसूर के वेल्लारी, पंजाब के संगरूर और महाराष्ट्र के जलगाँव इन चार जिलों में व्यापक शैक्षिक जिला विकास परियोजना प्रारंभ की। परिषद् के अधिकारियों ने इस परियोजना के अधीन विभिन्न योजनाओं के ब्यौरे तैयार करने में मंत्रालय के साथ सहकार किया।

6. शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय से मिली पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन :

शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय से मिली लगभग 40 पुस्तकों की, परिषद् के अधिकारियों ने विवादास्पद विषयवस्तु के संदर्भ में जाँच की और अपनी मूल्यांकन रिपोर्टें मंत्रालय को भेजीं।

7. बाल साहित्य के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता :

बाल साहित्य के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रतियोगिता, जो पहले शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय द्वारा आयोजित की जाती थी, समीक्षाधीन वर्ष में क्रियान्वयन के लिए परिषद् को सौंप दी गई। परिषद् द्वारा 16 वीं प्रतियोगिता आयोजित करने के लिए कार्रवाई की गई। देश के सभी प्रमुख समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर प्रतियोगिता के लिए रचनाएँ आमंत्रित की गईं। मूल्यांकन के लिए एक सामग्री को भी इस वर्ष अन्तिम रूप दिया गया, जिसमें मूल्यांकन की कसौटी और हर कसौटी को दी जाने वाली प्राथमिकता निश्चित की गई थी। यह सामग्री राज्यों को भी उपलब्ध की गई जिससे कि वे इस प्रतियोगिता के लिए पुस्तकों का मूल्यांकन करने के लिए उसका उपयोग कर सकें।

8. ग्राम प्रतिभा खोज कार्यक्रम

समीक्षाधीन वर्ष में शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय ने माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण इलाकों के प्रतिभाशाली बच्चों के लिये राष्ट्रीय छात्रवृत्ति की एक योजना तैयार की। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् से राष्ट्रीय छात्रवृत्तियाँ देने के लिये ग्रामीण इलाकों के प्रतिभाशाली बच्चों का पता लगाने के लिये दूसरे स्तर पर, परीक्षा लेने के काम में राज्यों को अकादमिक मार्गदर्शन उपलब्ध करने की जिम्मेदारी संभालने के लिए कहा गया। परिषद् से यह भी कहा गया कि वह प्रतिभाशाली बच्चों का पता लगाने और विभिन्न राज्यों की पाठचर्या

को एक दूसरे की तुलना में अधिकाधिक समरूप बनाने के लिए इस योजना के अकादमिक पक्ष का समन्वय और अनुसंधान करे । इस योजना के अधीन अकादमिक जिम्मेदारियों का निर्वाह करने के लिए परिषद् में एक विशेष यूनिट बनाने का प्रस्ताव है ।

9. पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन का जोरदार कार्यक्रम

1970-71 में शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय ने परिषद् को यह जिम्मेदारी सौंपी कि वह राष्ट्रीय हितों को नुकसान पहुंचाने वाली सामग्री का पता लगाने की दृष्टि से स्कूल पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन करने का एक जोरदार कार्यक्रम चलाए । इस वर्ष के दौरान इस कार्यक्रम के अधीन किये गये काम का विवरण परिशिष्ट 5 में दिया गया है ।

10. राज्यों में उल्लेखनीय शैक्षिक परियोजनाओं और प्रयोगों का अध्ययन :

शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय ने देश के विभिन्न भागों में चल रही महत्वपूर्ण शैक्षिक परियोजनाओं और प्रयोगों का अध्ययन करने के लिए केन्द्र के अधीन काम कर रहे विभिन्न शैक्षिक अभिकार्यों के अधिकारियों को एशियन इंस्टीट्-यूट ऑफ एजूकेशनल प्लानिंग एण्ड एडमिनिस्ट्रेशन, नई दिल्ली के माध्यम से राज्यों में भेजने का प्रबंध किया । परिषद् के अधिकारी स्वयं भी इन यात्राओं में अधिका-रियों के साथ गये और उन्होंने विभिन्न राज्यों में गए केन्द्रीय दलों के सदस्यों के रूप में जिन शैक्षिक परियोजनाओं और प्रयोगों का अध्ययन किया उनके सम्बन्ध में रिपोर्ट तैयार की ।

11. राष्ट्रीय एकता परियोजना

शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय ने परिषद् को, विद्यार्थियों और अध्यापकों तथा केवल अध्यापकों के अन्तर-राज्य शिविरों के आयोजन ; कुछ चुने हुए स्कूलों में "हमारा भारत परियोजना" चलाने ; तथा विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिये विषयानुकूल उपयुक्त सामग्री तैयार करके उसका उत्पादन करने के विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के जरिए विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता पैदा करने का काम सौंपा । इस परियोजना के अधीन 1970-71 में किये गये कार्य की एक रिपोर्ट परिशिष्ट-7 में देखी जा सकती है ।

12. जनसंख्या शिक्षण

शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय के कहने पर जनसंख्या शिक्षण पर उपयुक्त कार्यक्रम बना कर उसे स्कूल स्तर पर क्रियान्वित करने के लिये, 1970-71 में परिषद् के समाजविज्ञान और मानविकी विभाग में एक विशेष यूनिट स्थापित की गई थी । यूनिट द्वारा वर्ष के दौरान किये गये काम का उल्लेख मुख्य रिपोर्ट में संक्षेप में किया जा चुका है ।

13. अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष (1970) :

परिषद् ने 1970-71 में अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा वर्ष मनाने के लिए, शिक्षा और युवक सेवा मंत्रालय की ओर से अनेक कार्यक्रम हाथ में लिए। सर्वाधिक उल्लेखनीय कार्य चैकोस्लोवाकिया के सुप्रसिद्ध अध्यापक कमेनियस की त्रिशताब्दी समारोह था। इस अवसर पर कमेनियस के जीवन और कार्यों पर परिषद् द्वारा निकाले गए एक लघु ब्रोशर की सर्वत्र प्रशंसा की गई। इसके अतिरिक्त परिषद् ने युवक विज्ञान क्रियाकलापों के नेताओं के लिए एशियाई क्षेत्रीय संगोष्ठी, विज्ञान प्रस्तुतीकरण और स्कूल के बाहर के वैज्ञानिक कार्यकलापों के विकास के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय समिति की सहायता का आयोजन किया तथा शिक्षा में समूह-साधन प्राथमिक और कार्याभिमुखी शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा पर संगोष्ठियाँ कीं।

परिशिष्ट 16

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

प्रतिवेदन वर्ष में परिषद् को 'यूनेस्को', 'यूनीसेफ' और 'यू०एन० डी० पी०' जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा सहायता मिलती रही। 'ब्रिटिश काउंसिल', 'यूसैड', 'अमरीकी राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रतिष्ठान', रूसी सरकार, ब्रिटेन सरकार और जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य से भी सहायता प्राप्त हुई। परिषद् के बहुत से कर्मचारी प्रतिनिधि मंडलों के सदस्य के रूप में अथवा सम्मेलन में भाग लेने के लिए अथवा विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाओं के अंतर्गत उच्च स्तरीय प्रशिक्षण के लिए विदेश गए। कुछ विदेशी विशेषज्ञों द्वारा परिषद् तथा इसकी संस्थाओं का निरीक्षण किया गया। इस क्षेत्र में हुए क्रियाकलापों का विस्तृत विवरण नीचे दिए पैराग्राफों में दिया है।

1. विदेशों से प्राप्त उपकरण और विशेषज्ञता

1.01 यूनेस्को सहायता प्राप्त माध्यमिक विज्ञान शिक्षण परियोजना के अंतर्गत, दस यूनेस्को विशेषज्ञों ने परिषद् की अनुदेशन सामग्री, उपकरण और गणित और विज्ञान में श्रव्य-दृश्य साधनों को विकसित करने में सहायता की। परिषद् को इस परियोजना के अंतर्गत स्कूल विज्ञान उपकरण के 17 सेट प्राप्त हुए जिनको देश के विविध राज्य विज्ञान शिक्षण संस्थानों में बाँट दिया गया।

1.02 यूनीसेफ-सहायता प्राप्त स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षण सुधार की मार्गदर्शी परियोजना के अंतर्गत, एक यूनेस्को विशेषज्ञ ने परिषद् की विज्ञान में प्राथमिक स्तर के लिए पाठ्यक्रमी सामग्री विकसित करने में सहायता की। इस परियोजना के अंतर्गत यूनीसेफ से प्राप्त उपकरणों के 79 सेटों को परिषद् ने देश के चुने हुए विशेष संस्थानों को बाँटा।

1.03 कोलंबो सहायता निधि के अंतर्गत, ब्रिटेन से 44 विज्ञान संबंधी फिल्में प्राप्त की गई।

1.04 दो यूनेस्को विशेषज्ञों ने वृत्तिमूलक साक्षरता कार्यक्रमों के लिए वृत्तिमूलक साक्षरता परियोजना और अनुदेशन सामग्री के उत्पादन में मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता प्रदान की।

1.05 1970-71 वर्ष के भारत जी०डी०आर० सांस्कृतिक विनियम कार्यक्रम के अंतर्गत डा० वाल्टर कोस्टका और डा० रेनहार्ड वोल्ज का एक प्रतिनिधिमंडल परिषद् में 17 मार्च, 1971 से लगभग तीन सप्ताह के लिए आया। प्रतिनिधिमंडल के सदस्य अपने साथ शैक्षिक उपकरण और पुस्तकों आदि से युक्त जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य की शैक्षिक प्रणाली पर एक प्रदर्शनी लाए। सारी प्रदर्शित सामग्री भारत में जी०डी०आर० के काउंसेल जनरल ने परिषद् को भेंट कर दी।

2. अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान परियोजनाओं में परिषद् का सहयोग

2.01 परिषद् ने शैक्षिक उपलब्धि के मूल्यांकन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्था की अनुसंधान परियोजना में इस वर्ष सहयोग जारी रखा। भारत सहित 20 देश इस परियोजना में भाग ले रहे हैं। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य निवेश सम्बन्धी विविधताओं का संबंध स्थापित करना है, जैसे विद्यालय का संगठन तथा ढाँचा और उसकी भौतिक सुविधाएँ, शिक्षकों की योग्यताएँ, अनुभव, अभिप्रेरण और आचार, और विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि तथा विद्यालय के कुछ विषयों में उनकी उपलब्धि।

2.02 परिषद् ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान, जापान के साथ यूनेस्को सहायता से एशियाई देशों के लिए शिक्षा में पहली संयुक्त अनुसंधान परियोजना में सहयोग जारी रखा। यह परियोजना ऐशियाई देशों में शिक्षा के प्रथम स्तर पर पाठ्यक्रम विकास का तुलनात्मक अध्ययन है। यह परियोजना नवबंर 1967 में प्रारंभ की गई थी जिसमें भारत सहित 15 एशियाई देशों ने भाग लिया। परिषद् पाठ्यपुस्तक विभाग के अध्यक्ष डाँ०आर०एच० दवे को परियोजना निदेशक नियुक्त किया गया। इस परियोजना का कार्य समाप्त हो गया और इसकी अंतिम रिपोर्ट जापान से अक्तूबर 1970 में प्रकाशित हुई।

3. विदेशी प्रशिक्षकों के लिए परिषद् के प्रशिक्षण/मार्गदर्शक कार्यक्रम

3.01 डब्लू०एच०ओ० शिक्षावृत्ति कार्यक्रम के अंतर्गत नेपाल सरकार द्वारा भेजे गए श्री रतना साक्या के लिए परिषद् ने नवबंर-दिसंबर 1970 में विभिन्न श्रव्य-दृश्य गेजटों की मरम्मत, देखभाल और चलाने के संबंध में 6 सप्ताह के प्रशिक्षण का प्रबंध किया।

3.02 घाना सरकार द्वारा मनोनीत श्रीमती सारह डी० जंग ने राष्ट्रमंडल के विशेष अफ्रीकी सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत परिषद् के श्रव्य-दृश्य शिक्षा के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भाग लिया।

3.03 बेरुत स्थित यूनेस्को/यूनरवा के शिक्षा संस्थान के दो कर्मचारी सर्वश्री इस्कन्दर हन्ना और तेफीक मेरी दिल्ली में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की मुख्य बातों का अध्ययन करने दिल्ली आए। उनके निरीक्षण को सफल बनाने के लिए हर संभव सहायता दी गई।

3.04 एफ०ए०ओ० के आर्ट-साक्षर प्रकाशन (ग्राम्य युवक) के क्षेत्र में शिक्षावृत्ति कार्यक्रम के अंतर्गत एक अध्येता श्री चीपचूईजीत को परिषद् के प्रौढ़ शिक्षा विभाग में प्रशिक्षण, क्षेत्र कार्य और अवधि निबंध के लिए भेजा गया।

3.05 परिषद् ने नेपाल सरकार के आग्रह पर नेपाल सरकार के अधिकारियों के लिए शैक्षिक मूल्यांकन, पाठ्यक्रम और अनुदेशन में एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया। 12 अधिकारियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया जो 13 जुलाई से 5 सितंबर 1970 तक चला।

3.06 यूसेड थर्ड कंट्री प्रोग्राम के अंतर्गत, तीन अफगानी सर्वश्री अब्दुल जलील अहमजई, अब्दुल कयाम बुश्रा और गुलाम क़ादर सीपहर परिषद् के अध्यापन सहायता विभाग में श्रव्य-दृश्य तकनीकी आदि में प्रशिक्षण प्राप्त करने आए जो तीन महीने की अवधि के लिए पहली मार्च, 1971 से प्रारम्भ हो रहा है।

3.07 ब्रिटेन के आप्रवास छात्रों के 24 अध्यापकों और प्राध्यापकों के एक दल के लिए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों में फरवरी 1971 में विचार-विमर्श का प्रबंध किया। इस दल से आप्रवास छात्रों, जिनको उन्होंने ब्रिटिश स्कूलों में पढ़ाना है, की पृष्ठ भूमि का अध्ययन करने के लिए भारत का दौरा किया।

3.08 जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य के दो विशेषज्ञों और परिषद् के अधिकारियों के बीच जी० डी० आर और भारत के कार्य-अनुभव के कार्यक्रमों पर विचार विनिमय करने का प्रबंध किया गया।

4. यूनेस्को और उसके संस्थानों को सामग्री संपूर्ति

4.01 सितम्बर 1970 में जेनीवा में आयोजित शिक्षा पर 32 वीं अंतर्राष्ट्रीय कानफ्रेन्स के लिए यूनेस्को को सामग्री भेजी गयी।

4.02 एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजूकेटर्स, क्यूज़ान, फिलिपाइन, के प्रकाशन "ए सेट ऑफ प्रेक्टिसेस एंड ट्रेंड्स रिलेटिंग टु इनसर्विस एजुकेशन आफ प्राइमरी एंड सेकेन्ड्री स्कूल टीचर्स इन एशिया" के लिए भारतीय स्थिति पर आँकड़े भेजे गये।

4.03 भारत में अध्यापक शिक्षा (प्राथमिक और माध्यमिक) के संबंध में अब तक की सूचना एशियन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजूकेटर्स, क्यूज़स सिटी, फिलिपाइन को उनकी रिपोर्ट "टीचर एजुकेशन इन एशिया" के संकलन के लिए भेजी गयी।

5. शिक्षावृत्ति कार्यक्रमों के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों तथा उच्च प्रशिक्षणों में भाग लेने के लिए परिषद् के अधिकारियों का विदेश गमन

5.1. डॉ० आर० एच० दवे, अध्यक्ष पाठ्यपुस्तक विभाग, की अप्रैल 1970 में

पाठ्यक्रम विकास और नूतन पद्धतियों पर अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन करने यूनेस्को द्वारा स्थापित विषय-निर्वाचन समिति की बैठक में भाग लेने पेरिस भेजा गया।

5.02 श्री० पी० डी० शर्मा, प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर को भारत- जैक सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत 26 नवंबर से 5 दिसम्बर 1970 तक जेकोस्लोवाकिया में कोमीनियस की त्रिशताब्दी में भाग लेने भेजा गया।

5.03 डॉ० (श्रीमती) पैरिन एच० मेहता, अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा आधार विभाग को 26 से 30 अक्तूबर 1970 तक एम्स्टर्डम में शैक्षिक और मूल्यांकन उपलब्धियों के लिए हुई अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की बैठक में भाग लेने भेजा गया :

5.04 श्रीमती एस० शुक्ला, रीडर, शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा-आधार विभाग, को अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक उपलब्धि परियोजना के संबंध में रोम में 16 से 20 नवम्बर 1970 तक राष्ट्रीय तकनीकी अधिकारियों की तीसरी बैठक में भाग लेने भेजा गया।

5.05 श्री मोहन लाल प्राध्यापक शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा-आधार विभाग, को यूनेस्को प्रवर्तित एशिया में प्रयोगात्मक परियोजना और योजनाबद्ध अनुदेशन के कार्यक्रम कर्त्ताओं और आयोजकों की बैठक में टोकियो में 17 से 23 फरवरी 1971 में भाग लेने भेजा गया।

5.06 डॉ० टी ए० कोशी, अध्यक्ष, प्रौढ़ शिक्षा विभाग को प्रौढ़ शिक्षा तरीकों के अंतर्राष्ट्रीय संस्थान की सलाहकार समिति के सदस्य होने के नाते, इस समिति की पैरिस में 28 और 29 सितंबर 1970 को हुई पहली बैठक में भाग लेने भेजा गया।

5.07 डॉ० (श्रीमती) एस० मुले, रीडर, प्रौढ़ शिक्षा विभाग ने इंटीट्टयूट आफ टेक्नालोजी, हार्वर्ड, के निमंत्रण पर अमरीका का अगस्त-सितंबर 1970 में दौरा किया और 'भारत में संचार अनुसंधान' पर व्याख्यान दिए।

5.08 श्री के० बी० रोगे, प्राध्यापक प्रौढ़ शिक्षा विभाग को कृषक प्रशिक्षण और वृत्तिमूलक साक्षरता परियोजना के अंतर्गत ईरान को यूनेस्को प्रवर्तित अध्ययन दौरे और ईरान की वृतिमूलक साक्षरता परियोजना के अंतर्गत 19 फरवरी से 4 मार्च 1971 तक सामग्री उत्पादन कार्यक्रम का अध्ययन करने भेजा गया।

5.09 श्री टी० एस० मेहता, इंचार्ज, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग, को बैंगकाक में 8 अगस्त से 3 नवंबर 1970 तक एशियाई देशों के लिए जनसंख्या शिक्षा पर हुए सेमिनार में भाग लेने के लिए भेजा गया। यह सेमिनार

यूनेस्को के एशिया में शिक्षा के लिये क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से आयोजित किया गया था।

5.10 यूनेस्को सहायता प्राप्त माध्यमिक विज्ञान शिक्षण परियोजना के अंतर्गत, विज्ञान शिक्षा विभाग के निम्नलिखित अधिकारियों को विदेशों में प्रशिक्षण को भेजा गया :

श्री के० वी० राव

श्री एच० एल० शर्मा

कुमारी एस० मजुमदार

श्री वी० के० शर्मा

श्री ओम प्रकाश

श्री यशपाल

5.11 श्री० एन० के० सान्याल, क्षेत्रीय सलाहकार, विज्ञान शिक्षा विभाग को टोकियो में 13 फरवरी से 12 मार्च 1971 तक आयोजित एशिया में विज्ञान शिक्षण पर शैक्षिक अनुसंधान कर्मशाला में भाग लेने भेजा गया।

5.12 विज्ञान शिक्षा विभाग में रीडर, श्री एस० दोरायस्वामी को स्कूल पाठ्यक्रम में परिस्थितात्मक शिक्षा पर निवेदा में 20 जून से 10 जुलाई 1971 तक हुई अंतर्राष्ट्रीय कर्मशाला में भाग लेने भेजा गया।

5.13 कुमारी एस० मजुमदार, ज्येष्ठ अनुसंधान-सहायक, विज्ञान शिक्षा विभाग, को ब्रिटिश कॉउंसिल के शिक्षावृत्ति कार्यक्रम के अंतर्गत 9 सितंबर 1970 से 20 जुलाई 1971 तक उच्चतर अध्ययन के लिए इंग्लैंड भेजा गया।

5.14 श्री डी० एस० रावत, इंचार्ज, पूर्व-प्राथमिक तथा प्राथमिक शिक्षा विभाग ने प्राथमिक पाठ्यक्रम के एक समाकालित मार्ग विषय पर हुए अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लिया इसको यूनेस्को, सी० ई० डीओ० और ब्रिटिश काउंसिल ने मिलकर समरसेट इंगलैंड में 30-11-1970 से 11-12-1970 तक आयोजित किया।

5.15 डॉ० (श्रीमती) वी० एस० आनन्द, प्राध्यापक, पाठ्यपुस्तक विभाग ब्रिटेन सरकार द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रमण्डल अध्यापक प्रशिक्षण छात्रवृत्ति के अंतर्गत 1-10-1970 से 4-7-1971 तक उच्च अध्ययन के लिए गईं।

5.16 श्री ओम प्रकाश, प्राध्यापक, सामाजिक विज्ञान तथा मानविकी विभाग ब्रिटेन सरकार द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रमण्डल अध्यापक प्रशिक्षण छात्रवृत्ति के अंतर्गत 2 अक्तूबर 1970 को उच्च अध्ययन करने के लिए गये। इनको स्वास्थ्य आधार पर अध्ययन छोड़ना पड़ा और यह भारत 12 नवंबर 1970 को वापस आगए।

6. परिषद् के वे अधिकारी जो विशेष कार्य पर विदेश गए

क्षेत्रीय सलाहकार डॉ० ए० रऊफ ने 9-10-1970 को परिषद् का कार्य-भार त्यागा और यूनेस्को में विदेश-सेवा पर दो वर्ष के लिए समानुदेशन के लिए काबुल की अध्यापक शिक्षा अकादमी में शिक्षण के नियमों के विशेषज्ञ बनकर गए।

7. नई दिल्ली में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और उच्च प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में भाग लेने के लिए और अन्तर्राष्ट्रीय एजेंसियों को परामर्श सेवाएं देने के लिए परिषद् के अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति

7.01 प्रौढ़ शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डॉ० टी० ए० कोशी को नई दिल्ली में 10 से 13 अगस्त 1970 तक प्रवर्तित शैक्षिक योजना और प्रशासन के ऐशियाई संस्थान द्वारा आयोजित "जीवनपर्यन्त समाकलित शिक्षा" पर विशेषज्ञों की बैठक में भाग लेने के लिए भेजा गया।

7.02 सामाजिक विज्ञान और मानविकी विभाग में रीडर श्री सी० एल० सपरा और आधार सामग्री प्रक्रिया तथा शैक्षिक सर्वेक्षण एकक में रीडर डा० आर० के० माथुर को नई दिल्ली में 7 से 18 दिसंबर 1970 तक यूनेस्को प्रवर्तित शैक्षिक योजना और प्रशासन के एशियाई संस्थान द्वारा आयोजित शैक्षिक सांख्यिकी पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण सेमिनार मे भाग लेने भेजा गया। श्री सी० एल० सपरा ने "मेजर-मेंट आॅफ एजुकेशनल वेस्टेज—ए रिव्यू आॅफ मैथोडालोजीज" पर एक निबंध प्रस्तुत किया।

7.03 श्री सी० एल० सपरा, रीडर, सामाजिक विज्ञान और मानविकी विभाग को नई दिल्ली में एक सितम्बर 1970 से 28 फरवरी 1971 तक यूनेस्को प्रवर्तित शैक्षिक योजना और प्रशासन के एशियाई संस्थान द्वारा आयोजित शैक्षिक योजना और प्रशासन के ग्यारहवें प्रशिक्षण कोर्स में भाग लेने भेजा गया।

7.04 डॉ० मोहन चन्द्रपंत, अध्यक्ष, विज्ञान शिक्षा विभाग को नई दिल्ली में 14 से 18 दिसम्बर 1970 तक हुए युवक विज्ञान कार्यकलापों के नेताओं के लिए यूनेस्को क्षेत्रीय एशियाई सेमिनार में भाग लेने भेजा गया।

डॉ० मोहन चन्द्र पंत को नई दिल्ली में 18 से 21 दिसम्बर 1970 तक हुए स्कूल के बाद वैज्ञानिक कार्यकलापों को विकसित करने और विज्ञान के प्रस्तुतीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संयोजिता समिति की महासभा में भाग लेने के लिए भी भेजा गया।

7.05 डॉ० श्रीमती आर० मुरलीधरन ने परिवार और शिशु सुधार परियोजनाओं को उपकरण की पूर्ति में यूनीसेफ के परामर्शदाता के रूप में कार्य किया।

8. परिषद् की प्रतिनियुक्ति पर विदेशी विशेषज्ञ

8.01 यूनेस्को-यूनीसेफ से सहायता प्राप्त माध्यमिक विज्ञान शिक्षण परियोजनाओं के अंतर्गत सात विशेषज्ञ वर्ष भर परियोजना की सहायता करते रहे जबकि तीन प्रतिवेदन वर्ष में अपना कार्य समाप्त कर लेने पर चले गए। रसायनशास्त्र विशेषज्ञ का पद रिक्त रहा। यूनेस्को/यूनीसेफ विशेषज्ञ, श्री० ए० डब्ल्यू० टोरी प्राथमिक विज्ञान कार्यक्रम में कार्य करते रहे।

8.02 मूल्यांकन में यूनेस्को विशेषज्ञ श्री एम० टी० हेडेगार्ड 19 जुलाई 1970 को प्रौढ़ शिक्षा विभाग में आए और वर्ष भर विभाग में वृत्तिमूलक साक्षरता परियोजना के मूल्यांकन पर कार्य करते रहे।

8.03 वृत्तिमूलक साक्षरता सामग्री में यूनेस्को के एक दूसरे विशेषज्ञ 19 मार्च 1971 को प्रौढ़ शिक्षा विभाग में आए। उन्होंने वृत्तिमूलक साक्षरता कार्यक्रमों के लिए अनुदेशन सामग्री के उत्पादन में विभाग की सहायता की।

परिशिष्ट 17

प्रकाशन 1970-71

पाठ्यपुस्तकें

1. गद्य-संकलन (पुनर्मुद्रण)
2. काव्य-संकलन (पुनर्मुद्रण)
3. कॉमर्शल एंड इकॉनामिक ज्याग्राफी
4. राष्ट्र भारती भाग II (पुनर्मुद्रण)
5. एकांकी-संकलन (पुनर्मुद्रण)
6. अंकगणित-बीजगणित भाग I (पुनर्मुद्रण)
7. जीव-विज्ञान भाग I (पुनर्मुद्रण)
8. बॉयोलोजी सैक्शन I (पुनर्मुद्रण)
9. आओ पढ़ें और खोजें (पुनर्मुद्रण)
10. ज्योमैट्री भाग I (पुनर्मुद्रण)
11. मध्यकालीन भारत (पुनर्मुद्रण)
12. रानी मदन अमर (पुनर्मुद्रण)
13. आरिथमैटिक-एल्जबरा पार्ट I (पुनर्मुद्रण)
14. कहानी-संकलन (पुनर्मुद्रण)
15. स्थानीय शासन (पुनर्मुद्रण)
16. लैट्स लर्न इंगलिश फॉर क्लास III
17. फिजिक्स पार्ट II (पुनर्मुद्रण)
18. शासन और संविधान
19. बॉयलोजी पार्ट I (पुनर्मुद्रण)
20. आओ हम पढ़ें (पुनर्मुद्रण)
21. साइंस इज़ डूइंग पार्ट टू
22. पी० एस० एस० सी० फिजिक्स वाल्यूम I (पुनर्मुद्रण)
23. पी० एस० एस० सी० फिजिक्स वाल्यूम II (पुनर्मुद्रण)
24. पी० एस० एस० सी० फिजिक्स वाल्यूम III (पुनर्मुद्रण)
25. पी० एस० एस० सी० फिजिक्स वाल्यूम IV (पुनर्मुद्रण)
26. हिन्दी साहित्य का इतिहास

27. प्राचीन भारत (पुनर्मुद्रण)
28. कैमिस्ट्री पार्ट I (पुनर्मुद्रण)
29. इंगलिश रीडर बुक I-एन इंगलिश टैक्टबुक फॉर क्लास XI (पुनर्मुद्रण)
30. सोशल स्टडीज़ बुक III
31. बीज गणित उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के लिए
32. विज्ञान आओ करके सीखें भाग II
33. आस्ट्रेलिया और अमरीका
34. भौतिकी भाग II (पुनर्मुद्रण)
35. लैट्स लर्न इंगलिश फॉर क्लास III (पुनर्मुद्रण)
36. रसायन-विज्ञान भाग I (पुनर्मुद्रण)
37. एशिया और अफ्रीका (पुनर्मुद्रण)
38. फिज़ीकल ज्याग्रफी (पुनर्मुद्रण)
39. सामान्य विज्ञान भाग I
40. इनसाइट इंटु मैथेमेटिक्स बुक I
41. सरल गणित
42. लैट्स लर्न इंगलिश बुक I (स्पेशल सीरीज़) (पुनर्मुद्रण)
43. जीव-विज्ञान भाग II (संशोधित संस्करण)
44. जीव-विज्ञान खंड III (पुनर्मुद्रण)
45. काव्य-संकलन (पुनर्मुद्रण)
46. आस्ट्रेलिया एंड एमेरीकाज़-ए ज्याग्रफी टेस्क्टबुक फॉर क्लास VII
47. गद्य-संकलन (पुनर्मुद्रण)
48. जीव-विज्ञान भाग I (पुनर्मुद्रण)
49. जीव-विज्ञान भाग II (पुनर्मुद्रण)
50. फिजि़क्स फॉर मिडिल स्कूल्स (स्टडी ग्रुप बुक)
51. शासन और संविधान (पुनर्मुद्रण)

अध्यापक दर्शिकाएं और अभ्यास पुस्तकें

52. अध्यापक दर्शिका सामाजिक अध्ययन पुस्तक I और II
53. मेरी सुलेख पुस्तिका पुस्तक I (पुनर्मुद्रण)
54. मेरी सुलेख पुस्तिका पुस्तक II (पुनर्मुद्रण)
55. टीचर्स गाइड फॉर इंगलिश रीडर फॉर क्लास III (स्पेशल सीरीज़)
56. मैथेमेटिक्स फॉर प्राइमरी स्कूल्स—ए हैन्डबुक फॉर टीचर्स
57. टीचर्स गाइड फॉर इंगलिश टैक्स्टबुक क्लास III
58. टीचर्स गाइड फॉर ज्योमेट्री बुक I
59. मेरी अभ्यास पुस्तिका कक्षा III के लिए
60. वर्कबुक फॉर इंगलिश रीडर बुक I
61. अध्यापक दर्शिका रानी मदन अमर (पुनर्मुद्रण)

62. मेरी अभ्यास पुस्तिका (चलो पाठशाला चलें) (पुनर्मुद्रण)
63. अध्यापक दर्शिका राष्ट्र भारती भाग II-कक्षा VII की पाठ्यपुस्तक
64. प्यूपिल्स वर्कबुक फॉर क्लास II (स्पेशल सीरीज़)
65. पी०एस०एस०सी० टीचर्स रिसोर्स गाइड पार्ट I
66. पी०एस०एस०सी० टीचर्स रिसोर्स गाइड पार्ट II
67. पी०एस०एस०सी० टीचर्स रिसोर्स गाइड पार्ट III
68. टीचर्स गाइड टु साइंस इज डुइंग
69. अध्यापक दर्शिका विज्ञान आओ करके सीखें
70. टीचर्स गाइड टु पी०एस०एस०सी० फिजिक्स वाल्यूम VII
71. वर्कबुक टुइंगलिश रीडर क्लास III
72. लैबोरेट्री मैनुअल फॉर स्कूल कैमिस्ट्री
73. अध्यापक दर्शिका भौतिकी पाठ्यपुस्तक कक्षा VI
74. टीचिंग हिस्ट्री इन सेकेंड्री स्कूल्स
75. अध्यापक दर्शिका राष्ट्र भारती भाग III
76. मेरी सुलेख पुस्तिका—पुस्तक III (पुनर्मुद्रण)
77. अभ्यास पुस्तिका हिन्दी पाठ्यपुस्तक कक्षा III (पुनर्मुद्रण)
78. अभ्यास पुस्तिका हिन्दी पाठ्यपुस्तक कक्षा IV (पुनर्मुद्रण)
79. वर्कबुक फॉर इंगलिश टैक्स्टबुक फॉर क्लास III (स्पेशल सीरीज़) (पुनर्मुद्रण)
80. अभ्यास पुस्तिका आओ पढ़े और सीखें (हिन्दी रीडर IV)

पूरक पठन सामग्री

81. दि लाइफ ऑफ इन्सैक्ट्स
82. राजा राममोहन राय
83. शंकराचार्य
84. नान-फ्लावरिंग प्लांट्स आफ दी हिमालय
85. मिर्ज़ा ग़ालिब
86. कबीर

अन्य प्रकाशन

87. सेंटर-स्टेट रिलेशंस इन एजुकेशन बाई डा०वी०के०आर०वी० राव
88. सेमिनार रीडिंग्स प्रोग्राम 1970-71
89. रेटिंग स्केल ऑफ पर्सनालिटी ट्रेट्स ऑफ प्राइमरी स्कूल्स प्यूपिल्स
90. क्यूमुलेटिव रिकार्ड फॉर प्राइमरी स्टेज
91. नेशनल सर्वे आफ एलीमेंट्री टीचर एजुकेशन
92. रूल्स आफ दि एन०सी०ई०आर०टी०
93. रिपोर्ट आफ दि कमेटी आन इम्प्रूवमेंट ऑफ आर्ट एजुकेशन (पुनर्मुद्रण)

94. आर्किटेक्ट, सिविल इनजीनियरिंग तथा अन्य व्यवसाय
95. वार्षिक रिपोर्ट राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 1968-69
96. दि नेशन एंड दि स्कूल (पुनर्मुद्रण)
97. फेसेट्स आफ इंडियन एजुकेशन
98. कानून सम्बन्धी व्यवसाय
99. फिल्म केटेलाग
100. प्राइमरी टीचर एजुकेशन करीकुलम
101. करीकुलम एंड टीचिंग आफ मैथेमेटिक्स इन सेकेंड्री स्कूल्स
102. एजुकेशन एंड नेशनल डेवलपमैंट—रिपोर्ट आफ दि एजुकेशन कमीशन 1964-65 भाग I (पुनर्मुद्रण)
103. एजुकेशन कमीशन रिपोर्ट भाग II (पुनर्मुद्रण)
104. प्रोसीडिंग्स आफ दि सेकेंड मीटिंग आफ नेशनल बोर्ड आफ स्कूल टैक्स्टबुक्स
105. दि रोल ऑफ स्कूल्स इन कैरेक्टर फॉरमेशन
106. आडिट रिपोर्ट आफ दि एन०सी०ई०आर०टी० 1968-69 (अंग्रेजी और हिन्दी)
107. रिपोर्ट आन साइन्स एजुकेशन इन दि रीजनल कालिजेज़ ऑफ एजुकेशन
108. स्पेशल टेस्ट्स ऑफ अचीवमैंट्स इन मैथेमेटिक्स (हिन्दी और अंग्रेजी) प्रो० ब्रोशर्स
109. कनफार्मिटी एंड डेविएशन अमंग अडालेसैंट्स
110. फील्ड स्टडीज़ इन सोशियोलोजी ऑफ एजुकेशन
111. सब के बापू (उर्दू)
112. एजुकेशन कमीशन रिपोर्ट भाग-2 (हार्ड बाउंड)
113. सेमिनार आन प्राइमरी एंड वर्क-ओरियंटेड एजुकेशन
114. सेमिनार आन प्राइमरी एंड वर्क ओरियंटेड एजुकेशन-ए कलैक्शन आफ पेपर्स प्रेजैन्टैड फॉर डिस्कशन एट दि सेमिनार
115. फारमूलेटिंग आबजैक्टिव्ज ऑफ प्राइमरी एजुकेशन
116. आबजैक्टिव्ज़ ऑफ प्राइमरी एजुकेशन—ए कलैक्शन फ्राम डिफ्रैंट सोर्सेस
117. वर्क-एक्स्पीरियंसेज़ एज़ एन इनटीग्रल पार्ट ऑफ प्राइमरी एजुकेशन
118. एन एनोटेटड बिबल्योग्राफी आन स्कूल करीकुलम
119. इवैल्युएटिव क्राइटेरिया फार इन्स्पैक्शन एंड सुपरवीजन आफ सेकेन्ड्री स्कूल्स
120. जॉन अमोस कोमैस्की (कोमीनियस)
121. प्राइमरी एक्स्टैन्शंस सर्विसेस
122. शिफ्ट सिस्टम इन केरल
123. अचीवमेंट टैस्ट इन मैथेमेटिक्स (फोर बुक्लैट्स)
124. आल इंडिया सर्वे आफ अचीवमैंट इन मैथेमेटिक्स
125. स्कूल हैल्थ प्रोग्राम—ए सर्वे
126. डेवलपमैंट ऑफ स्कालैस्टिक एप्टीट्यूड टैस्ट्स

127. ड्राफ्ट ऐनुयल रिपोर्ट ऑफ एन०सी०ई०आर०टी० 1969-70
128. एजुकेशनल वेस्टेज ऑफ दि प्राइमरी लेविल—ए हैंडबुक फार टीचर्स (पुनमुद्रण)
129. एनुयल रिपोर्ट आफ एन०सी०ई०आर०टी० 1969-70
130. एलीमेंट्री टीचर एजुकेशन
131. रूल्स ऑफ दि एन०सी०ई०आर०टी० (पुनर्मुद्रण)
132. व्हाट इज़ करीकुलम ?
133. दि टीचर स्पीक्स भाग VII
134. कमेटी आन एक्ज़ामिनेशंस—कोयश्चेनायर (अपेंडिक्स-I)
135. कमेटी आन एक्ज़ामिनेशंस अपेंडिक्स-IX
136. कमेटी आन एक्ज़ामिनेशंस—टिपिकल रेपलाई टु आवर कोयश्चेनायर (अपेंडिक्स—X)
137. कमेटी आन एक्ज़ामिनेशंस—प्रिंसिपिल्स ऑफ स्केलिंग एंड दि यूज़ ऑफ ग्रेड्ज़ इन एक्ज़ामिनेशंस (अपेंडिक्स-XI)

पत्र-पत्रिकाएँ

1. एन०आई०ई० जर्नल : मार्च, मई, जुलाई, सितम्बर, नवंबर, 1970
2. एन०आई०ई० न्यूज़लेटर : मार्च, जून, सितम्बर, दिसम्बर, 1970
3. स्कूल साइंस : दिसम्बर 1969 मार्च-जून सितम्बर 1970
4. इंडियन एजुकेशनल रिव्यू : जनवरी, जुलाई 1970, जनवरी 1971

अनुबन्ध

राज्य/संघ क्षेत्र जिन्होंने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पाठ्यपुस्तकें निर्धारित की हैं

क्र०सं०	शीर्षक	राज्य/संघ क्षेत्र/संगठन/विश्वविद्यालय जिन्होंने निर्धारित की हैं
1	2	3

पाठ्यपुस्तकें (अंग्रेजी माध्यम)

जीव-विज्ञान

क्र०सं०	शीर्षक	राज्य/संघ क्षेत्र/संगठन/विश्वविद्यालय जिन्होंने निर्धारित की हैं
1.	बायलोजी : साइंस फार मिडिल स्कूल्स पार्ट I (फार क्लास VI)	केंद्रीय विद्यालय संगठन, मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है)
2.	बायलोजी : साइंस फार मिडिल स्कूल्स पार्ट II (फार क्लासVII)	
3.	बायलोजी : साइंस फार मिडिल स्कूल्स पार्ट III (फार क्लास VII)	
4.	बायलोजी : ए टैक्स्टबुक फार हायर सेकेंड्री स्कूल्स सेक्शन I	मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, नागालैंड, पंजाब, अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह, दिल्ली, गोवा, दमन एवं दीव, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, हरियाणा, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
5.	बायलोजी : ए टैक्स्टबुक फार हायर सेकेंड्री स्कूल्स सेक्शन II	
6.	बायलोजी : ए टैक्स्टबुक फार हायर सेकेंड्री स्कूल्स सेक्शन III	
7.	बायलोजी : ए टैक्स्टबुक फार हायर सेकेंड्री स्कूल्स सेक्शन IV और V	
8.	बायलोजी : ए टैक्स्टबुक फार हायर सेकेंड्री स्कूल्स सेक्शन VI और VII	

रसायन विज्ञान

क्र०सं०	शीर्षक	राज्य/संघ क्षेत्र/संगठन/विश्वविद्यालय जिन्होंने निर्धारित की हैं
9.	कैमेस्ट्री : साइंस फार मिडिल स्कूल्स पार्ट I (फार क्लास VII)	केन्द्रीय विद्यालय सगठन, मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है)
10.	कैमिस्ट्री : साइंस फार मिडिल स्कूल्स पार्ट II (फार क्लास VIII)	

1	2	3
	भौतिकी	
11.	फिजिक्स : साइंस फार मिडिल स्कूल्स पार्ट I (फार क्लास VI)	केंद्रीय विद्यालय संगठन, मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है)
12.	फिजिक्स : साइंस फार मिडिल स्कूल्स पार्ट II (फार क्लास VII)	—यथोपरि—
13.	फिजिक्स : साइंस फार मिडिल स्कूल्स पार्ट III (फार क्लास VIII)	—यथोपरि—
	गणित	
14.	अरिथमेटिक-अल्जबरा : मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स पार्ट I (फार क्लास VI)	केंद्रीय विद्यालय संगठन
15.	अरिथमेटिक-अल्जबरा : मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स पार्ट II (फार क्लास VII)	—यथोपरि—
16.	अरिथमेटिक-अल्जबरा : मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स पार्ट III (फार क्लास VIII)	—यथोपरि—
17.	ज्योमेट्री : मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स पार्ट I (फार क्लास VI)	—यथोपरि—
18.	ज्योमेट्री : मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स पार्ट II (फार क्लास VII)	—यथोपरि—
19.	ज्योमिट्री : मैथेमैटिक्स फार मिडिल स्कूल्स पार्ट III (फार क्लास VIII)	—यथोपरि—
20.	अल्जबरा : ए टैक्स्टबुक फार सेकेंड्री स्कूल्स पार्ट I	नागालैंड, अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली*, मणिपुर, केंद्रीय विद्यालय संगठन
21.	अल्जब्रा : ए टैक्स्टबुक फार सेकेंड्री स्कूल्स पार्ट II	
22.	इनसाइट इनटू मैथेमैटिक्स बुक I फार क्लास I	बिहार (हिन्दी अनुवाद), जम्मू और कश्मीर (उर्दू में अनुवाद हो रहा है)

1	2	3
	टैकनालोजी	
23.	इंजिनियरिंग : ड्राइंग : ए टैक्टबुक फार टैक्नीकल स्कूल्स	दिल्ली*, पंजाब, हिमाचल प्रदेश मणिपुर
24.	एलीमैंट्स आफ इलेक्ट्रिकल इंजिनियरिंग : ए टैक्स्टबुक फार टैक्नीकल स्कूल्स	पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश
	सामाजिक अध्ययन	
25.	अवर कंट्री इंडिया : बुक I (फार क्लास III)	केंद्रीय विद्यालय संगठन, मणिपुर (मणिपुर भाषा में अनुवाद हो रहा है)
26.	अवर कंट्री इंडिया : बुक II (फार क्लास (IV)	—यथोपरि—
27.	इंडिया एंड दि वर्ल्ड : बुक III	—यथोपरि—
28.	सोशल स्टडीज : ए टैक्स्टबुक फार हायर सैकेंड्री स्कूल्स वाल्यूम I	केन्द्रीय विद्यालय संगठन
	भूगोल	
29.	प्रैक्टीकल ज्योग्रफी : ए टैक्स्टबुक फार सैकेंडरी स्कूल्स	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली*, मणिपुर, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मद्रास विश्वविद्यालय (पूर्व विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम के लिए)
30.	इकोनामिक ज्योग्राफी : ए टैक्स्टबुक फार सैकेंडरी स्कूल्स	दिल्ली*, अंडयान और निकोबार द्वीप समूह, मणिपुर, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
31.	फिजीकल ज्योग्राफी : ए टैक्स्टबुक फार सैकेंडरी स्कूल्स	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली*, मैसूर विश्वविद्यालय(कन्नड अनुवाद)
	इतिहास	
32.	एन्शिएन्ट इंडिया : ए टैक्स्टबुक आफ हिस्ट्री फार मिडिल स्कूल (फार क्लास VI)	मणिपुर (मणिपुर भाषा में अनुवाद हो रहा है), लक्काद्वीप
33.	मैडीविल इंडिया : ए टैक्स्टबुक फार मिडिल स्कूल्स (फार क्लास VII)	मणिपुर (मणिपुरी भाषा में अनुवाद हो रहा है)

1	2	3
	वाणिज्य	
34.	एलीमैंट्स ग्राफ बुक कीपिंग एन्ड ग्रकाउन्टैन्सी : ए टैक्स्टबुक फार क्लासेज IX—XI	दिल्ली*, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
	अंग्रेजी	
35.	इंगलिश रीडर बुक IV (जनरल सीरीज़) फार क्लास IX	पंजाब बोर्ड, नेफा
36.	इंगलिश रीडर बुक IV (स्पेशल सीरीज़) फार क्लास IX	केन्द्रीय विद्यालय संगठन
37.	इंगलिश रीडर बुक I (स्पेशल सीरीज़) फार क्लास VI	केन्द्रीय विद्यायय संगठन
38.	इंगलिश रीडर बुक I (जनरल सीरीज़) फार क्लास IV	बिहार, नेफा
39.	लैट्स लर्न इंगलिश बुक I (स्पेशल सीरीज़) फार क्लास III	नेफा केन्द्रीय विद्यालय संगठन

पाठ्यपुस्तकें (हिन्दी)

	जीव-विज्ञान	
40.	जीव-विज्ञान : मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्य पुस्तक भाग I (कक्षा VI के लिए	दिल्ली प्रशासन
41.	जीव-विज्ञान : मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग II (कक्षा VII के लिए)	दिल्ली प्रशासन
42.	जीव-विज्ञान : मिडिल स्कूलों के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तक भाग III (कक्षा VIII के लिए)	—यथोपरि—
43.	जीव-विज्ञान : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक भाग I	दिल्ली*, मध्यप्रदेश, हरियाणा पंजाब, हिमाचल प्रदेश, गोवा दमन और दीव

1	2	3
44.	जीव विज्ञान : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक भाग II	दिल्ली*, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब
	रसायन विज्ञान	
45.	रसायन विज्ञान : मिडिल स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक भाग I (कक्षा VII के लिए)	दिल्ली प्रशासन
46.	रसायन विज्ञान : मिडिल स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक भाग II (कक्षा VIII के लिए)	—यथोपरि—
	भौतिकी	
47.	भौतिकी : मिडिल स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक भाग I (कक्षा VI के लिए)	दिल्ली प्रशासन
48.	भौतिकी : मिडिल स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक भाग II (कक्षा VII के लिए)	—यथोपरि—
49.	भौतिकी : मिडिल स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक भाग III (कक्षा VIII के लिए)	—यथोपरि—
	गणित	
50.	अंकगणित-बीजगणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक भाग I (कक्षा VI के लिए)	दिल्ली प्रशासन
51.	अंकगणित-बीजगणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक भाग II (कक्षा VII के लिए)	—यथोपरि—
52.	अंकगणित-बीजगणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक भाग III (कक्षा VIII के लिए)	—यथोपरि—

1	2	3
53.	रेखागणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक भाग I (कक्षा VI के लिए)	—यथोपरि—
54.	रेखागणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक भाग II (कक्षा VII के लिए)	—यथोपरि—
55.	रेखागणित : मिडिल स्कूलों के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक भाग III (कक्षा VIII के लिए)	– यथोपरि—
	सामाजिक अध्ययन	
56.	हमारी दिल्ली (कक्षा III के लिए)	दिल्ली प्रशासन, बिहार, अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह
57.	हमारा देश भारत (कक्षा IV के लिए)	दिल्ली प्रशासन, बिहार, हरियाणा, अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह
58.	भारत और संसार (कक्षा V के लिए)	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली प्रशासन, बिहार, अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह
59.	सामाजिक अध्ययन भाग I (कक्षा III के लिए)	केंद्रीय विद्यालय संगठन
60.	सामाजिक अध्ययन भाग II (कक्षा IV के लिए)	केंद्रीय विद्यालय संगठन
61.	स्थानीय शासन : मिडिल स्कूलों के लिए नागरिक शास्त्र की एक पाठ्यपुस्तक (कक्षा VI के लिए)	बिहार, दिल्ली प्रशासन, केंद्रीय विद्यालय संगठन
62.	शासन और संविधान : मिडिल स्कूलों के लिए नागरिक शास्त्र की एक पाठ्यपुस्तक (कक्षा VII के लिए)	दिल्ली प्रशासन, केंद्रीय विद्यालय संगठन
	भूगोल	
63.	अफ्रीका और एशिया : मिडिल स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक (कक्षा VI)	—यथोपरि—

1	2	3
64.	आस्ट्रेलिया, उत्तर व दक्षिण अमरीका : मिडिल स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक (कक्षा VII के लिए)	—यथोपरि—
	इतिहास	
65.	प्राचीन भारत : मिडिल स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक (कक्षा VI के लिए)	—यथोपरि—
66.	मध्यकालीन भारत : मिडिल स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक (कक्षा VII के लिए)	—यथोपरि—
	हिन्दी	
67.	रानी मदन अमर : हिन्दी प्रवेशिका	केंद्रीय विद्यालय संगठन, बिहार, दिल्ली प्रशासन, अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह, नेफा (कक्षा III के लिए)
68.	चलो पाठशाला चलें : हिन्दी रीडर कक्षा I के लिए	केंद्रीय विद्यालय संगठन दिल्ली प्रशासन, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, बिहार, नेफा (कक्षा IV के लिए)
69.	आओ हम पढ़ें : हिन्दी रीडर कक्षा II के लिए	केंद्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली प्रशासन, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, बिहार, नेफा (कक्षा V के लिए)
70.	आओ पढ़ें और समझें : हिन्दी रीडर कक्षा III के लिए	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली प्रशासन, बिहार, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, नेफा (कक्षा VI के लिए)
71.	आओ पढ़ें और सीखें : हिन्दी रीडर (कक्षा IV के लिए)	केंद्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली प्रशासन, बिहार, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, नेफा (कक्षा VII के लिए)

1	2	3
72.	आओ पढ़ें और खोजें : हिन्दी रीडर कक्षा V के लिए	केंद्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली प्रशासन, बिहार अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, नेफा (कक्षा VIII के लिए)
73.	राष्ट्र भारती भाग I : हिन्दी रीडर (कक्षा VI के लिए)	दिल्ली प्रशासन, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, मणिपुर, बिहार, केंद्रीय विद्यालय संगठन
74.	राष्ट्र भारती भाग II : हिन्दी रीडर कक्षा VII के लिए	दिल्ली प्रशासन, अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमूह, केंद्रीय विद्यालय संगठन, बिहार
75.	राष्ट्र भारती भाग III : हिन्दी रीडर कक्षा VII के लिए	—यथोपरि—
76.	काव्य-संकलन : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक	दिल्ली*, आंध्र प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, केंद्रीय विद्यालय संगठन
77.	गद्य-संकलन : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक	केंद्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली*, आंध्र प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, पंजाब विश्वविद्यालय (चार निबंध अपनी प्रकाशित पुस्तक के भी शामिल कर लिए हैं)
78.	एकांकी-संकलन : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक	दिल्ली*, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मध्यप्रदेश
79.	काव्य के अंग : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक	मध्य प्रदेश दिल्ली*, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
80.	हिन्दी साहित्य का इतिहास माध्यमिक स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक	पंजाब बोर्ड
81.	कहानी-संकलन : माध्यमिक स्कूलों के लिए एक पाठ्यपुस्तक	दिल्ली*, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
82.	काव्य-संकलन गद्य-संकलन संयुक्त संस्करण	बड़ौदा विश्वविद्यालय

1	2	3
	संस्कृत	
83	संस्कृतोदयः माध्यमिक स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तक	दिल्ली*, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मणिपुर, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, जम्मू और कश्मीर विश्वविद्यालय (पूर्व विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम के लिए)

*केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली